നിഷീത

പത്തുമ്മായുടെ [illegible]ട്

dcb

बशीर
[redacted]
डीसीबी

Table of Contents

□□□ □□□□□□ □□□□□
□.□□. □□□□□
□□□□□□ □□□
□□□□□□□□ □□□□□
□□□□□□□ □□ □□□
□□□□□□□□□□
□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□
□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□

पथुम्मा की बकरी

वैकोम मुहम्मद बशीर
(1908-1994)
उनका जन्म 19 जनवरी 1908 को वाइकोम तालुक के थलयोलापरंबी में हुआ था। उन्होंने थलयोलापरंबी के मलयालम स्कूल और वाइकोम इंग्लिश स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए और स्वतंत्रता संग्राम के तहत कोझिकोड में आयोजित नमक सत्याग्रह में भाग लिया। इसके लिए उन्हें यातनाएं दी गईं और जेल में डाल दिया गया। उन्होंने दस वर्षों तक पूरे भारत की यात्रा की। बाद में, उन्होंने अफ्रीका और अरब जैसे देशों का दौरा किया। उनके बचपन के दोस्त ने लिखा, "पथुमयुदे आदु, नृप्पुपक्कोरानेन्दर्न!" उनकी रचनाओं का भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में अनुवाद और प्रकाशन हुआ है। उनकी रचनाएं मथिलुकुला, शब्दंगल, प्रेमलेखनम और पूवनपझम सहित 16 कहानियों का संग्रह ओरिएंट लॉन्गमैन इंग्लिश में प्रकाशित हुआ था। उन्हें साहित्य अकादमी और केरल साहित्य अकादमी की फेलोशिप प्राप्त हुई थी। उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।
उनका निधन 5 जुलाई 1994 को हुआ।

वैकोम मुहम्मद बशीर

पथुम्मा की बकरी

ഡി സി ബുക്സ്

□□□□□□ □□□□
□□□□□□□□□□ □□□
□□□ □□□□□□□/□□□□□□□
□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□
□□□□□□ □□□□□□□□
□□□□ □□□ 1959 □□□ □□□□□□□□
□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ 1979
□□□□□□□□□
□□ □□ □□□□□, □□□□□□□□ 686 001
□□□□ □□ □□□□ □□□□□
□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□: www.dcbooks.com
□□□□□□ □□□□□□□□: www.onlinestore.dcbooks.com
□-□□□□□□□□: ebooks.dcbooks.com
□□□□□□ □□□□: customercare@dcbooks.com, 9846133336
□□□□□
□□ □□ □□□□□-□□□□ □□□□□
ISBN 81-713-0209-2

प्रस्तावना
मूल कहानी ‘पथुम्मा की बकरी’ लिखने वाला एक अज्ञानी विवाहित पुरुष था। (अविवाहित पुरुषों में कोई बुद्धिमान नहीं होता) यह प्रस्तावना लिखने वाला एक बुद्धिमान पति है। (पत्नियों की जीत हो!) इसके अलावा कोई और विवरण नहीं है। बस इतना कहा जाना चाहिए था कि वे सुख-शांति से रहते हैं। लेकिन न सुख है, न शांति, न खुशी। सब कुछ अस्त-व्यस्त है। मैं घर बना रहा हूँ!
अरे, इसमें मुश्किल क्या है? अगर आप चाहें तो नासमझ अविवाहित लोगों को काम न करने की सलाह दे सकते हैं। (बेचारे लोग!) लेकिन सुनिए। एक पत्नी जिसके पास पैसा है (पति तो खुशनसीब हैं)। लेकिन रहने के लिए घर नहीं। कब तक यह सिलसिला चलता रहेगा जब हर तरफ बिस्तर, बक्से, बर्तन बिखरे पड़े हों?
हम रहने के लिए घर क्यों नहीं बनाते?
ठीक है, चलिए घर बनाते हैं!
इस खूबसूरत फैसले तक पहुंचना आसान था। क्या आपको घर बनाने के लिए जगह की जरूरत नहीं है?
कन्याकुमारी से दिल्ली जाने वाली सड़क। दिल्ली ही क्यों?
अगर ईश्वर की कृपा हो, तो आप इस सड़क पर कहीं भी जा सकते हैं। कल्पना कीजिए कि दक्षिण से उत्तर की ओर जाने वाली इस सुगम सड़क पर एक सफेद तिरपाल बिछा हुआ है। कल्पना कीजिए कि तिरपाल चारों ओर से बाड़ से घिरा हुआ है। कल्पना कीजिए कि सड़क तिरपाल के मध्य से उत्तर की ओर जली हुई है। यदि आप जले हुए हिस्से पर दो छोटे हाथी खड़े कर दें, तो उनकी पीठ दिखाई देगी। वह एक गड्ढा है। सच कहें तो, वह पत्थर तराशने की जगह है!

नदी के दक्षिणी किनारे पर एक घाटी है। वहाँ एक घाटी है। इसका मतलब है कि घाटी के बाद का शेष क्षेत्र निचले इलाकों में फैले धान के खेतों से आच्छादित है। मीलों तक फैले धान के खेत!
सुबह अच्छी हवा चलती है। हमारा थोर्टू 12 सेंट के क्षेत्र में स्थित है। दक्षिण दिशा में चार पौधे लगे हैं। पिछली बार लगाए गए नारियलों को देखते हुए, हम कह सकते हैं कि कोल्लम में 365 नारियल मिलने की संभावना है। थोर्टू की अचूक किस्मत को थोड़ा काला समझो। क्योंकि यहाँ कुछ पत्थर हैं। अगर आप खुदाई करेंगे, तो अच्छा पानी मिलेगा। बीच में एक घर। आपको चारों तरफ दीवारें चाहिए। आप जगह भरते हैं। आप घर बनाते हैं। आप कुआँ खोदते हैं। मुझे कहना चाहिए कि यह सौभाग्य है। सबसे पहले पानी आया। पानी अच्छा है। भगवान की कृपा से सब कुछ अच्छा हो। कोई समस्या नहीं है। क्या आपको चार लाख रुपये नहीं मिले?
क्या केरल विधानसभा में दार्शनिक विपक्ष के सदस्य बिना किसी लाग-लपेट के शोर मचा रहे हैं?
बिल्कुल सही। मैंने एक बार एक कहानी लिखी थी,
बदमाश बनने की कोई जरूरत नहीं है।
जैसे ही यह पुस्तक प्रकाशित हुई, दो विशेष घटनाएँ घटीं। पहली, कांग्रेस सरकार ने इसे हाल के वर्षों का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास बताते हुए लगभग एक रुपये का पुरस्कार दिया। (गलतफहमी न पालें। यह केरल की कांग्रेस सरकार नहीं थी - यह मद्रास की कांग्रेस सरकार थी।) दूसरी विशेष घटना यह थी कि कम्युनिस्ट पार्टी ने पुस्तक का कड़ा विरोध करते हुए कहा कि यह एक मूराची किताब है जो साम्यवाद-विरोधी है। विरोध करने वालों में केरल की कम्युनिस्ट सरकार में तत्कालीन वित्त मंत्री श्री अच्युत मेनन भी थे। इसके बाद, पुस्तक को एम.पी. पॉल पुरस्कार मिला। फिर, केंद्रीय

साहित्य अकादमी ने पुस्तक को भारत की चौदह या अठारह भाषाओं में अनुवाद के लिए चुना और इसका अनुवाद, मुद्रण और प्रकाशन हुआ। हालाँकि इसका कोई खास महत्व नहीं था, लेकिन उस समय केंद्रीय साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री जवाहरलाल नेहरू थे। समय बीतने के साथ, केरल में एक कम्युनिस्ट सरकार सत्ता में आई। सौभाग्य से या दुर्भाग्य से, कई छोटी-छोटी बातों के बीच,
बदमाश बनने की कोई जरूरत नहीं है।
उन्होंने यह भी शामिल किया। (यह पहली चमत्कारिक घटना है जो पूज्य परशुराम द्वारा केरल की स्थापना के बाद घटी है। अर्थात्, एक मुस्लिम की पुस्तक को, उसके गैर-विस्तृत रूप में भी, स्वीकार करने की महान घटना। यह कम्युनिस्ट सरकार द्वारा किया गया था!) इस घटना को थोड़ा और गंभीरता से लिया जाना चाहिए!
(सुविधा के लिए बाकी सभी किताबों को भूल जाइए और पूरी ताकत से इसका विरोध कीजिए!) और इस तरह विरोध शुरू हुआ। भयंकर विरोध! मैं यहाँ एक दुखद सच्चाई बताना चाहता हूँ। ऐसा लगता है कि श्री जोसेफ मुंडासेरी ने इस पुस्तक का चयन बिना सोचे-समझे किया था। वे कम्युनिस्ट मंत्रिमंडल में शिक्षा मंत्री थे। माननीय ई.एम. शंकरन नंबूथिरीपाद मुख्यमंत्री थे। माननीय सी. अच्युत मेनन भी मंत्रिमंडल में थे। कम्युनिस्ट होने के नाते, वे इस पुस्तक का विरोध कर सकते थे और इसमें बदलाव कर सकते थे। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया!
मैंने किसी से उस किताब को 'नॉन-डिटेल्ड' (बिना विस्तृत अध्ययन वाली) मानने का अनुरोध नहीं किया था। मैं इसे 'नॉन-डिटेल्ड' बनाने के खिलाफ था। जब सरकार का आदेश आया, तो मैंने एक पत्र का मसौदा तैयार किया जिसमें अनुरोध किया गया कि किताब को 'नॉन-डिटेल्ड' श्रेणी में न रखा जाए। क्योंकि, उस किताब की कीमत दो

कांग्रेस को यह सरासर झूठ नहीं बोलना चाहिए था। मैं पहले भी कह चुका हूँ। यह किताब साहित्यिक कार्यकर्ता सहकारी समिति द्वारा प्रकाशित की गई है। उन्होंने मुझे सभी सात संस्करणों के लिए दो रुपये की रॉयल्टी दी है। करूर नीलकंठ पिल्लई, वेट्टूर रमन नायर, पी. केशवदेव आदि जैसे पुस्तक मूल्य और अन्य मामलों के बारे में अधिक जानकार विद्वानों ने बयान जारी किए हैं। मुझे नहीं लगता कि उन्हें यहाँ उद्धृत करना आवश्यक है। यह सोचना दुर्भाग्यपूर्ण है कि एक और वोट मिलने से आप सर्वज्ञ हो जाएँगे। विपक्ष ने अखबारों में मुझे कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य बना दिया है। वाह!
मैंने अखबारों में पढ़ा है कि विपक्ष का कहना है कि मुझे उस किताब से चार लाख रुपये मिलेंगे। जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो मुझे इतने पैसे की क्या ज़रूरत है?
मैं केरल की कम्युनिस्ट सरकार से अनुरोध करता हूँ कि वह उस पुस्तक को प्रकाशित करने वाली साहित्यिक कार्यकर्ता सहकारी समिति से परामर्श करे और उस पर खर्च की गई राशि में से डेढ़ लाख रुपये उन्हें और शेष तीन लाख रुपये विपक्षी दलों को वितरित करे। विपक्षी दलों का भला हो!
भ्रष्ट राजनीति!!
‘ब्रह्मांड का निर्माता?’
उन्हें पता नहीं है कि वे क्या कर रहे हैं;
कृपया उन्हें क्षमा कर दीजिए!
यह कार्य 27 अप्रैल, 1954 को संपन्न हुआ।
‘पाथुम्मा की बकरी’ नाम की इस कहानी को मैंने सोचा कि मैं इसकी नकल करूँगी, इसे और सुंदर बनाऊँगी और एक प्रस्तावना के साथ प्रकाशित करूँगी। कल, कल—दिन बीतते चले गए। पाँच साल!’

अभी तक इस कहानी को दोबारा नहीं लिखा गया है। इससे पहले जो कुछ भी प्रकाशित हुआ है, उसे कई बार संपादित, दोबारा लिखा और सजाया- संवारा गया है। यह पहला कदम है, बिना संपादित और बिना बदलाव के। मैंने इसे पढ़ा। मुझे इसे दोबारा लिखने का मन नहीं कर रहा—मुझे इसे संपादित करने का मन कर रहा है। यह एक मज़ेदार कहानी है। लेकिन जब मैं इसे लिख रहा था, मैं पूरी तरह से थक चुका था। मैं दर्द को भूलना चाहता था। लिखना चाहता था!
दिमाग...
हाँ...
फिर मेरा मन। जैसे कोई छोटा जहाज विशाल, अथाह सागर में डूबने लगता है। क्या ऐसा कहना सही होगा?
बहरहाल, अंधकार में, दुःस्वप्नों से भरे अंधकार में, मन डूब गया। मैं स्वयं ही मन हूँ। जब मैं देखता हूँ, तो बस थोड़ी सी रोशनी दिखाई देती है। अंधकार में और उजाले में—हे भगवान!
मैं कहाँ हूँ?
सत्य क्या है?
इनमें से कोनसा बेहतर है?
प्रकाश! प्रकाश। केवल प्रकाश ही काफी है। लेकिन वो भयानक अंधेरा, बुरे सपनों से भरा हुआ। ओह! वो चारों ओर से मेरी ओर बढ़ रहा है। क्या मैं उसमें हमेशा के लिए डूब जाऊँगा?
नहीं!
मैं जीवन को अस्त-व्यस्त नहीं होने दूँगा। मुझे एकाग्रता से जीना होगा। मुझे यह करना ही होगा। अपनी सारी शक्ति जुटाकर एक शानदार प्रयास करूँगा!
हे भगवान, बस उसी पर ध्यान केंद्रित करो। एकाग्रता! बस उसी पर। सुई की नोक पर ही ध्यान रहने दो। मन। मन...

यह अंधकार के लाखों टुकड़ों में बिखर रहा है। उन टुकड़ों में से प्रत्येक में, मैं क्या देख और सुन रहा हूँ?
तर्क का सहारा मत लो, कारण ढूंढो। क्या हर चीज़ के पीछे कोई न कोई कारण नहीं होता?
हिम्मत रखो। हिम्मत से जानने की कोशिश करो। अंधविश्वास रेशमी बिस्तर की तरह है। अगर तुम उसमें शरण लोगे तो...!
यह वह नहीं है। मेरे बचपन से। अतीत से। प्रागैतिहासिक काल से। यदि अब आपके मन में कोई मान्यताएं हैं, तो उन सभी का विश्लेषण करें। केवल अच्छी बातों को ही स्वीकार करें। बुराई जहर है;
यह एक बीमारी है। इलाज से यह ठीक हो जाएगी। ऐसी कोई बीमारी नहीं है जिसका इलाज न हो सके। ऐसी बीमारी का होना अज्ञानता का परिणाम है। अज्ञानता को अपना स्थायी ठिकाना न बनाएं। इस धरती पर हर बीमारी का इलाज मौजूद है। पता लगाएं। ध्यान से देखने पर आपको समझ आएगा कि इसमें क्या गलत है?
कुछ नहीं। उलझे हुए विचार, नींद न आने वाली रातें। दिन भर का भारी काम। रात से नफरत थी;
मुझे वह दिन बिल्कुल पसंद नहीं था;
काम से नफरत थी;
मुझे वह जगह बिल्कुल नापसंद थी। घोर नफरत। न खाना, न नींद; किनाओ जनजाति के लोग पूरी तरह से घबरा गए!
शुद्ध और खूबसूरत पागलपन!
कितनी गड़बड़ है!
बहुत मानसिक पीड़ा, बहुत सारी बातें। इच्छाशक्ति का पूर्ण अभाव। कुछ भी किया जा सकता है!
इस तरह मैं वल्लापुझा के पुलिस कांस्टेबल गोविंदन नायर के इलाज में आया। मैं एर्नाकुलम स्थित कृष्णन नायर वॉच कंपनी के मालिक

कुट्टप्पन नायर की कार में त्रिशूर गया। कार कुट्टप्पन नायर चला रहे थे। कार में नर्मदा प्रतिधार कलाकार राघवन नायर, सांसद स्टूडियो के मालिक श्री सांसद कृष्ण पिल्लई और श्री पेरुन्ना थॉमस भी थे। यह याद रखना चाहिए कि वैद्यरत्न पुलिस कांस्टेबल गोविंदन नायर मानसिक रोगों आदि के विशेषज्ञ हैं। जब मैं वहां गया, तो वहां दस से तीस मानसिक रोगी थे। कुछ जंजीरों में जकड़े थे, कुछ के हाथों में हथकड़ी थी और कुछ अलग-अलग स्थितियों में लेटे हुए थे। मुझे लगता है कि सभी का इलाज एक जैसा ही हुआ। मैं आपको अपनी कहानी सुना सकता हूँ:
मैं बिस्तर पर ही कॉफी पीती हूँ और शौचालय जाती हूँ। इन सब के बाद, मैं अपने हाथ, पैर और चेहरा धोती हूँ और वापस आते ही अपने सिर पर तेल लगाती हूँ, जो बहुत ठंडक देता है। (मैंने सुना है कि एक बार श्री पेरुन्ना थॉमस ने एक दिन के लिए यह तेल लगाया था और बुजुर्ग तीन दिनों तक सो गए थे।) बुजुर्ग मेरी देखभाल के लिए मेरे साथ रह रहे थे। कुछ अन्य लोग भी देखभालकर्ता के रूप में थे। श्री के. परमेश्वरन नायर (शोभना परमेश्वरन नायर), एम.ए. खादर और परैम्मल वासुदेवन। परमेश्वरन नायर त्रिशूर में शोभना स्टूडियो चलाते हैं। वे एक अच्छे फोटोग्राफर हैं;
वह एक अभिनेता और कला निर्देशक हैं। मैं उन्हें परमु कहता हूँ। परमु ही एकमात्र व्यक्ति हैं जिन्होंने इस पांडुलिपि को पढ़ा है। मेरे पागलपन भरे दिनों में, परमु का मुख्य काम लेखन था। मैं आपको बताता हूँ;
परमू लिखेंगे। उस समय मैंने अपने सभी परिचितों को पत्र भेजे थे। मैंने उन सभी को अपने मानसिक कष्टों को भुलाने के लिए ये पत्र भेजे थे। बाद में वे पत्र प्रस्तावना बन गए। इसी तरह 'विशाप' और 'जीवत्निझलपडुक्कल' नामक दो पुस्तकों की

प्रस्तावनाएँ अस्तित्व में आईं। उस दौरान कई रोचक घटनाएँ घटीं। मैंने श्री पेरुन्ना थॉमस से सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक, मैंने जो कुछ भी कहा और किया, सब कुछ लिखवाया था। इसके लिए मैंने एक मोटी नोटबुक खरीदी थी। मैंने दस-बारह दिनों का सारा लेखन पढ़ा। फिर मैंने उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़कर जला दिया। मैंने परमू को कई रोचक बातें बताई थीं। मुझे वे सब आज भी अच्छी तरह याद हैं। मैंने सोचा कि मैं उन सभी को इस प्रस्तावना में लिख दूँ। मैं आपको कभी-कभी एक बात बताना चाहता हूँ। कोई भी बीमारी ठीक हो सकती है। केवल दवाइयाँ ही पर्याप्त नहीं हैं;
मरीज को इच्छाशक्ति की भी आवश्यकता होती है। मुझमें शत प्रतिशत इच्छाशक्ति थी। इस प्रस्तावना में सारी बातें लिखने का समय नहीं है। (क्या मैंने नहीं कहा था कि मैं घर बनवाने में व्यस्त हूँ? और यह भी कहा है कि मैं पति बन गया हूँ। मेरी पत्नी का नाम फातिमाबी है, जो कोझिकोड के चेरुवन्नूर में कोयाकुट्टी के उस्ताद की बेटी है। मैं उसे फैबी कहता हूँ। मैंने फैबी को सुखाकेड़ा की सारी रोचक घटनाएँ बताई हैं। समय मिलने पर मैं बाद में सब कुछ लिखूँगा।) तो हम जिस बारे में बात कर रहे थे, वह तेल था। तेल बहुत ठंडा होता है। कल्पना कीजिए एक बारह साल का हाथी पागल हो रहा है। कहते हैं कि अगर हाथी के सिर पर थोड़ा सा तेल लगा दिया जाए, तो उसकी सूंड भी सुन्न हो जाएगी। मैंने उसे अपने सिर पर लगाया। मेरे मुँह में थोड़ा सा काढ़ा डाला गया। मैंने उसे आधे घंटे तक पिया ताकि तेल ठीक से अवशोषित हो जाए। उसके बाद, काढ़ा पिया गया। वह भी ठंडा था। मैं एक बेंच पर लेटा हुआ था। कल्पना कीजिए कि काढ़ा कम से कम एक घंटे तक लगा रहा। उसके बाद, दो प्रसिद्ध उपचार किए गए। बिस्तर अभी भी बिछा हुआ है। लोगों की

आवाज़ें सुनाई दे रही हैं। पक्षी चहचहा रहे हैं। गाड़ियों के हॉर्न सुनाई दे रहे हैं। (क्योंकि यह राष्ट्रीय राजमार्ग के पास है।) और सूरज तेज़ चमक रहा है। जब मैं इस हालत में था, तभी मेरी दाहिनी नाक में केले के पत्तों का एक गुच्छा रख दिया गया। फिर, लाल मिर्च, अदरक, तुलसी, लाल प्याज और अन्य जड़ी-बूटियों को पीसकर पेस्ट बनाया गया और उसमें एक कटोरी तरल पदार्थ डाला गया। एक तेज़ और तीखा स्वाद उभर आया। उफ़!
अगर आप यह कहें कि अगर पूरी ताकत से जोर लगाया जाए तो दाहिनी नाक के एक नथुने में मौजूद तरल पदार्थ परमाणु बम की तरह फट जाएगा, तो यह एक घटिया किस्म का मजाक होगा!
बाईं नाक से छलांग!
तब तक सूरज डूब चुका था। न इंसानों की आवाज़ थी, न पक्षियों की, न गाड़ियों की। दुनिया सन्नाटे में थी। बस धरती ही बची थी। तब तक दवा बाईं नाक में डाल दी गई थी। दवा अंदर जा चुकी थी। उफ़! प्रसिद्ध ऊथम। ब्लैंकोस डम!
धरती गर्जना के साथ ढह गई और चूर-चूर हो गई। सब कुछ समाप्त हो गया। आदिम, अंतहीन अंधकार!
सच कहूँ तो, दुनिया में कुछ नहीं हुआ है। सब कुछ पहले जैसा ही है। ये सारी उथल-पुथल मेरे दिमाग में मची है। मुझे सब कुछ साफ़- साफ़ दिख रहा है। इसीलिए आँखों में ये लिखा है। नाक में कुछ जाने की बजाय, हज़ारों-हज़ार मिर्चों की दुनिया आपस में मिल गई है और मसालों का सागर जांघ में बदल गया है, और दोनों आँखों में एक भयंकर, भयंकर गड़बड़ लिखी हुई है। धुंधला!
आंखें नहीं!
कोई दयालु व्यक्ति मेरा हाथ पकड़कर मुझे एक बड़े तांबे के बर्तन के सामने बिठा देता है। फिर मैं नहा लूँगा, चलो!

उसका नाम कुली नहीं है। उसका नाम जलादा है!
दूसरे शब्दों में कहें तो, कोई धीरे-धीरे बर्फीला ठंडा पानी भरकर सबके सिर पर डाल देता है। दस मिनट में सब कांपने लगेंगे। लेकिन अभी तो कम से कम एक घंटा लग रहा है। शुक्र है कि ऐसा नहीं हो रहा। तब तक हम आंखें खोलने ही वाले होते हैं, लेकिन गर्मी और धुआं अभी कम नहीं हुआ होता। चलिए धुएं से भरे ब्रह्मांड को देखते हैं!
मैं यह सब चार बजे के बाद दोहराऊंगा। इस बीच, मान लीजिए कि काढ़े, गोलियां और पट्टियां उपलब्ध हैं। सबसे आम उपचार नाक बंद होना और आंखों से पानी आना है। मैंने एक दिन में आंखों से पानी आने की समस्या को काफी हद तक कम कर दिया है। दूसरे शब्दों में, आंखों से पानी आने के बाद, मैं तुरंत बड़ी हिम्मत से अपनी आंखें खोलूंगा। क्या मैंने बड़ी हिम्मत से, ताकत से नहीं कहा था?
"तो मुझे देखने दो।"
बात ऐसी है। मैं अपनी आँखें खुली रखूँगा। अगर एक मिनट के लिए हवा भी चलती है, तो कोई बड़ी बात नहीं। बस उस एक मिनट के लिए थोड़ी सी ताकत और हिम्मत चाहिए। मैंने उस दौरान और उसके बाद मुझसे मिलने आए सभी दार्शनिकों की आँखों के भाव लिख लिए हैं। जिनके नाम मुझे याद हैं, वे नीचे दिए गए हैं। अगर आपको इस बात पर कोई संदेह है कि ये लिखे गए हैं या नहीं, तो जिन्होंने लिखे हैं, उनके नाम लिख दें।
'संदेह'
कोष्ठक में जोड़ा गया है। यदि वे हमें सूचित करते हैं, तो आवश्यकता पड़ने पर अगले संस्करण में कोष्ठक और शंकाएँ बदल दी जाएंगी। के. परमेश्वरन नायर पारेम्मल वासुदेवन पेरुन्ना थॉमस एम.ए. खादर गोपीनाथ पणिक्कर आर.एस. प्रभु के. शंकरन (अय्यर) सत्यन

(पूर्व पुलिस इंस्पेक्टर और फिल्म स्टार) रामू कार्यत (फिल्म निर्देशक) ए.सी. जॉर्ज के.ए. जब्बार एस.के. पोट्टेक्कट थिकोडियान पी. भास्करन एन.वी. कृष्णवारियर (संदिग्ध) वी. अब्दुल्ला एम. अब्दुरहिमान एम.वी. देवन (संदिग्ध) म.प्र. कृष्णपिल्लई पी.के. बालाकृष्णन डी.एम. पोट्टाकट के.ए. राजन कोचप्पन जोसेफ मुंडास्सेरी (संदिग्ध) पोंजिकारा रफी वायलार रामवर्मा एम. गोविंदन (संदिग्ध) भास्करन नायर एन.के. के.के. थॉमस, बी.ए., बी.एल., पोनकुन्नम वर्गी (संदिग्ध), फैबी बशीर (संदिग्ध)। इसके अलावा, मैंने कई अन्य महिलाओं की आँखों के बारे में भी लिखा है। अब जब मेरी शादी हो गई है, तो मैं उनके सभी नाम भूल गया हूँ। क्षमा करें। मैं कितनी भी कोशिश कर लूँ, मुझे याद नहीं आ रहे!
किम बाहुना!
इस प्रकार के क्रूर व्यवहार के बीच,
मैं पथुम्मा की बकरी नाम की एक मज़ेदार कहानी लिख रहा हूँ। एक घंटे लिखने के बाद जब मैं ऊब जाता था, तो पागलों के पास जाकर उनसे कुछ साक्षात्कार करता था। पद्मनाभन नायर नाम का एक पागल मेरे प्रिय शिष्य की तरह मेरे साथ चलता था। वह मुझे स्वामीजी कहकर पुकारता था। वह मानता था कि मैं ब्राह्मण हूँ। वह लोटे में शुद्ध जल लाकर मेरे कमरे में छिड़कता था ताकि कमरा पवित्र हो जाए। वह मेरे चलने के रास्ते को भी पवित्र करता था। वह संस्कृत का विद्वान है। वह मुझे कुछ संस्कृत श्लोक सुनाता था। इसी बीच, वह मेरी बची हुई चाय लेकर पी लेता था। वह मेरी बीड़ी भी ले लेता था जिसे मैं पी रहा होता था। दो शंकराचार्य थे। वह मुझसे दोनों के बारे में बात करता था। फिर वह पूछता था कि स्वामीजी कौन से शंकराचार्य हैं?
मुझे कहना होगा;

मेरा नाम वैकोम मुहम्मद बशीर है। मैं एक अज्ञानी व्यक्ति हूँ। बुजुर्ग पूछेंगे,
स्वामीजी क्यों छिप रहे हैं?
मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मुझे बड़े-बुजुर्गों की आँखों से थोड़ा डर लगता है;
"चलिए, थोड़ी देर के लिए आंखें बंद कर लेते हैं।" बड़े-बुजुर्ग तुरंत किसी दूसरे कमरे की सफाई करने चले जाते। दूसरा व्यक्ति एक शुद्ध भिक्षु है। जाति से ईसाई। लगता है कि वह कैथोलिक है। बड़े-बुजुर्ग ने कई दिनों की मशक्कत के बाद मुझे यह खबर सुनाई। आमतौर पर, शाम चार बजे के बाद इलाज के बाद, वह इमारत के पूर्वी हिस्से में बने बरामदे में जाते और पश्चिम की ओर मुंह करके दो- तीन बार हंसते!
फिर वह बीड़ी जलाते, धुआं अंदर लेते और चले जाते। जब हम संतुष्ट हो जाते, तो वह मुझे बुजुर्गों के जीवन का रहस्य बताते। मैंने पूछा:
"वह नौकरी क्या थी?"
ज्येष्ठ:
"सैनिक। पांच साल पहले सीरिया में आपकी मृत्यु हो गई थी और आपको वहीं दफना दिया गया था," मैंने पूछा।
'और तब?'
ज्येष्ठ:
"अब भगवान ने मुझे पृथ्वी पर भेजा है।"
मैंने यह नहीं पूछा कि किस खास मकसद से। एक और मोटे पागल की जिंदगी में बस एक ही ख्वाहिश है। हाथी खाना!
मैंने कहा था:
‘बदतमीजी करने की कोई जरूरत नहीं!’

‘तो क्या तुमने उसे खाया?’
मैंने कहा था:
"यहां खाने को कुछ नहीं है, बाहर हर कोई इसी तरह चल रहा है।" ‘क्या तुम मुझे पकड़ सकते हो?’
मैंने कहा था:
"मुझें नहीं पता!"
इस तरह के कितने सारे चुटकुले लिखे जा सकते हैं। "बशीर पागल हो गया है!"
हमारे साथ क्या गलत है?
मैंने कुछ लेखकों को शोक व्यक्त करते सुना। क्या शोक करने से कोई लाभ होता है?
योग्य लोगों को कुछ चीजें अवश्य मिलेंगी!
कहने को बहुत कुछ है, लेकिन समय नहीं है।
‘पथुम्मा की बकरी’
इससे पहले कि हम इस बात को सबके सामने रखें, मुझे एक बात कहनी है। पिछले नवंबर में, कोझिकोड से तीन सज्जन, वी. अब्दुल्ला, एम. अब्दुरहमान और थिकोडियन, थलयोलापरम आए थे।
बदमाश बनने की कोई जरूरत नहीं है।
इस उपन्यास को नाटक के रूप में रूपांतरित किया जाना चाहिए। इसे केरल कला महोत्सव में भी प्रदर्शित किया जाना चाहिए। अब और देरी नहीं की जा सकती। क्या हम जा सकते हैं?
ठीक है। मैं उनके साथ कोझिकोड गई थी। उन्होंने उसे नाटक का रूप दिया और बहुत खूबसूरती से प्रस्तुत किया। नाटक सफल रहा। मैं उसे देखने नहीं गई क्योंकि मेरी शादी फैबी से हो गई थी और मैं श्री एस.के. पोट्टेकट के पुथियारा नाटक को देखने गई थी। ‘चंद्रकांथम’

वे जबरन घर में घुस रहे थे और अपना हनीमून मना रहे थे। यह परिचय धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है।
‘पथुम्मा की बकरी’ महज एक कहानी नहीं है। इसमें मौजूद सभी पात्र ईश्वर की कृपा से आज भी जीवित हैं;
मैंने पहले भी कहा है कि इसे लिखे हुए पाँच साल हो गए हैं। इसमें कई नए किरदार जुड़ चुके हैं। यह याद रखना ज़रूरी है कि यह मेरे घर की एक सच्ची कहानी है। कहानी लिखते समय, मैंने जानबूझकर इस प्रस्तावना में लिखी कुछ बातें छोड़ दी थीं।
मैं पथुम्मा की बकरी का घोंसला खोलकर आपको सौंप रहा हूँ। सभी गणमान्य व्यक्तियों को शुभकामनाएँ और सुख-सुविधाओं की कामना करता हूँ। वाइकोम मुहम्मद बशीर थलयोलापरम्बा
1-3-1959
नोट: मैंने अब तक जो कुछ भी कहा है, वह अतीत की कहानी है, वे घटनापूर्ण वर्ष, जो अनंत लाखों वर्षों के बीते कल में विलीन हो गए हैं। अब मैं कोझिकोड के पास बेपोर में रहता हूँ। व्यालाल में अपने घर में। वैकोम, थलयोलापरंबी से बहुत दूर। फबी बशीर, शाहिनामोल और मैं थलयोलापरंबी में बारह सेंट के भूखंड पर बने एक सुंदर घर में रहते थे। हाल ही में, मेरी पत्नी के माता-पिता का अचानक निधन हो गया, इसलिए हम कोझिकोड के पास चेरुवन्नूर चले गए। मेरी पत्नी के चार-पाँच बच्चे हैं। मैंने थलयोलापरंबी में अपना नया घर बेच दिया और बेपोर में यह पुराना घर और आंगन खरीद लिया और यहाँ रहने लगा। यह दो एकड़ का बहुत ही शांत भूखंड है। यहाँ नारियल के पेड़, आम के पेड़, केले के पेड़ और कई अन्य पेड़ हैं। मुख्य सड़क के पास बस सेवा उपलब्ध है। इस खेत में पेड़ों पर पक्षी, कोबरा, छिपकली, बड़े बिच्छू, कौवे, चूहे, ताड़ी सिवेट, टिड्डे और लोमड़ी हैं। लोमड़ियाँ और ताड़ी सिवेट केवल रात में

ही आते हैं। यहाँ मुर्गियाँ, बकरियाँ, गायें, बिल्लियाँ और कुत्ते भी हैं। दो बत्तखें भी थीं। अब वे कहीं नज़र नहीं आतीं! क्या लोमड़ी और अन्य जानवर इसे खा सकते हैं?
मुझे कुछ नारियल, आम और कटहल मिलते हैं। इन्हें बेचकर मुझे पैसे मिलेंगे। किताबों से भी मुझे कुछ पैसे मिलेंगे। मैं एक पूर्व स्वतंत्रता सेनानी हूँ, इसलिए मुझे राजनीतिक पेंशन मिलती है। कॉपरप्लेट्स। पथुम्मा की बकरी, बचपन का दोस्त और नटाप्पुपक्कोरानेन्नार्न! इन सभी पुस्तकों का केंद्रीय साहित्य अकादमी और राष्ट्रीय पुस्तक ट्रस्ट, भारत द्वारा चौदह या अठारह भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है और इन्हें पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया गया है। उपरोक्त तीनों पुस्तकों का अंग्रेजी में अनुवाद एडिनबर्ग विश्वविद्यालय के डॉ. रोनाल्ड एशर और अन्य विद्वानों द्वारा किया गया है और एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा एक ही पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है। हम यहाँ कुछ हद तक आरामदायक जगह पर रहते हैं। कोबरा, साँप और बिच्छू - वे हर दिन नहीं आते। लोमड़ियाँ हर दिन आती हैं। वे परिचित हैं। शाम होने से पहले, साठ लोमड़ियाँ मेरे सामने वाले द्वार पर आती हैं और ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगती हैं, मानो वे मुझ पर कोई एहसान कर रही हों। मैं ज़ोर-ज़ोर से कुछ बुरा-भला कहूँगा;
"बस करो, कमीनों, इतनी जोर से चिल्लाने और हंगामा करने में तुम्हें जरा भी शर्म नहीं आती?"
फिर लोमड़ियाँ शर्म से भाग जाएँगी। लोमड़ियाँ आधी रात को इस घर की मुर्गियों को नोचकर खा जाएँगी। मुझे कोई परवाह नहीं। मुर्गियाँ मेरी पत्नी की हैं। मुझे नियमित रूप से अंडे नहीं मिलते। मैं पाँच-छह गंभीर बीमारियों से ग्रस्त एक कमज़ोर बूढ़ा

हो गया हूँ। मैं बहुत बूढ़ा भी हो गया हूँ। खैर, मैं हँस सकता हूँ। घर पर फबी बशीर, शाहिना हबीब, अनीस बशीर, अनीस बशीर पढ़ रहे हैं। शाहिना के पति पी.के. मोहम्मद हबीब हैं। मेरी बेटी शाहिना और हबीब का एक साल का बेटा मुल्लू हबीब है। तो अब मैं परदादा बन गया हूँ!
आपको कभी नहीं पता कि आप कब गिरेंगे, मरेंगे और समय के धुंध में खो जाएंगे। मृत्यु जब आए तब आए। दुनिया में शांति और सुकून कायम रहे। शुभकामनाएँ!
बेपोर
1-10-1981
वैकोम मुहम्मद बशीर

अंतर्वस्तु
1. एक
2. दो
3. तीन
4. चार
5. पाँच
6. छह
7. महाकाव्य पथुम्मा की बकरी के पात्र

एक
मैं आपको पथुम्मा की बकरी या महिलाओं की बुद्धिमत्ता नामक एक मजेदार कहानी सुनाने जा रहा हूँ:
भटकने और एकांत के लंबे जीवन के बाद, मैं टूटे दिल से वैकोम शहर के पास थलयोलापरम्बा में अपने घर में रहने के लिए लौटा। शानदार स्वागत!
मुझे बहुत गुस्सा आया। मैं बैठ गया और खूब बड़बड़ाया। मेरा घर... मुझे किसे दोष देना चाहिए?

मैं दस-पंद्रह साल से अपने घर में उस तरह नहीं रहा हूँ। मुझे बस कभी-कभार कुछ रातें वहाँ बिताने की याद है। घर के सामने, सार्वजनिक सड़क के किनारे, एक छोटी सी इमारत है, जो सिर्फ मेरे रहने के लिए है। इसे बनाते समय मैंने पत्थर और मिट्टी ढोई थी। मैंने बहुत मेहनत की। मैंने शांति और सुंदरता के लिए बहुत कुछ किया। ऊँचे पत्थरों पर बने और सफेद रेत से ढके आँगन के चारों ओर सुंदर पौधे हैं। फूलों की क्यारी में चमेली और कलश के पौधे लगे हैं। आँगन के कोनों में अमरूद के पेड़ लगाए गए हैं। वहाँ दो तालाब हैं। एक पीने के पानी के लिए और एक नहाने के लिए। मेरे लिए एक विशेष शौचालय भी है। बगीचा नारियल और केले के पेड़ों से भरा है। मैंने कई पेड़ भी लगाए हैं;
उनमें अच्छे आम भी थे। सड़क के किनारों और कोनों पर कंटीली झाड़ियों से सुंदर ढंग से लगाए गए थे। खेत के चारों ओर घास-फूस और कंटीली झाड़ियों से ढकी छह फुट ऊंची बाड़ थी। सामने एक फाटक था जो हमेशा बंद रहता था। अगर आप उसमें से झांकते, तो आपको सभी पौधे और फूल अपनी पूरी सुंदरता में दिखाई देते। मैं उस छोटे से घर में अकेला रहता था। मेरी माँ, मतलब मेरी माँ, फाटक के ऊपर से चाय, मिठाई और खाना अंदर लाती थीं। इस तरह, किसी को भी अंदर आने की अनुमति नहीं होती थी। मैं आराम से बैठकर लिखता था;
या फिर मैं कुछ पढ़ता था। या फिर मैं वहाँ घूमता-फिरता, पेड़- पौधों की देखभाल करता था। वहाँ रहते हुए मैं टहलने जाता था। मैं तीन साल तक वर्काला, शिवगिरी, मद्रास, एर्नाकुलम और कोयंबटूर में रहा। फिर जब मैं अस्वस्थ महसूस करते हुए और शांति की तलाश में लौटा, तो मुझे पता चला कि जिस छोटे से मकान में मैं रह रहा था, वह मेरे छोटे भाई अब्दुल कादर ने मुझे किराए पर दे दिया था!

आबकारी निरीक्षक श्रीमान रामनकुट्टी वहाँ धान काटने वाली मशीन के साथ आराम से रह रहे हैं। घर के मुखिया ने घर की अच्छी देखभाल की है। हालाँकि, वे कहीं और जा सकते हैं, लेकिन उस बड़े गाँव में दूसरा घर मिलना नामुमकिन है। अब वे क्या करेंगे?
हम्म!
इसलिए मैं घर पर ही बस गया। मुझे शांति, सुकून और पूरी तरह से आराम चाहिए था। मैं अपनी सेहत वापस पाना चाहता था। ऐसी कोई हलचल या शोर नहीं होना चाहिए था जो मेरे मन को परेशान करे। लेकिन मैंने खुद को हलचल, शोर और शोरगुल के बीच पाया!
कहीं नहीं के बीच में!
मेरा घर एक छोटा सा फूस की छत वाला मकान है जिसमें दो कमरे, एक रसोईघर और दो बरामदे हैं। यहाँ कौन-कौन रहते हैं?

□□□□ □□□, □□□□□□□□□□, □□□□ □□□-□□□□□ □□□ □□□□ □□□□, □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□, □□□□□□, □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□, □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□, □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□, □□□□, □□□□□□□ □□□□, □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□, □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□, □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□, □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□,

कुछ और भी घटनाएं हैं। कुछ बिल्लियाँ कहीं से आकर मेरी माँ के घर में पनाह लेती हैं, हज़ारों कौवे हमेशा आँगन में इधर-उधर भागते रहते हैं, उनसे डरते हैं। कई कौवे छत पर बैठकर रोते और शोर मचाते हैं। इन सबके अलावा, मेरी माँ के पास दस सौ मुर्गियाँ हैं जो उनकी अपनी हैं और घर में रहती हैं। उनके अनगिनत चूजे। बाज़ और चीलें पेड़ों पर रहते हैं जो उन्हें झपटकर खा जाते हैं। घर हमेशा खुशनुमा रहता है। बहुत शोरगुल रहता है। रशीद और सुबैदा ने अभी तैरना शुरू नहीं किया है। दूध छुड़ाने से पहले वे लगातार रोते रहते हैं। आरिफा, जिसने चलना शुरू कर दिया है, वह भी रोने की शिकार है। लैला और सैदु मुहम्मद, जो उससे थोड़े बड़े हैं, सच में बहुत ज्यादा रोने वाले बच्चे हैं। अबी और पथुकुट्टी (ओह, हबीब मुहम्मद को सिर्फ स्कूल में ही बुलाया जाता है। घर पर, वह खुद को अबी और खुद को 'मपी' कहता है। वह और पथुकुट्टी दोनों पहली कक्षा में हैं।) दोनों बहुत रोने वाले और जिद्दी हैं। बच्चे, बिल्लियाँ, मुर्गियाँ, औरतें, बाज, चूहे, कौवे - ये सब मिलकर एक खूबसूरत दृश्य बनाते हैं। इस सारी हलचल में, मेरी नज़र एक बकरी पर पड़ती है!!!
यह एक मादा है। भूरे रंग की। बहुत फुर्तीली है। सुबह मेरे घर आती है, रसोई में जाती है और नाश्ता करती है। फिर घर के अंदर जाती है, सो रहे बच्चों को लात मारकर जगा देती है और आंगन में जाकर रात भर में गिरे पत्तों को बहुत तेज़ी से खाने लगती है। आंगन के किनारे के पत्ते। यह बूढ़ी है। लेकिन यहाँ कटहल हैं। इतने पत्ते हैं कि जितनी चाहें उतनी भेड़ों को खिलाया जा सकता है। भेड़ें जल्दी से सारे पत्ते खा जाती हैं और आंगन के किनारे लगे चंपा के पेड़ के नीचे जाती हैं। वहाँ गिरे हुए चंपा के सारे पत्ते खा जाती हैं। फिर ऊपर देखती हैं। चंपा के पत्ते हरियाली

के बीच ऐसे पड़े हैं जैसे हल्के लाल रंग में डूबी बड़ी-बड़ी ओस की बूँदें हों। अब क्या करें?
बकरी अपने पिछले दोनों पैरों पर खड़ी होकर चंपांगा के निचले सींग को खाने की कोशिश करेगी। लेकिन वह वहाँ तक पहुँच नहीं पाएगी!
इस चंपा के पेड़ की नीची शाखाओं को किसने बांधा है?
जब वह इस बारे में सोच ही रहा था, तभी एक पका हुआ केला गिर गया। बकरी दौड़कर आंगन में गई और उसे चाटने लगी। उसने उसे चबाया और बड़े चाव से खाया। तब तक उम्मा, कुंजनुम्मा, ऐशोम्मा या अनुम्मा झाड़ू लेकर आंगन साफ करने आ जातीं। बकरी भागकर शेड में चली गई और वहां इधर-उधर घूमने लगी। ये बकरी किसकी है?
यहां किस प्रकार की स्वतंत्रता प्रदर्शित की जा रही है?
हर जगह चढ़ाई!
आप क्या कर रहे हो!
और फिर कोई कुछ नहीं कहता। एक ऐसा घर जहाँ कोई शोर-शराबा या हंगामा नहीं है!
मैं बरामदे में अपनी कुर्सी पर बैठा था, तभी मुझे कमरे में किसी के कागज़ फाड़ने की आवाज़ सुनाई दी। मैंने छोटे से दरवाजे से अंदर झाँका। कमाल!
वो बकरी मेरे बिस्तर पर बैठी किताब खा रही है। डिब्बे पर दो किताबों, 'बचपन का दोस्त' और 'छाया', के नए संस्करण की एक प्रति रखी थी। 'बचपन का दोस्त' इस समय उसे खा रहा है। वो अपने अगले पंजों से उसे लात मार रहा है, दो-तीन पन्ने चाट रहा है, उन्हें अपने मुंह में डाल रहा है और बड़े चाव से चबा रहा है। उसे खाने दो!
"अच्छी भेड़।" "सुनने में ठीक है।"

एक सीट है। यह एक छोटी सी किताब है जिसमें बहुत सारे तीखे हमले और कड़ी आलोचनाएं हैं। लेकिन यह किताब वाकई भयानक है। क्या यह बकरी उस किताब को खाने की हिम्मत करेगी?
इसमें कोई संकुचन नहीं है।
'लंगोटिया यार'
तुरंत प्रवेश मिल गया।
‘ध्वनि’
यह शुरू हुआ। दो मिनट में सब कुछ खा लिया गया। फिर बकरी मेरा कंबल खाने लगी। मैं तुरंत नीचे कूद गया;
भाग जाओ!
"अरे, सुंदर भवती, उस कंबल को मत खाओ। उसकी कीमत सौ रुपये है। मेरे पास उसकी दूसरी प्रति नहीं है। मेरे पास दूसरी किताबें हैं। भवती को जिस भी चीज़ की ज़रूरत होगी, मैं लाकर तुम्हें मुफ्त में दे दूंगा।"

फिर मैंने बकरी को भगा दिया। वह घास के मैदान के निचले हिस्से में भाग गई। वहाँ दो-तीन पत्ते पड़े थे। बुढ़िया उन्हें खा रही थी। मैंने अपनी माँ को बुलाया और पूछा।
‘यह बकरी कौन है?’
उम्मा ने कहा।
हम चल नहीं पाएंगे।
क्या यही तो इतनी आज़ादी का मतलब नहीं है?
यह पथुम्मा की बकरी है। मामला स्पष्ट है। पथुम्मा इसे भोर से पहले छोड़ देगा।
"उन्होंने पेलावेला का सारा बचा हुआ हिस्सा खा लिया, इससे पहले कि वह खत्म हो जाए। मेरा पेट भर गया है, मेरे प्रिय।"
मैं आपको सलाह दूंगी। बकरी मंगलवार को सार्वजनिक सड़क से घर आएगी, और फिर कुशल। यह बकरी चराने वाली, पथुम्मा, मेरी बहन है। वह छोटी बहन है, अब्दुल खादर के सामने रहती है, और बाज़ार के पीछे डेढ़ फर्लांग दूर रहती है। अपने पति कोचुन्नी के लिए चाय और मिठाई बनाने के बाद, वह कोचुन्नी को व्यापार के लिए बाहर भेज देगी। बड़ा भाई बहुत व्यापार कर चुका है। फिर वह नारियल के रेशे का व्यापार करता है। शाम को ही लौटना। कोचुन्नी के जाने के बाद, वह सारे बर्तन धोकर रख देगी, और पथुम्मा मंगलवार को अपनी पोती खदीजा के साथ घर आएगी—वह एक गाड़ी में आएगी। खदीजा उसके पीछे पूंछ की तरह चलती है। पथुम्मा सपने में खोई हुई सी चलती है। घर पहुँचते ही उसका व्यवहार बदल जाएगा। पथुम्मा की आवाज़ भी ऊंची हो जाएगी। इसकी ज़रूरत है!
वह अपनी मां की सबसे बड़ी बेटी है। इसलिए घर में शायद उसी का ज्यादा दबदबा होगा, है ना?

जब पथुम्मा अंदर आई, तो मैंने कहानी सुनी। पथुम्मा के पास एक बकरी है। उसकी एक माँ है। उसकी एक बहन है। उसके दो बिल्ली के बच्चे हैं। आगे क्या होगा?
पथुम्मा ने प्रवेश किया और कुछ अधिकारपूर्ण लहजे में अपनी बहन, माँ और पोते-पोतियों से पूछा:
‘क्या सबने मेरी बकरी को थोड़े चावल दिए?’
उम्म ने कहा:
‘एक लाख नौकरियां। आपकी एक भेड़!’
पथुम्मा ने नथुनों से कुछ पूछा और अपनी बहन को थोड़ा डांटा:
अब मैं तुम्हें बेहतर तरीके से जानता हूँ!
मुझे नहीं पता अनुम्मा ने इस पर क्या कहा। पथुम्मा ने अपनी माँ को अपने जीवन की कठिनाइयों के बारे में बताया। बहुत सारे दुख। फिर उसने आह भरते हुए कहा।
"तुममें से कोई कुछ न करे। हे पिता, मेरी भेड़ों को बच्चे पैदा करने दो!"
जब पथुम्मा की बकरी बच्चे को जन्म देगी, तो वह दुनिया को क्या दिखाने वाली है?
चंपा का पेड़ फलों से लदा हुआ है। मैं पश्चिम की ओर मुख करके अपनी कुर्सी पर लेटा हुआ इसे देख रहा हूँ।
'म्यांऊ म्यांऊ'

□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□-□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□?

हम एक-दूसरे को बिल्कुल नहीं जानते। लेकिन शायद पहली नज़र में ही मुझे वो पसंद आ गया था। अरे रुको। सड़क पर नज़र डालने पर मुझे बहुत सारी लड़कियाँ आती-जाती दिख रही हैं। वे सब हाई स्कूल में पढ़ती हैं। सब मुझे ही देख रही हैं। कितनी सुंदर हैं!
एक गहरी नज़र!
कारण क्या है?
पथुम्मा की बकरी से एक कौआ निकला। बकरी कौए को लेकर मेरी ओर आई। मैंने देखा, "मुझे याद नहीं है।"
कौए ने मेरी तरफ देखा, मानो कह रहा हो, "हे भगवान!" मेरे बगल में सीमेंट की पटिया पर मुर्गियों का एक झुंड कुछ चोंच मार रहा था। कौया झुंड के आखिरी छोर पर उड़ गया।
इसे ऐसा करने का क्या अधिकार है?
मुर्गियों ने उसकी ओर ऐसे देखा मानो कह रही हों, "हे भगवान!" कौवे ने क्रोध का कोई संकेत नहीं दिखाया।
मैं यहाँ का उत्तराधिकारी हूँ।
कौआ भीड़ पर चोंच मारने लगा। तभी एक सफेद बिल्ली दर्शकों के बीच आ गई। समूह में मौजूद बड़ी काली बिल्ली को यह बर्दाश्त नहीं हुआ। उसने बिल्ली के सिर पर वार किया और उसे चोंच मारी। फिर बिल्ली ने अपनी पूंछ उठाई और सारे बाल पकड़कर बोली, "अब मैं तुम्हें दिखाऊंगी कि इस घर में हमारा कोई अधिकार है या नहीं। अगर है तो फिर से चोंच मारो।"
बात कुछ ऐसी ही थी।
“उम्म, क्या आपने यह देखा?”
फटी हुई आवाज में मेरा सबसे छोटा भाई अबू बकर दर्शकों के बीच दाखिल हुआ, उसके कपड़े फटे हुए थे, बाल बिखरे हुए थे और जूते आंसुओं से भीगे हुए थे। वह बस

‘अबू’
वह इधर-उधर घूम रहा है। कहा जाता है कि बड़ा भाई वामपंथी है। वह दिन में दो बार कपड़े बदलता है। मेरी माँ ने बताया है कि उसके पास साठ जोड़ी जूते हैं। वह धागे की तरह पतला है। लेकिन वह बहुत शोर मचाता है। वह बहुत उपद्रवी भी है। मेरे आते ही मैंने उसे कमरे से निकाल दिया। वह घर में मेरे ही कमरे पर राज कर रहा था। वह कमरा मेरे पिता ने घर से सटाकर बनवाया था ताकि अब्दुलकादर और मैं बैठकर पढ़ाई कर सकें। उसी समय मैंने अब्दुलकादर को उस कमरे से निकाल दिया। फिर वह मेरी माँ के साथ सोया। अब्दुलकादर के बाल अब सफ़ेद हो गए हैं। अगर आप उसे देखें तो वह मेरे बड़े भाई जैसा दिखता है। उसने अब घर के इस तरफ एक और कमरा बनवा लिया है, बिल्कुल मेरे पुराने कमरे जैसा। वहीं हनीफ़ा, केट्योल और बच्चे रात बिताते हैं। जब मैंने अबू को निकाला, तो वह अपने बक्सों, किताबों, दीपक और पलंग के साथ हनीफ़ा के कमरे में चला गया। जैसे ही अबू ने उसकी आवाज़ सुनी, बिल्लियाँ भाग गईं, कौवे उड़ गए। मुर्गियाँ कुड़कुड़ाने लगीं। पथुम्मा की बकरियाँ दूसरी तरफ़ खड़ी महिलाओं के पास दौड़ गईं, और बच्चे रोना बंद कर दिए। बाज़ और चील चुपचाप कहीं छिप गए। महिलाओं की आवाज़ें भी बंद हो गईं। घर में सन्नाटा छा गया। तभी अबू की आवाज़ गूंजी:
"वाल्या इक्काका इन सब की अनुमति देता है, है ना?"
एक ऐसी जगह जहाँ बिल्लियों, बिल्ली के बच्चों, मुर्गियों, कौवों और बकरियों को पाला और खिलाया जाता था!
मैं सब कुछ ठीक कर सकता हूँ—ओह, आओ और वह छड़ी और गलत वाली ले जाओ!
मैंने तुरंत पथुम्मा को उदास स्वर में कहते सुना:

‘खदीजा, हमारी बकरी को बुलाओ। जब यह स्पष्ट हो जाए कि घर में हमारी माँ का कोई अधिकार नहीं है, तो चलो चलते हैं – पोन्नुम्मा, हम जा रहे हैं!’
अबू चिल्लाया:
"देख लेते हैं इस घर में मेरा कोई अधिकार है या नहीं। आज मैं हनीफा, केट्टियोल और पुलेला को घर से निकाल दूँगा!"
मैंने भी चिल्लाया। बहुत जोर से चिल्लाया:
"अरे, इस घर में अपनी आवाज़ मत सुनाओ। मैं तुम्हारी हड्डियाँ तोड़ दूँगा!"
उसका एक कंधा धागे जैसा पतला है!
अरे अबू, फिर हनीफा और बाकी लोग कहाँ रहने जाएँगे?
अबू ने धीरे से कहा;
"उसे हनीफैक्कक्कड़ा एस्टेट में एक घर बनाने दो और वहीं रहने दो।"
जी हाँ। एक कहानी है। हनीफा ने मुझे घर बनाने के बारे में बताया। उसने दो मील दूर, एक पहाड़ी की ढलान पर, सड़क के पास ज़मीन का एक अच्छा टुकड़ा खरीदा है। उसने उस पर केले, कप्पा और आटा बो दिया है। वह उस पर घर बनाना चाहता है। वह मुझसे मदद की उम्मीद करता है। उसने यह भी कहा है कि उसके पास पैसे नहीं हैं। वह सुबह चार बजे उठता है, टहलने जाता है, केले और अन्य पौधों को पानी देता है और सात बजे घर लौटता है। फिर वह अबी और लैला को लेकर नदी में नहाने जाता है। पिता और उनके बच्चों के बीच एक बड़ा रिश्ता है। लैला और अबी ने कहा है कि जब वे अपनी ज़मीन पर घर बनाएंगे तो मुझे भी साथ ले जाएंगे।
सैदु मुहम्मद ने भी यही कहा है। वह, उनकी माँ अनुम्मा और उनके पिता सुलेमान घर के बगल वाले आँगन में रहने के लिए एक घर बना रहे

हैं। लकड़ी का सारा काम पूरा हो चुका है। पत्थर भी लग चुके हैं। हनीफ़ा ने इनमें से कोई भी काम नहीं किया है। मैंने कहा:
"ओह अबू। ऐसा लगता है कि हनीफा के पास पैसे नहीं हैं।"
अबू ने धीरे से कहा:
"हनीफा एक बड़ी अमीरजादी है। उसके पास बहुत पैसा है।"
‘मत जाओ।’
उसने एक रबर का हथौड़ा लिया और कुछ कंकड़ों से पक्षियों को गिराने के लिए चला गया।
"अरे बच्चे, उसके साथ कुछ मत करो।"
मेरी माँ, पथुम्मा, मुझे दिलासा देने के लिए बकरी लेकर आई। पास के खेत में अबू को खड़ा देखकर पथुम्मा ने पुकारा:
अरे अबू, तुम्हें बस शांति से रहना है!
क्या आपको पता नहीं था कि बड़ी आपदा आने वाली है?
'मुझे
‘हे अबू’
क्या तुमने वाल्या इटाटा को इक्काका कहकर पुकारते सुना?
यहां तो एक बड़ी सी नाक आ गई है!
'हम्म!'
पथुम्मा, अबू के सबसे बड़े बेटे के सबसे बड़े बेटे की सबसे बड़ी बेटी है - वह उससे बहुत प्यार करती है।
‘हे अबू’
यह इतना छोटा है कि इसे कॉल करना बेकार है!
मैंने कहा था:
'आप कैसे हैं?'
‘अबूसर’
क्या आप इसे ऐसा नहीं कह सकते!

मत जाओ!
पथुम्मा मेरे पास आई। फिर उसने चारों ओर देखा। वहाँ कोई नहीं था!
पथुम्मा ने दबे स्वर में कहा, "वाल्या इक्काका, किसी को पता नहीं चलना चाहिए। अगर अनुम्मा को पता चल गया तो वो झगड़ा करेगी। अब, वाल्या इक्काका, मुझे कोई पैसा मत दीजिए। बस खदीजा को दो बालियां नकद दे दीजिए। हनीफा को नहीं पता, कोची को नहीं पता, अबू को नहीं पता और उम्मा को भी नहीं पता।"
मैंने धीरे से पूछा।
‘ये बालियां चांदी की हैं या सोने की?’
पथुम्मा ने उसकी ओर देखा और धीरे से कहा।
मुझे सोने वाला चाहिए!
क्या आप इस बड़ी घटना के बारे में सबको बताएंगे? 'अरे'
मैंने कहा था:
इसे पूरी तरह गुप्त रखा जाएगा।
इसलिए मैंने पथुम्मा के साथ एक गुप्त समझौता किया:
मुझे झुमके अभी चाहिए!
पथुम्मा ने कहा। मैंने कहा:
"चलो देखते हैं।"
इस बाली का मामला इतना ज़रूरी होने की एक छोटी सी वजह है। मेरे आते ही, मैं एर्नाकुलम से तीन छोटी छतरियाँ लेकर आया और उन्हें अब्दुलकादर की बेटी पथुकुट्टी, हनीफा के बेटे अबी और अनुम्मा के बेटे ज़ैदु मुहम्मद को दे दिया। पथुम्मा की बेटी खदीजा को छतरी नहीं मिली!

□□□□□□□□□□, □□□, □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□!

□□□□ □□□□ □□?

सच कहूँ तो, मैं इसके बारे में भूल ही गया था। कोई बात नहीं; उसके लिए दो सोने की बालियां तैयार हैं!
जब पथुम्मा घर का कुछ काम कर रही थी, अनुम्मा धीरे-धीरे मेरे पास आई। वह गर्भवती है. पथुम्मा स्कूल नहीं गई है. अनुम्मा स्कूल गई है. तो खबर पथुम्मा जैसी नहीं है. अनुम्मा ने धीरे से कहा. "वल्ल्या, मुझे और पैसे मत दो। बस मेरे लिए कुछ बर्तन खरीद दो। अभी नहीं। जब हम यहाँ से चले जाएंगे, तभी खरीदोगे। यह बात अपने पिता को मत बताना।"
यानी, संक्षेप में कहें तो, अगर आपको पता है, तो आप कहेंगे, "पथम्मा, मुझे नहीं पता।"
बस करो, अपने झूठों से!
आप तो विद्वान हैं, क्या आपने अपनी मनचाही सारी चीजें मेरे बिना ही नहीं खरीदीं?
इसीलिए इन बर्तनों का रहस्य किसी को पता नहीं चलना चाहिए। मैंने अनुम्मा के लिए घरेलू बर्तन खरीदने और इसे गुप्त रखने का समझौता किया था। जब हम वहाँ शांति से बैठे थे, तभी एक अजीब सी आवाज़ आई:
'उल्लादथिप्पारु, उल्लादथिप्पारु। मेरे साथ मत जाओ'
यह लैला की आवाज है. वह किसे उल्लादथिप्परु कह रही है?
मुझे ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा। अपमान सहन न कर पाने के कारण, इकलौता लड़का, सैदु मुहम्मद, परेशान आँखों से मेरे सामने आया। वह पूरी तरह नंगा था। उसने घबराकर कहा, "वाल्यामा, लैलाम्मा नाम की नौकरानी को बुलाओ।"
क्या आप किसी आदमी को "उल्लादथिप्परु" कहते हैं?
वह भी एक बदमाश है।
"छड़ी मत लाना।"

सैदु मुहम्मद झट से छड़ी की ओर बढ़ा। मैंने पुकारा:
‘अरे, लैला, इधर आओ!’
वह आई। बिल्कुल नग्न अवस्था में। सैदु मुहम्मद द्वारा लाई जा रही छड़ी को देखकर उसने कहा, "बूढ़े आदमी को यहाँ से ले जाओ।" 'नहीं'
यह कहते हुए मैंने सैदु मुहम्मद से छड़ी ले ली। लैला जोर-जोर से रोने लगी, "हे भगवान!"
‘माँ, माँ!’
मैंने कहा, लैला अपनी मां को "अम्माची" कहकर बुलाती है।
"अपनी मां को बुलाओ, अपने पिता को बुलाओ, अपने चाचा को बुलाओ, मैं सबको पीट दूंगा।"
अगर आप दादाजी की बात कर रहे हैं, तो दादाजी लैला के नाना हैं। मेप्पडियान हनीफा के खेत के पास रहते हैं। उस इलाके में कहीं रेलवे स्टेशन बनने वाला है। तब ज़मीन की कीमत वही मिलेगी जो आपने मांगी थी। इतना ही नहीं, वह मामला भी सुलझ जाएगा। लैला के दादाजी ने यह सब पहले से सोच-समझकर हनीफा से ज़मीन खरीदी थी। लैला ने कहा।
अपनी माँ को मत मारो!
पापा को मत मारो!
नमक और काली मिर्च का तो कोई जवाब ही नहीं!
"लेकिन अब आपको लड़कों को 'उल्लादथिप्परु' कहकर नहीं बुलाना चाहिए।"
35
'नहीं।'
"जब आपके पिता को दफनाया जाएगा, तो क्या आप सैयद मुहम्मद को वहां ले जाएंगे?"

क्या आप अपने परदादा को ले जाएंगे?
उसने आँखों में आँसू लिए कहा:
चलो सबको साथ ले चलते हैं!
ओह, तो इस तरह मामला सुलझ गया। मुआवजे के तौर पर मैंने सैदु मुहम्मद को दो मिठाई और एक नजालिपुवन फल दिया। मेरे पास केले, टमाटर, कन्नन फल, अनानास, नजालिपुवन, मिठाई - सब कुछ स्टॉक में है। मैंने सिर्फ मिठाई ही पैसों से खरीदी है। बच्चों का रोना बंद करवाने के लिए। मेरे छोटे भाई कोचुन्नी और सुलेमान ने बाकी सब कुछ खरीदा। मुझे भी बहुत सारे फल खाने की ज़रूरत है। मैंने सारे फल मेज पर रख दिए थे। मैंने सैदु मुहम्मद को डिब्बे पर चढ़कर फल खाते देखा। उसने भी वही देखा जो मैंने देखा। उसे बहुत बुरा लगा कि वह मेरे सामने बड़ा चोर बन गया। वह रोने लगा। मैंने सारे फल डिब्बे में सुरक्षित रख दिए ताकि उसे रोने का और मौका न मिले। जब मैंने सैदु मुहम्मद को मिठाई और फल खाते देखा, तो लैला फूट-फूटकर रोने लगी। मैंने उसे दो मिठाई और एक फल दिया। मैंने उतनी ही मात्रा आरिफा को भी दी, जो उन्हें सूंघने आई थी। मैंने जुबैदा और रशीद को दो-दो मिठाई दीं। फिर राहत महसूस करते हुए मैंने अपनी माँ से चाय लाने को कहा, बीड़ी जलाई और एक किताब ली, और आरामकुर्सी पर लेट गई। सब कुछ शांत था। जब मैं वहाँ लेटी थी, मेरी माँ, जिन्होंने मुझे शान से पाला-पोसा था, मेरे पास आईं। तीस साल की उम्र में उनकी उम्र सड़सठ, सतहत्तर या सत्तासी है। उनके एक भी दांत नहीं गिरे हैं। वह सुबह चार बजे उठती हैं। फिर वह नहरों में भीगे हुए नारियल के पत्तों को खींचकर लाती हैं और उन्हें बुनती हैं। उसके बाद, वह उन्हें खेत में फैला देती हैं। सूरज उगते ही उन्हें सूखने देती हैं। उसके बाद, वह घर के लिए पानी भरती हैं। वह दोनों हाथों में एक-एक बड़ा घड़ा लटकाए आती

हैं। मैं पथुम्मा, अनुम्मा, ऐशोम्मा और कुंजनुम्मा को डांटूंगी;
इससे शोर होगा;
रात दस बजे तक घर के बहुत सारे काम होते हैं। पथुम्मा हर रात घर पर नहीं रहती। हालांकि, रोक्कम में तीन लड़कियां हैं। उम्मा काम क्यों करती है?
क्या तुम चुप रहकर चुपचाप बैठ सकते हो?
उम्मा के पास इन सभी सवालों के लिए प्रथम श्रेणी की शांति है। "उन्हें कुछ नहीं पता। उन्हें घर की देखभाल करने की आदत नहीं है।"
ठीक है, उन्हें सीखने दो। उम्मा, इस सरकार को अकेला छोड़ दो। तब हमेशा शांति बनी रहेगी।
आप इस घर के बारे में क्या जानते हैं?
"एक कदम, तीन कदम।"
अगर इस वजह से भी मुझे नुकसान नहीं हुआ, तो मैं कहूंगा;
क्या उन सभी के बच्चे नहीं हैं?
इन्हें किसे देखना चाहिए?
मुझे कहना होगा:
"हममें से किसी एक को बच्चों की देखभाल करनी चाहिए। बाकी सबको काम करना चाहिए।"
‘मैं तुम्हें बता सकता हूँ, नेनांग। एक पैर, तीन पैर। मुझे थोड़े पैसे दे दो।’
हमारी बातचीत हमेशा इसी पैसे पर आकर रुक जाती है। यह मेरी सेहत के लिए अच्छा नहीं है। इसलिए, चाहे मैं अपनी माँ को कुछ भी उठाते या घसीटते हुए देखूँ, मैं चुप ही रहती हूँ। आप मेरी माँ से पैसे क्यों माँगते हैं?

मेरी मां ने आते ही धीमी आवाज में कहा।
"अरे, मुझे दस रुपये का नोट दो।"
मैंने उसकी तरफ ऐसे देखा जैसे पूछ रही हो, "मैंने अभी अपनी माँ से क्या कह दिया?" वह धीरे-धीरे मेरे पीछे आई।
‘अदुलकादिर नहीं जानता। हनीफा नहीं जानता। अनम और पथुम नहीं जानते।’
मैंने बहुत ही गुप्त रूप से पूछा।
क्या बच्चे और दुनिया को जानने में कोई आपत्ति है?
मेरी माँ ने भौंहें चढ़ा लीं।
बस करो। मुझे दे दो। किसी को पता नहीं चलना चाहिए।
मैंने भी भौंहें चढ़ाईं। मैंने पूछा।
‘मेरे आने के बाद से आपने इस घर को कितना पैसा दिया है?’
आपने सार्वजनिक और गुप्त रूप से कितना पैसा खर्च करके अपना गुजारा किया है?
उम्मा ने दबे स्वर में कहा।
"ऐसा नहीं है कि आपने मुझे कुछ नहीं दिया। अब मुझे दस रुपये चाहिए।"
‘मैंने तुम्हें जो कुछ भी दिया था, वह सब कहाँ है?’
अभी कुछ ही दिन हुए हैं, है ना?
वह सारा पैसा कहाँ गया?
उम्मा ने बहुत धीरे से कहा।
'मुझे बताओ!'
"सब कुछ अब्दुलकातिर ने खरीदा था।"
मैंने उसे एक और रुपया दिया था, है ना? चट्टान!
उसे आने दो।

बचपन में ही उसकी गर्दन के नीचे का हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया था। उसके पिता ने उसके इलाज पर हज़ारों रुपये खर्च किए। अंत में, उसके दाहिने पैर में लंगड़ापन रह गया। उसका दाहिना पैर बहुत कमज़ोर है। वह बिलकुल बेवकूफ है। वह लोहे की छड़ी के सहारे चलता है। उसकी माँ ने धीरे से कहा।
"उसे कुछ मत बताना। क्या इन सभी पुराने और भ्रष्ट कामों के लिए दंड पाने वाला लक्षनाथमन ही नहीं है?"
आपने अपनी यात्रा पर कितना पैसा खर्च किया, वो भी उसके बिना, पेट भरकर घूमते हुए?
मैंने इसका जुर्माना पहले ही भर दिया है। मैंने यहां काफी पैसा भी खर्च किया है।
‘पटकापारा!’
किसी ने मना नहीं किया। अब, किसी को बिना बताए, मुझे दस रुपये दे दो।'
"अब्दुल कादिर ने मेरी मां के लिए ये सारा पैसा बिना किसी को बताए कैसे खरीद लिया?"
उसे यह रहस्य कैसे पता चला?
‘पटकापारा!’
अभिम पाथुकुट्टिम के पास गया और उसे बताया।
मैंने बहुत धीरे-धीरे कहा।
"मैं तुम्हें एक राज़ बता रही हूँ, उम्मा। किसी और को मत बताना। मेरे पास सिर्फ़ एक पाँच रुपये का नोट बचा है। मुझे दूसरा जोड़ा नहीं चाहिए।"
मेरी मां ने तुरंत कहा।
'इतना ही!'

मैंने चारों ओर देखा और कमरे में जाकर नोट और एक केला ले आया। पथुम्मा की बकरी, जिससे केले की महक आ रही थी, मेरे सामने आ गई। मैंने फल छीला और खा लिया। मुझे कुछ खाते देख मेरी माँ की पालतू बिल्लियाँ आ गईं। मेरी देखरेख में घूमने वाली मुर्गियाँ भी आ गईं। मैंने फल का छिलका पथुम्मा की बकरी को दे दिया। बकरी हमेशा की तरह खड़ी रही। मैंने चारों ओर देखा और कोई नहीं दिखा। न हिरण थे, न इंसान। केवल मुर्गियाँ, पथुम्मा की बकरी और बिल्लियाँ थीं। मैंने चुपके से पाँच रुपये का नोट अपनी माँ की गोद में रख दिया। मेरी माँ ने चारों ओर देखा और पाया कि न हिरण थे, न इंसान। मेरी माँ ने उसे मोड़कर कपड़े में बाँधा और अपनी कमीज़ में रख लिया। फिर वह ऐसे बैठ गई जैसे कुछ हुआ ही न हो। मैंने पूछा।
तो विवरण क्या हैं?
उम्मा ने कहा।
"ओह, मैं अब बहुत बूढ़ा हो गया हूँ। क्या आपको पता है कि मेरी मृत्यु कब होगी?"
मुझे तुम पर क्रश है। तुम्हें किसी लड़की से शादी करके उसके साथ रहना चाहिए।
मैंने चिल्ला का कहा।
"अगर हम कहीं साथ बैठें, तो क्या वे सहमत होंगे?"
शुभ प्रभात!
अरे बाप रे!
दौड़ना!
"मेरा बक्सा और बिस्तर ले जाओ। कुली को बुलाओ।" वे दोनों दौड़ते हुए आए।
‘यह क्या है, माँ?’
अनुम्मा ने पूछा। पथुम्मा ने कहा।

क्या तुम्हारी दादी पैसे मांगतीं?
मैंने तुरंत कहा:
"बस ऐसा नहीं है!"
उम्मा उठीं और बाहर चली गईं। “क्या हुआ, उम्मा?” मैंने पथुम्मा और अनुम्मा से पूछा और उनके पीछे-पीछे चली गई। मैं थोड़ी देर शांति से वहीं बैठी रही। मैंने अनुम्मा से दोबारा चाय लाने को कहा और पी ली। फिर मैंने एक बीड़ी पी। तभी मैंने देखा कि पथुम्मा की बकरी आंगन में खड़ी है, अपनी जीभ बाहर निकालकर बरामदे में मेरे पास रखी माचिस की डिब्बी खाने की कोशिश कर रही है। मैंने उसे उठाया, माचिस बदली और उसे माचिस की डिब्बी दे दी। पथुम्मा की बकरी ने माचिस की डिब्बी को बड़े चाव से खाया। यह देखकर कि वह नहीं जा रही है, मैंने कहा।
"अजसुंदरी, मुझे माचिस चाहिए। एक और माचिस की डिब्बी है।"
उस समय पथुम्मा जंगल का पानी लाकर उसे दे दिया। मैंने पथुम्मा को बताया।
"पाथुम्मा, तुम्हारी बकरी मेरी दो किताबें खा गई है।"
"मैंने ज़रूर कुछ बहुत बुरा कह दिया होगा," पथुम्मा ने कहा। "ऐसा मत कहो, बड़े भाई—मेरी बकरी ऐसा नहीं करेगी।"
फिर, बहुत धीरे से, उसने कहा, "कान की बालियों के बारे में क्या?" मैं भी धीरे-धीरे बोलता था।
'मुझे याद है'
बहुत धीरे से
किसी को पता नहीं चलना चाहिए।
इतना कहकर पथुम्मा थाली लेकर चली गई। रशीद और सुबैदा रो रहे थे।
आरिफा, ज़ैदु मुहम्मद और लैला भी सहानुभूति में रोने लगे थे।
बीच-बीच में लैला...

अपनी माँ को दूर मत ले जाओ
यह भी कहा गया है कि जब वह इसी तरह बैठा था, तभी अबू एक पत्र लेकर आया। उसने उसे पत्र दिया और एक छड़ी से उसे मारा।
'यह क्या है?'
वह चिल्लाया और बाहर चला गया। तुरंत ही सब लोग रोना बंद कर दिए। घर में सन्नाटा छा गया!
मैंने पत्र खोला और पढ़ा। यह मद्रास के दूर शहर से आया था। राजश्री एम. गोविंदन की पत्नी डॉ. पद्मावती अम्मा ने एक बेटे को जन्म दिया है। माता और बच्चे को हार्दिक शुभकामनाएं। मैंने तुरंत जवाब लिखकर माता और बेटे को शुभकामनाएं दीं। मैंने बेटी को भाई होने की बधाई दी। मैंने उसके पिता को सलाह दी कि वे उसे ढाई रुपये बैंक में जमा करने के लिए कहें। मैंने श्री एम. गोविंदन को दूसरी बार पिता बनने पर बधाई दी। उनमें ए. नारायणन नाम्बियार एम.ए., के.सी.एस. पणिक्कर, डेविड जॉर्ज, जनम्मा, परुकुट्टी अम्मा, के.ए. कोडुंगल्लूर, के.पी.जी. पणिक्कर (गोपाकुमार), सरथकुमार, रामजी आर.एम. शामिल थे। अगर मद्रास में मेरे दोस्तों, जैसे मणिक्ककट, से मुलाकात हो तो मैं उन्हें बताना चाहूंगा कि मैं अपनी मां के साथ रह रहा हूं, जिन्होंने मुझे पाला-पोसा है, और मैंने उनसे पूछा है कि क्या सब ठीक हैं। मैं अपने पिता, बच्चों और माता को एक बार फिर शुभकामनाएं देना चाहता हूं। मैं पत्र पूरा करके उसे एक लिफाफे में डालना चाहता हूँ, उसे सावधानीपूर्वक सील करना चाहता हूँ, पता लिखना चाहता हूँ और अबू को फोन करना चाहता हूँ।
इसे लेकर तुरंत पोस्ट न करें।
जब मैंने वह ऑर्डर किया, तो मुझे कुछ याद आया।
'इंतज़ार..'

मैंने कहा था:
"मुझे तुम्हारे बारे में बहुत सारी शिकायतें सुनने को मिल रही हैं। तुम अब्दुल कादिर की दुकान का सारा पैसा उन लोगों को उधार दे रहे हो जिनसे तुम मिले हो। तुमने उन सभी पत्रिकाओं का लाइसेंस ले लिया है जिनसे तुम मिले हो। तुम किसी की बात नहीं मानते। क्या यह सही है?"
हर सवाल के जवाब में उन्होंने कहा:
मुझे कोई नहीं देख सकता।
इससे पहले कि मैं कुछ कह पाती, उसने कहा, "वाह, वाल्या, आपका स्वागत है!"
क्या आप देख रहे हैं कि बहनों, कोच्चि बहनों, परदादी और मां ने इस आंगन और खेत को खूब झाड़-पोंछ कर साफ किया है, जलाया है और पूरी तरह से साफ कर दिया है?
मैंने पहले भी कहा था - कोई मेरी बात नहीं सुनेगा। सबने कहा कि मुझे खुद को मार लेना चाहिए। अब क्या करूं?
यह सब एक बड़ा मुनाफा कमाने का धंधा है। उन्होंने यह सब इसलिए किया ताकि जब वह अमीर आदमी आए तो वह खुश हो जाए। क्या मैं अमीर हूँ?
क्या आपके पास मेरा पैसा है?
"बड़े भाई, हमें यह आंगन बनाना होगा। हमें चिड़ियों का घोंसला हटाकर उसे चालू करना होगा।"
मैंने पूछा, "अगर हम ऐसा कहें तो क्या होगा?"
मुझे आपको बहुत बड़ी रकम चुकानी है। मुझे वो पैसा कहाँ से मिलेगा?

रात के खाने के बाद वह पत्र लेकर चला गया। उसे अब्दुलकादर से मिलने जाना था। उसके जाने के बाद हनीफा आया। हनीफा एक सिपाही था। उसके बाद उसने एक दर्जी की दुकान शुरू की;
इनमें एक साइकिल की दुकान भी है। आम तौर पर हनीफ़ा एक संस्कारी महिला हैं। दो छाती वाली ब्रा, जुब्बा, सँवारे हुए बाल और साफ़ दाढ़ी। आज उन्होंने सिर्फ़ मुंडू पहना है। कुछ राज़ है। मैंने कुछ नहीं कहा। अगर मैंने कुछ कह दिया तो...!
उसने कहा:
"वाल्या इक्काका, मैं अपनी जमीन बेचने की सोच रहा हूँ। वाल्या इक्काका, मैं आपको कम कीमत दूंगा।"
‘इसे अभी प्रतिबंधित क्यों नहीं किया जाए?’
"मेरे पास पैसे नहीं हैं। अगर होते, तो क्या तुम मेरे लिए एक कमीज़ नहीं सिल देते?"
मुझे इस जगह के लिए क्या कीमत मिलनी चाहिए?
"क्योंकि यह एक बड़ा सौदा है, इसलिए मैं आपको छूट दूंगा। यह दस हजार रुपये है।"
दस हजार रुपये। मुझे पता है हनीफा ने इसे कितने में खरीदा था— मैंने बात बदलते हुए पूछा, "अब आप इस घर के लिए कितना भुगतान कर रहे हैं?"
दो-तीन साल पहले हनीफ़ा की घरेलू आमदनी दो रियाल प्रतिदिन थी। उसे, उसकी पत्नी और दो बच्चों को खाना-पानी मिलता था। उसने बिस्तर नहीं खरीदा था। उसने तेल या साबुन भी नहीं खरीदा था। ये सब खर्चे उन दो रियालों में ही शामिल होते। अब्दुलकादर उसके बारे में बुरा-भला कहता था। उसे ज़रा भी शर्म नहीं थी। अगर उस पर दबाव डाला जाता, तो वह तुरंत कहता;
मैं सेना में भर्ती होने जा रहा हूँ!

सरकार को मेरी जरूरत है।
हालाँकि, उस दिन मेरी मध्यस्थता से कुछ समझौते हुए। मैंने दो आने को घटाकर चार आने कर दिया। धीरे-धीरे यह बारह आने तक पहुँच गया। मेरे जाते ही हनीफ़ा ने इसे और कम कर दिया। मुझे याद है कि अंत में इसे घटाकर पुराने दो आने या कुछ और कर दिया गया था। हनीफ़ा का एक बच्चा भी था। उसने उसे बहाना बनाकर और पैसे देने की कोशिश की। लेकिन उसने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया। उसने कहा...
मैं कोचिक्कक्कड़ा के मेडू पर नहीं जी सकता!
‘अब्दुल कादिर को क्या हुआ है?’
"वह नोटों का एक बंडल लेकर मेरी दुकान में आया। वहाँ बहुत सारे भले लोग बैठे थे। फिर उसने कहा, 'देखो,' और नोटों के बंडल से मेरे चेहरे पर थप्पड़ मार दिया। फिर उसने कहा,
"अगर आप इस पर पैसा लुटाते हैं, तो यह पैसे के लायक नहीं रह जाता।"
फिर वो धमाके के साथ चला गया। मुझे शर्मिंदगी हुई। क्या मैं अपने बड़े भाई के लिए रोज़ बीड़ी नहीं खरीदती?
क्या तुम मुझे हर रोज माचिस नहीं खरीदते?
आप मेरे पैसे क्यों नहीं फेंक देते? पैसे में क्या बुराई है? ठीक है। लेकिन मैंने शांति की बात इसलिए नहीं कही थी। मैंने कहा था:
‘अब जब रशीद यहाँ है, तो आप राशन खरीदने के लिए क्या भुगतान कर रहे हैं?’
उसने ऊँची आवाज़ में कहा:
मैं सेना में भर्ती हो जाऊंगा। सरकार को मेरी जरूरत है।

□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□, □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□, □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□

‘□□□□, □□□, □□□□’

"□□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□"

"□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□"

□□□□□□□ □□ □□□:

"□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□ □□□□"

□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□-□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□, □□□;

□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□, □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□, □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□-□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□, □□□□ □□ □□□, □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ 1 □□:

□□ □□ 12 □□□□□ 2 □□□□:

□□ □□ 75 □□□□□

दो
पथुम्मा की बकरियों की ऊन काटने का काम सुबह शुरू हुआ। करीब आठ बजे होंगे। मैंने अपने सिर और शरीर पर तेल मल लिया था और लंकॉटी पहनकर व्यायाम कर रही थी। तभी मुझे आंगन में बच्चों के शोर की आवाज सुनाई दी।
'अंदर जाओ!
‘उल्लादथिप्पार’
'पकड़ना!'
"पूंछ पकड़ो।"
मैंने वह नहीं देखा!
मुझे कांटा नहीं दिखा।
हॉर्न को थामे रहो!
कसकर पकड़ें!
'क्या बात क्या बात?
मैंने खिड़की से बाहर देखा। कुछ खास नहीं। पथुम्मा की बकरी ने अबी की आधी पैंट का पूरा अगला हिस्सा खा लिया था!
बाकी सब पकड़े जा चुके हैं। अबी ने बकरी को गर्दन से पकड़ रखा है। बकरी उसे पूंछ से खींच रही है। सैदु मुहम्मद ने उसे सींगों से पकड़ रखा है। आरिफा सबसे पीछे खड़ी है। रशीद और जुबैदा आंगन में बैठे अंगूठा चूस रहे हैं और बाकी सब बातों पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। लैला बकरी को पूंछ से पकड़कर उसे डांट रही है।
'अंदर जाओ!
चलो चलते हैं!
मैं कमरे से भागकर बरामदे में गया, फिर आंगन में, बकरी के कान पकड़कर उसे नोंच डाला। बकरी ने न सिर्फ एबी की पतलून का अगला हिस्सा खाया, बल्कि उसकी एक जेब भी खा ली!

जब उन्हें पता चला, तो पता चला कि पथुम्मा की बकरी निर्दोष थी। अबी की आधी पतलून की जेब में सफेद रोटी थी। एक आदमी ने बकरी को थोड़ी रोटी दी। उसने बाकी रोटी आगे रख दी और बकरी को अपने सामने आकर खाने को कहा। बकरी ने रोटी और पतलून का आगे का हिस्सा खा लिया। उसने जेब में रखी रोटी भी जेब के साथ ही खा ली। अबी ने कहा।
‘पिताजी तुम्हें पीटेंगे!’
"क्या आपको यह बात पहले याद नहीं आ रही थी?"
मुझे तुम्हें हराने दो।

कुछ देर बाद मैंने कहा:
"डरिए मत। कोई नहीं बताएगा।"
उसने पथुकुट्टी, लैला और सैदु मुहम्मद को इसे गुप्त रखने के लिए कहा। उसने लैला से कहा कि वह किसी और को न बताए।

‘उल्लादथिप्परु’
उन्होंने मुझे उन्हें फोन न करने की सलाह भी दी। अभ्यास पूरा करने के बाद, मैं नदी में स्नान करने के लिए तैयार हो गया। मैंने सैदु मुहम्मद और पथुकुट्टी को बुलाया। फिर अबी और लैला भी आ गए। वे बापा के साथ स्नान करने नहीं गए थे। वे मेरे साथ स्नान करने का इंतजार कर रहे थे। कोई खास वजह नहीं थी। लैला ने अबी की स्लेट पेंसिल तोड़ दी थी और उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर दिए थे। इस गलती के लिए बापा ने अबी और लैला को स्नान के लिए नहीं ले गए। हनीफा ने पथुकुट्टी और अबी को स्लेट पेंसिल खरीदने के लिए ऋण दिया था। मैं सबको मुवत्तुपुझा नदी ले गया, उन्हें स्नान कराया और फिर उन्हें किनारे पर खड़ा कर दिया। फिर वे गहरे पानी में स्नान कर रहे थे और खूब छपछपा रहे थे। तभी मैंने अबी को पुकारते हुए सुना: "महान दादा"
मैंने पीछे मुड़कर देखा। कोई भी पानी में नहीं उतरा था। मैं तैरकर घाट तक गया और पूछा।
'क्या गलत?
अबी ने कहा।
‘अब और पतलून नहीं’
उसने सब कुछ स्पष्ट कर दिया। उसे अपनी शर्म को छिपाने की कोई ज़रूरत नहीं थी। भला वह नग्न अवस्था में ग्रामीण सड़क पर कैसे चल सकता था?
मैंने पूछ लिया।
क्या तुम इसी तरह नहीं आए थे?
कोई बात नहीं। बस इतना ही। अब अबी ने कडुतुवांजा में अपने स्कूल के एक लड़के को देखा। उसने पगड़ी पहनी हुई थी!

तो मैंने अबी को शर्मिंदगी छुपाने के लिए एक तौलिया दिया। फिर पथुकुट्टी को भी शर्म महसूस हुई। क्या उसे भी तौलिया चाहिए? मैंने स्नान किया, अपनी पगड़ी उतारी, निचोड़ी, तौलिए में लपेटी, पानी में भिगोई और बच्चे को पहनाई। लैला और सैदु मुहम्मद को अभी तक शर्म महसूस नहीं हुई थी। अगर उन्हें शर्म महसूस होती तो वे क्या करते?
मेरे पास सिर्फ़ दो ठेले थे और हम सफ़ेद रेतीली सड़क पर चल पड़े। जब हम निकल रहे थे, अब्दुल कादिर और हनीफ़ा घर पर बहस कर रहे थे। बहस का कोई खास कारण नहीं था—अब्दुल कादिर को पता चला था कि हनीफ़ा ने कल उसे घर पर राशन खरीदने के लिए कुछ नहीं दिया था। हनीफ़ा के लिए वह काफ़ी नहीं था। इसलिए वह और उसका परिवार घर छोड़ने वाले थे!
‘चलो, ऐशोम्मा’
हनीफा ने पुकारा:
"मुझे पुलेलेरेम कहो।" वह और उसका परिवार अपने केले के बागान में रहने जा रहे थे, जहाँ वे कुछ गड्ढे खोद रहे थे। जब मैंने देखा, तो उसने वही कपड़े पहने हुए थे जो मैंने काटे थे। जब मैं पास जाकर पूछा, तो उसने कहा, "मेरे पास बात करने का समय नहीं है, मेरे पास बहुत काम है।"
उसने कहा, "ठीक है, फिर।" वह चला गया। वह सीढ़ियों से ऊपर गया और बोला।
"इस घर में अब मेरा कोई अधिकार नहीं है।"
हनीफा अपनी दर्जी की दुकान पर गया। मैंने अब्दुल कादिर से पूछा।
"अरे, क्या तुम मुझे इस शोर से बचा नहीं सकते?"

क्या आप उस इंस्पेक्टर को एक बार फिर अपना फैसला बदलने के लिए नहीं कह सकते?
अब्दुलकादर ने कहा।
इस जगह में क्या खराबी है?
उम्मा, मेरे और अबू के लिए तेल, घी, दूध, चाय, बीड़ी, माचिस, केले, टमाटर, अनानास, कटहल, शकरकंद, खाना और साथ। कोचुन्नी- तुम्हें और क्या चाहिए?
अब्दुलखादर एक स्कूल मास्टर थे;
एक महान व्याकरणविद्। एक समय की बात है, उन्होंने अपनी माँ से कहा।
"मां, कृपया मुझे थोड़ा साफ पानी दीजिए।"
उस दिन उसकी माँ ने उसे चावल परोसने वाले बड़े चम्मच से मारा। उसके पिता ने उसे सांत्वना दी।
"तुमने काफी कुछ कह दिया। अब मुझे क्या कहोगे?"
'पिता।'
यह सुनकर उसने चम्मच से उसे फिर से अपनी माँ को दे दिया। फिर वह उसे बार-बार "माँ" और "पिताजी" कहकर पुकारने लगा। धिक्कार है! एक दिन हम दोनों को साथ-साथ स्कूल ले जाया गया। उस दिन... ‘मुहम्मदन स्कूल’
हाँ, ऐसा ही था। वह विद्यालय उम्पियान्नन नामक एक श्रद्धालु द्वारा बनवाया गया था। उस समय पुथुस्सेरी* नारायण पिल्लासर प्रथम कक्षा शिक्षक थे। उन्होंने ही मुझे और अब्दादुलक़दर को "आ आ" कहा था।
लिखा हुआ। अब्दुलखादर स्कूल और बाहर दोनों जगह शरारती लड़का था। घर पर भी वह शरारती ही था। मैं स्कूल में सभ्य था। नारायण पिल्लासर उसे बहुत पीटते थे। अब्दुलखादर अपने बाएं पैर से

दाहिना पैर घुमाकर लड़कों को पीटता था। वह मुझे भी ऐसे ही पीटता था। फिर वह उसे अपने दाहिने पैर के सफेद सिरे पर लाता और पूछता: क्या आप मुझे यह दिखा सकते हैं?
संभव नहीं!
वह कैसे संभव है?
क्या तुम दूसरों के पैरों तले कीचड़ में लेटे हो?
यह अभ्यास किसी और के लिए संभव नहीं है।
‘फिर गंध तो देखो’
दूसरों को उसके खुरों की सफेदी सूंघनी चाहिए। वरना वे काट लेंगे!
अगर बच्चा दूर रहता है, तो वह खुद को पीटता है और रोता है। उसके लंगड़ापन की वजह से लोगों को उससे सहानुभूति है। वह इसका पूरा फायदा उठाएगा। वह जो भी दिखाता है, उसमें दूसरों की गलती बताता है। बच्चा चुपचाप खड़ा होकर उसकी मार खाता रहेगा। मैं भी चुपचाप खड़ी रही हूँ। मैंने जितनी मार खाई है, उसका हिसाब नहीं लगाया जा सकता। मुझे उसकी स्लेट और किताबें उठानी पड़ती हैं। क्या मैं सबसे बड़ी नहीं हूँ?
ईमानदारी से कहें तो, भाइयों को एक-दूसरे की स्लेट और किताबें उठानी चाहिए। लेकिन मुझे ही उसकी स्लेट और किताबें उठानी होंगी। वरना!
मैंने गरजते हुए कहा;
मैंने स्लेट और किताबें बहुत ढोईं। मेरे अंदर विरोध का तूफान चल रहा है। लेकिन मैं क्या कर सकता हूँ?
वह अपनी स्लेट और किताबें सड़क पर छोड़ देता, हाथ बांध लेता और मेरे बगल में खड़ा होकर धीरे से पूछता,
क्या मेरा सेराटो पोसाकॉम को भी सपोर्ट करता है?

हर रोज ऐसा न करने की इच्छा जताएं। तब वे तर्क देंगे:
'ओह, मैं तुम्हारा चाचा हूँ, है ना?'
‘क्या यह ठीक है या नहीं?’
"नहीं!" फिर वह एक पैर पर खड़ा हुआ और मेरी छाती पर एक जोरदार प्रहार किया। मैं बेहोश होकर गिर पड़ा और वहीं पड़ा रहा। वह एक तरफ हट गया और आदेश दिया:
"चलो उठो, चलते हैं। मैं तुम्हें शांत कर देता हूँ और हम जाकर खूब मज़े करेंगे!"
मैं लेटकर उदास मन से सोचूंगा। क्या यह उचित है?
छोटा भाई दस्तक देगा। बड़ा भाई दस्तक देगा। फिर वह किताबें और स्लेट लेकर आएगा। मैं उसी तरह लेट जाऊँगा। वह मेरी छाती पर बैठ जाएगा। फिर वह पूछेगा:
'क्या आपको पेय चाहिये?'
मैं सच बोलूंगा;
'नहीं;
चल दर।'
तो मैं उठकर उसकी स्लेट, किताबें वगैरह ले जाऊँगा। कितने दिन लगेंगे!
कितनी गर्जना हुई!
जब ये सब हो रहा था, एक दिन मुझे अचानक एक दिव्य अनुभूति हुई। ज्ञानोदय!
इससे पहले कि वह मुझे मारने के लिए हाथ उठा पाता, मैंने उसे लात मार दी। उसके सही पैर पर!
"ओह, अब्दुलखादर वहाँ बेसुध पड़ा था, और मैं तुरंत उसकी छाती पर चढ़ गया।" उसने बड़े दुख से पूछा, मानो मैंने उसके साथ कोई बड़ा अन्याय किया हो।

‘यह क्या है, क्या यह मैं ही नहीं हूँ?’
क्या तुम मेरी छाती पर बैठ सकते हो?
मैंने उसे मारने के लिए अपना हाथ मोड़ा। वह रोने लगा। आंसू? मुझे मत मारो!
मैं अनुसाना हूँ।
भाई!
हम्बा!!
"क्या आपको पहले याद नहीं आया?"
मैं इसे भी याद रखूंगा।
"ओह अब छोड़िए भी।"
मैंने पूछ लिया:
"पक्षी को देखकर कौन आगे की ओर उछल पड़ेगा?"
'यह बात है..'
"कौन पूल में कूदकर उसे तैरकर पार करेगा?"
'यह बात है..'
‘ककुम्बा मुन्नम, घर के लिए मुझे कौन कुछ देगा?’
'यह बात है..'
'जब मैं नरपुल्ला की मेज से चाक उठाऊंगा तो मुझे सबसे पहले कौन सिर हिलाकर सहमति देगा?'
'यह बात है..'
'तो क्या हुआ?
उसने कहा।
"मैं तुम्हें पोसाको कोडा कहकर ही पुकारूंगा, चाहे तुम भिक्षु ही क्यों न हो।"
मैंने कहा था।
"तुम्हें जो सही लगे वही करो।"

‘पिताजी, मेरे आगे कौन चलना चाहता है?’
'मुझे!'
तो उस दिन से अब्दुल कादिर मेरा छोटा भाई बन गया। वही मेरा सच्चा भाई है। चट्टान!
'ओह,'
मैंने कहा था:
"क्या आपको उस इंस्पेक्टर से अपना फैसला बदलने के लिए नहीं कहना चाहिए?"
मैं इस घर में लेटी हुई रो रही हूँ और चिंतित हूँ। तुम नहीं समझोगे।'
"अरे, वो आदमी जगह का जायजा ले रहा है। आबकारी विभाग के लोग भी जगह का जायजा ले रहे हैं। कृपया धैर्य रखें और कुछ और दिनों तक यहीं रुकें।"
वह एक छड़ी और हथौड़ा लेकर अपनी दुकान पर गया। जब मैं आधा अनानास काट कर छील रही थी, तभी पथुम्मा की बकरी खिड़की के पास और बच्चे दरवाजे पर आ गए। वह केला, चुंडिलक्कन्नन और घी मिलाकर पेस्ट बनाता और हर बच्चे को एक गेंद देता। अनानास के हर टुकड़े के साथ। अगर उसे गेंद मिल जाती, तो बच्चे शोर मचाने लगते। लेकिन अबी, पथुकुट्टी, लैला, आरिफा, खदीजा आदि को देखे बिना, अनुम्मा का बेटा सैदु मुहम्मद मेरे सामने एक डंडा पकड़े हुए कुछ चहचहाते हुए खड़ा हो जाता, मानो वह आया और चला गया हो। वह उसे एक खास गेंद देता। वह मिठाई खाता और फलों के छिलके आदि पथुम्मा की बकरी को दे देता। फिर वह हाथ धोकर बरामदे में रखी कुर्सी पर चाय लेकर बैठ जाता। फिर स्कूल के बच्चे जाने लगते। हमेशा की तरह, लड़कियाँ भावुक आँखों से मेरी ओर देखतीं। बाद में ही मुझे उन सुंदर आँखों में छिपे दिव्य रहस्य का पता चला। वैसे, उस दिन अबी

और पथुकुट्टी हमेशा की तरह स्कूल गए थे। थोड़ी देर बाद, अबी, पथुकुट्टी और मैं सड़क पर खड़े दिखाई दिए। मैं हाथ हिलाकर उन्हें पुकार रहा था। क्या हुआ था?
मैं नीचे गया। पथुकुट्टी नारियल के पेड़ के नीचे बैठी थी। जैसे ही मैं वहाँ पहुँचा, अबी ने कहा।
"दादाजी, वो अखाड़ा जहाँ पिताजी सेरेट पेनल्टी खरीदा करते थे।" ‘अरयान?
‘पैंट की चाबी’
'आप क्या कह रहे हैं?
एक बकरी ने दूसरी बकरी को खा लिया।
‘हूँ!
पथुम्मा की बकरी, आर्याना को भी केंद्र में रखा गया था। लेकिन क्या बकरी सिक्का खाएगी?
मैंने कहा, "किसी को मत बताना;"
इसे पूरी तरह गुप्त रखें। देखते हैं कि अरण्यन प्राप्त करने का कोई तरीका है या नहीं।
एबी ने याद दिलाया।
अगर तुम मुझे देखोगे तो मेरी पिटाई करोगे।
‘तुम छिप गए!’
मैं आया और पथुम्मा से दो रुपये उधार लिए, आराया लिया, उसे अबी और पथुकुट्टी को दिया और उन्हें स्कूल भेज दिया। पथुम्मा की बकरी आंगन में खड़ी है!
किसी भी समय दो सिक्के गिर सकते हैं। मैं इंतज़ार कर रहा हूँ। लेकिन छोटे-छोटे सिक्के गिर रहे हैं। वृत्त में कुछ भी नहीं गिर रहा है। इसका कारण क्या है?
क्या तुम नहीं गिरोगे?

मेरी निगाहें बकरी की पीठ पर टिकी हुई थीं। जब मैं वहाँ बैठा था, तो छात्राएँ बड़ी चिंता से मेरी ओर देखते हुए झुंड में सड़क पर निकल गईं। कितनी सुंदर लड़कियाँ थीं!
मैं खुश हूँ। वे मुझे जानते हैं!
इसीलिए वे ऐसे दिख रहे हैं। वे आपस में बातचीत करेंगे:
(याद रखना, मैंने इसकी कल्पना बहुत खूबसूरती से की थी!) घुंघराले बालों वाली लड़की।
"क्या आप जानते हैं कि उस कुर्सी पर कौन लेटा हुआ है?"
हिरण की आँख:
"बाद में पता लगाएंगे!"
मशहूर लेखक वैकोम मुहम्मद बशीर
कोकिलावानी:
मैं इसे उनके साथ अपनी ऑटोग्राफ बुक में लिखूंगा!
बिल्ली की आंख।
"वो आदमी नहीं। क्या तुमने वो झोपड़ी जैसा घर नहीं देखा?" मधुवनी;
"जाओ, बिल्ली जैसी आँखों वाली!"
ये वही है। क्या आप देखना चाहते हैं कि उसने आज मेरी ऑटोग्राफ बुक में क्या लिखा है?
बिल्ली की आंख।
भागो। फिर देखेंगे!
तो उस दोपहर, लंच के बाद, वे स्कूल जाते समय मेरे घर आए!
फिर मुझे एक और घटना याद आई। उस समय मैं दूसरी इमारत में रह रहा था। हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक को मेरे आने की खबर मिली और उन्होंने कहा, "स्कूल की वर्षगांठ थी।"

मुझे प्रवचन देना है। मैं बस बच्चों को कुछ सलाह देना चाहता हूँ।
मैं उपदेश नहीं देता। मैं उस समय यहाँ नहीं रहूँगा।
उसने कहा।
"हम नोटिस पर अपने नाम छपवा देंगे। अगर आपके पास कोई जानकारी है, तो बस आ जाइए।" नोटिस छप गया;
एक नाम है!
मै क्या करू?
वह एक ऐसा व्यक्ति है जो मन की शांति के साथ कुछ लिखने आया है! हम्म!
जब मैं पौधों के बीच खड़ा था, तभी फाटक की सलाखों के बीच से दो आंखें दिखाई दीं!
घुंघराले बालों वाली एक लड़की। मैंने सोचा। ये चमेली या आड़ू का फूल ही होगा। मैंने पूछा।
'क्या?
उसने कहा।
‘नोटिस पर आपका नाम है। आपको हमें भाषण देना है। इसे चूकना मत, समझे?’
"अगर तुम वहाँ हो, तो मैं आ जाऊँगी।" और हर दिन वह और दूसरी लड़कियाँ फाटक पर आकर चिल्लाती थीं:
'इसे देखना मत भूलना, समझे?'
लेकिन सालगिरह से ठीक एक दिन पहले, मैंने एक साहसिक कदम उठाया! बिना डिब्बा या बिस्तर लिए। बिल्कुल खाली हाथ। मैंने सिर्फ अपनी माँ को बताया। फिर वार्षिक उत्सव के अगले दिन मैं आ गई। उसी दिन, घुंघराले बालों वाली लड़की और अन्य लोग आए और पूछा: 'आपने क्या देखा?'

मैंने कहा था।
"क्या तुमने नहीं कहा था कि अगर तुम चाहो तो आओगे?"
‘अच्छी लड़की’
बात कुछ इस तरह थी—मैंने यह देखने की कोशिश की कि क्या घुंघराले बालों वाली लड़की वहाँ से गुजर रही लड़कियों में से एक थी। नहीं;
सब लोग बड़े हो गए होंगे। ये लड़कियां कितनी जल्दी बड़ी हो जाती हैं!
मैंने सोचा कि मैं एक पेन लेकर उनके ऑटोग्राफ लिख लूँ;
मुझे तुरंत लगा, "उसे आने दो।"
उन्हें आने दो और थोड़ी देर रुकने दो। वे आए। उन्होंने मेरी तरफ देखा तक नहीं!!!
वे सीधे चंपा के पेड़ के नीचे गए, अपनी माँ से कुछ कहा और उन्हें कुछ दिया। उनकी माँ ने कपड़े में से चंपा का ढेर निकाला और उन्हें दे दिया। उन्होंने बारी-बारी से एक-एक टुकड़ा खाया और चंपा के पेड़ को लालसा भरी निगाहों से देखते हुए, मुँह में पानी भरते हुए उसे खाया। कितने उत्सुक गधे!
क्या वे अपनी मां द्वारा कपड़े में बांधे गए चंपांगा को बड़े चाव से खा रहे हैं?
लेकिन मुझे देखो, मैं तो साफ-सुथरा हूँ?
तुम सब गधे हो!
अचानक ही सारे रहस्य मेरे सामने खुल गए। वो लड़की मेरी तरफ नहीं, बल्कि चंपांगा की तरफ देख रही थी!!
तीव्र इच्छा!!!
जब सभी लड़कियां शैंपेन लेकर चली गईं, तो मैंने अपनी मां से पूछा।

‘तुम्हारी माँ ने उन्हें क्या दिया?’ उम्मा ने कहा।
'एक।'
"क्या तुमने उस लड़की को शैंपेन बेची?"
'अब और नहीं!'
‘आपने ओराना के लिए कितने पैसे दिए?’
'बीस।'
महान!
मैंने पथुम्मा की बकरियों को कितनी बार खाना खिलाया है!
उन लड़कियों की उदासीनता, जो मेरी तरफ नहीं देख रही थीं, ने मुझे बैठकर सोचने पर मजबूर कर दिया।
‘वह चंपा का पेड़ किसने लगाया?’
मैंने अपनी माँ से पूछा। मेरी माँ ने कहा।
"तुम यह बीज लाए और इसे बोया ताकि यह एक पौधा बन सके।"
चारों ओर हो गया?
पास ही में थालियाकल नाम का एक जैकोबाइट ईसाई परिवार रहता है। वहाँ थॉममन, मथनकुंजु और कुंजप्पन जैसे लोग हैं। वही मुझे यहाँ लाए थे। मैंने ही तो उन्हें यहाँ बसाया और पाला-पोसा, है ना? गधों ने मेरी तरफ देखा तक नहीं!
मैं उछलकर खड़ी हो गई और अपनी माँ से बोली:
‘वो वाला यहाँ!’
मेरी माँ ने मुझे तुरंत दे दिया। मैं गया और एक बीड़ी खरीदी। फिर मैं नदी किनारे गया। मैंने उस पुरानी नदी को देखा और उन कामुक लड़कियों के बारे में सोचा जिन्होंने कभी मेरी तरफ देखा भी नहीं था, और मैंने एक कश लगाया। उफ़!
और हर रोज, लड़कियां मेरे चंपा के पेड़ को देखेंगी!

इसमें चंपांगा घास का ढेर लगा हुआ है, जैसे कोई उछाली हुई गेंद पड़ी हो। मैं खुद आपको बताता हूँ;
'गधों, देखो!'
ये मेरा चंपा का पेड़ है। मैंने इसे लगाया और पाला-पोसा। गधे! आप उनसे बदला कैसे लेंगे?
मैं उसी कुर्सी पर बैठी रही। मैं सोने के लिए अपने कमरे में नहीं गई। जब मैं उसी तरह बैठी थी, तभी वे लोग आ गए!
मैं खड़ा हुआ और मैंने बड़े ही तिरस्कारपूर्ण लहजे में पूछा: 'आप क्या चाहते हैं?'
‘आर्याना के लिए चंपांग।’
‘कूपन’
उसने पैसे लिए और उन्हें एक थैले में रख दिया। फिर उसने थैले को देखा और मुझे दस डॉलर दिए, जो बहुत कम थे।
‘यह क्या है? सब कुछ छोटा है, है ना?’
अगर वो दादी होतीं, तो वो मुझे ही दे देतीं, है ना?
"उस दादी का इस पेड़ पर ज्यादा अधिकार नहीं है। इसीलिए उन्होंने इसे उसे इस तरह दे दिया।"
गधे!
"मुझे आज एक दे दो, अन्ना।"
"जिस व्यक्ति ने इस पेड़ को लगाने के लिए कड़ी मेहनत की, वह खुश नहीं है।"
मैंने एक भी ज्यादा नहीं दिया।
‘क्या गजब का आदमी है’
और इस तरह वो लालसा दूर हो गई। बड़े पेट!
मेरी तरफ मत देखो। चलो बिना शर्म के मेरे चंपा के पेड़ को देखते हैं!

जब मैं शैंपेन बेचता हूँ, तो मेरी माँ आकर पैसे माँगती है। मैं पूछता हूँ;
'क्यों?
इस चंपा के पेड़ पर उम्मा का क्या अधिकार है?
यह मेरी मेहनत का फल है। इस पर लगा मेरा खून का धब्बा है! "उम्मा, आप इसे कितने सालों से बेच रही हैं? वह सारा पैसा कहाँ गया?"
उम्म, मैं वहाँ पराजित होकर खड़ा हूँ। मैं नहीं जाऊँगा।
और फिर, आप जिस भी चीज़ को छूते हैं, उसके लिए एक रुपया देना पड़ता है। मैं वह खरीदना चाहता हूँ। मैं वह खरीदना चाहता हूँ। कितने रुपये, हम्म!
लोहे के बाघ को किसने स्थापित किया?
आंगन के एक कोने में एक बड़ा सा लोहे के रंग का इमली का पेड़ है। जड़ से लेकर नीचे तक वह हरे इमली के पत्तों से ढका हुआ है, बिल्कुल कांटे की तरह। मेरी माँ भी इसे बेचती हैं। क्या मैंने ही वह पेड़ नहीं लगाया था?
उम्म ने कहा:
"इसे तुम्हारे पिता ने बोया था। मैंने इसमें बहुत पानी भरा था।" तो यह हमारा नहीं है। चलो चलें!
उम्मा गुस्सा होकर चली गईं। मैंने अनुम्मा को बुलाया और उनसे चाय लाने को कहा। अनुम्मा पास वाले घर गईं और एक लड़के को मेरे लिए चाय लाने भेजा। मैं चाय पी रही थी, बीड़ी पी रही थी और मजे कर रही थी, तभी वह आ गईं। अन अंजना करम्पी!
दस से सोलह साल की उम्र। चंपांगा के लिए भी। एक कलाना लड़की? एक बैले डांसर?

मैंने गधे को थोड़ा सा दिया। लेकिन उसने उस जगह की तरफ नहीं देखा जहाँ चंपा खड़ी थी। वह सीधे मेरे पास आई और मुझे थपथपाया।
फिर उसने कहा।
"मैं आपको जानता हूँ महोदय। मैंने आपकी सभी पुस्तकें पढ़ी हैं।
मेरे पिताजी ने बताया था कि आप यहाँ हैं। लीजिए, आप यहाँ हैं। कृपया मेरी ऑटोग्राफ बुक में कुछ लिख दीजिए और उस पर हस्ताक्षर करवा दीजिए।"
हा!
हे सुंदर करंबी, मेरी इज्जत बचाने आई हो तुम धन्य हो! अचंद्रताराम, आपका जीवन सुखमय हो!
'आपका क्या नाम है?'
मैंने पूछा। उसने कहा।
‘सुहासिनी।’
'आप किस ग्रेड में हैं?'
छह
‘बच्चा क्या है?’
मैं कुली माधवन की बेटी हूँ।
क्या वह किसी मजदूर की बेटी नहीं है?
श्रमिकों की जीत हो!
मैं अपने कमरे में गया, एक कलम ली और सुहासिनी की ऑटोग्राफ बुक में लिखा।
मैं सुहासिनी को शुभकामनाएं देता हूं।
मैंने इसे लिख लिया और इस पर हस्ताक्षर कर दिए। फिर मैंने सुहासिनी से पूछा।
क्या आप शैम्पेन खाना चाहते हैं?

"मैंने इसे खा लिया है," उसने कहा। मैं एक बड़ा कागज़ लेकर आया, ताड़ के पेड़ पर चढ़ा, पचास साबुत, लाल ताड़ तोड़े, उन्हें बांधा और कहा:
"सुहासिनी, यह चंपा का पेड़ मैंने लगाया है।"
क्या यह सही है?
'सीधा'
!
वह गुस्से में चली गई। उस रात उसे एक खास खबर मिली।
‘रास्ते में खड़ी बकरी जल्द ही बच्चे को जन्म देगी’
ऐसा नहीं है कि वह गर्भवती है, बल्कि यह है कि वह जल्द ही बच्चे को जन्म देगी!
मुझे इस विशेष आयोजन के बारे में क्यों नहीं पता चला?
ऐसा बिल्कुल भी महसूस नहीं हो रहा था कि वह गर्भवती है। कभी उसका पेट फूला हुआ होता था, कभी उसमें खुजली होती थी। क्या गर्भवती होने पर भी ऐसा ही होता?
मैंने अपनी माँ से पूछा। मेरी माँ ने कहा।
‘यह पेराई बन गया’
क्या मुझे कोई संदेह है?
मुझे इसका एहसास क्यों नहीं हुआ?
क्या सभी महिलाएं यही नहीं कहतीं? प्रसव में महिलाएं ही माहिर होती हैं!
क्या प्रसव सुरक्षित होगा?
* नृत्य;
3 पैसे, * नारायण पिल्लासर अपनी मृत्यु तक मेरे पास आते थे। वे मेरी लिखी हुई बातें पढ़ते और मुझे आशीर्वाद देते थे। उनका देहांत हो गया है। उनकी आत्मा को शांति मिले। -बशीर

तीन
तो, पथुम्मा की बकरी बच्चा देने वाली है। अच्छी बात है। उसे बच्चा देने दो। मैं खुश हूँ। वह कब बच्चा देगी?
मैंने अनुम्मा से पूछा कि मेरा कमरा साफ करने, बिस्तर ठीक करने और उसे धूप में सुखाने के बाद वह कब घर आई।
"क्या तुमने बकरी को कुछ दिया, लड़की?"
अनुम्मा ने कहा कि उसने उसे दलिया का पानी पिलाया था।
"'सिर्फ सूअर का पानी पर्याप्त नहीं है। आपको इसे घास देनी चाहिए। बेहतर होगा कि आप कुछ केक खरीदकर उसे पानी में भिगो दें।"
इन निर्देशों के बाद, मैंने अनुम्मा को बकरी को खिलाने के लिए कुछ और फलों के छिलके और एक छोटा फल दिया। अनुम्मा ने मेरी आँखों के सामने ही बड़े प्यार से उसे बकरी को खिला दिया। लेकिन मुझे लगा कि महिलाओं ने बहुत बड़ी गलती कर दी है। अधिकारी महिलाएं हैं। मैं इससे सहमत हूँ। लेकिन गर्भावस्था के मामले में महिलाओं ने बहुत बड़ी गलती की है!
मैं बहुत खुश थी। आखिर मेरे सामने खड़ी बकरी गर्भवती नहीं थी। उसका पेट तो पहले से ही भरा हुआ था!
बकरी चंपा के पेड़ के नीचे गिरे चंपा को खा रही है... और मेरी माँ भी उनके बीच है। मेरी माँ चंपा को चुन-चुनकर खा रही है। बड़े- बड़े लाल ओस की बूंदों की तरह, हरियाली के बीच काँटे की तरह, चंपा बिखरे पड़े हैं। ठीक मेरे सामने, आँगन के बगल में, मेरे खून से सने हाथ हैं!
मैं इसी तरह बैठे-बैठे आ रहा हूँ। पथुम्मा!
ये तो कमाल है। झुंड में एक बकरी है। खदीजा भी है। लेकिन पथुम्मा के साथ आई बकरी गर्भवती है!

मैंने अनुम्मा से पूछा:
‘यह भेड़ किसकी है?’
अनुम्मा ने कहा:
‘यह मेरा है!’
यही मैंने तुम्हें दिया था।
मेरी माँ ने कहा कि पथुम्मा ने इसे अनुम्मा को दिया था। 'पथुम्माधा बकरी की सबसे बड़ी बेटी।'
तो अनुम्मा के पास भी एक बकरी है!
यह मेरे ठीक बगल में रहती है। फिर भी, मुझे पता नहीं था। मैं दोनों में फर्क नहीं कर पा रही थी। दोनों का रंग एक जैसा भूरा था। फिर जब मैंने गौर से देखा, तो मुझे पता चला कि पथुम्मा की बकरी की आँखों के चारों ओर एक काला धब्बा था। मेरे आते ही बकरी घर के अंदर भाग गई। मैंने पथुम्मा से पूछा:
‘क्या हुआ, पथुम्मा? तुम और बकरी यहाँ कब से हो?’
पथुम्मा ने मामला स्पष्ट किया। कोचुन्नी उसके लिए (रात के लिए) जो घास खरीदती है, वह पर्याप्त नहीं है। क्या वह गर्भवती नहीं है?
इसलिए, वह कुछ खेतों में गई और दूसरों से पहले बकरियों के लिए घास तोड़ लाई। पथुम्मा वहाँ गई और नथुनों और अपनी बहन से भिड़ गई। उन्होंने पथुम्मा की बकरियों के लिए जो दलिया रखा था, उसमें पानी कम था!
इसे लो और बकरी को दे दो!
"तो, आप लोग एक नज़र क्यों नहीं डाल लेते?"
मुझे बिल्लियों की लड़ाई सुनने की बहुत इच्छा थी। मुझे न तो बिल्लियों की लड़ाई सुनाई दी और न ही चाचियों की। मुझे सिर्फ

अपनी माँ की आवाज़ सुनाई देती है। वो सबको सज़ा देंगी। तभी मुझे अपनी माँ की आवाज़ सुनाई दी:
"मैंने अपनी बकरी को दलिया के लिए थोड़ा सा पानी दिया था। हमने थोड़ा सा पी लिया। बाकी हमने रख लिया।"
मैंने किसी को भी यह राज़ नहीं बताया कि अनुम्मा की बकरी ने मेरे दिए हुए फल के छिलके खा लिए!
बस बहुत हो गया। अब आपको कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है।
यह पथुम्मा की शिकायत है।
"मेरी मां भी मुझे पसंद नहीं करती।"
'अरे,'
उम्म ने कहा:
"आलू खाने के बाद थोड़ा सा कंज़ो पी लेना। हमने भी थोड़ा सा पिया था। मैंने सारा कंज़ो तुम्हारी बकरी के लिए छोड़ दिया!"
आपने कहा कि आप ये आलू खाना चाहते हैं और दलिया पीना चाहते हैं। आप आलू कब खाते हैं?
जब आपको पता चलता है तभी आपको इस दयनीय रहस्य का एहसास होता है। उम्म, अनुम्मा, ऐशोम्मा, कुंजनुम्मा जैसी कई महिलाएं ठीक से चावल नहीं खातीं। इसका मतलब है कि उन्हें चावल मिलता ही नहीं। केवल पुरुष और बच्चे ही चावल खाते हैं। बाकी सब आलू खाकर गुजारा करते हैं। दिन में लगभग ग्यारह बजे, वे सूखे आलू को पीसकर पाउडर बनाते हैं, उसमें नारियल का दूध और नमक मिलाते हैं, उबालते हैं और खाते हैं। एक कप चाय (जो सुलेमान आमतौर पर उन्हें देता है) गर्म पानी में मिलाकर बिना चीनी या दूध के पीते हैं। फिर काम शुरू। सबको काम करना पड़ता है। पुरुष खाने के समय आते हैं। कष्ट तो महिलाओं को ही सहना पड़ता है। यह केवल मेरे घर की बात नहीं

है। यह अनुभव अधिकांश मध्यमवर्गीय घरों में होता है। महिलाएं बहुत बड़ा योगदान देती हैं;
पुरुषों को यह बात क्यों नहीं पता?
अब्दुल खादर की मां ने अपनी छोटी बहन की आवाज सुनी।
"पिताजी, कृपया हमें मत भूलिएगा, बकरी पेरुम्बा। हमें जुबैदा को थोड़ा दूध पिलाना है।"
हनीफा की मां, ऐशोमा ने गंभीरता से पूछा।
‘अगर मैं अपने रशीद को दूध दूं, तो क्या उसे उल्टी हो जाएगी?’ सुलेमान की भाभी अनुम्मा लेशम ने व्यंग्यात्मक ढंग से कहा: "सैद मुहम्मद दूध पीने से और मोटा नहीं होगा।"
आपने कहा कि अनुम्मा स्कूल गई है। वह काफी पढ़ी-लिखी है। जबकि पथुम्मा लड़की है, उसकी शिक्षा बहुत कम है। इस पर पथुम्मा ने गुस्से से कहा:
"बस करो, बस करो, तुम्हारी ये पुरानी, पुरानी त्वचा।"
कुछ देर बाद, जब मैं धीरे से कमरे में दाखिल हुआ, तो मैंने पथुम्मा की बकरी को देखा, जिसके मुंह में मेरे डिब्बे पर रखे दो केले थे। यह पथुम्मा की बकरी थी!
बकरी पूरब की ओर वाले दरवाजे से अंदर घुस गई। अनुम्मा दरवाजा बंद करना भूल गई थी। मैंने चिल्लाया।
‘माँ, पिताजी, भागो!’
आपकी बकरी केले खा रही है!
अनुम्मा तेज़ आवाज़ में दौड़ती हुई आई। अनुम्मा खुश थी. उसने कहा:
"यह एक लंबी जबड़े वाली बकरी है।"
‘चलो चलें, इक्काका!’
पथुम्मा ने बीमार चेहरे के साथ मुझे दिलासा देते हुए कहा:

मैं तुम्हारे लिए दो खरीदूंगा। इसकी गर्माहट की वजह से। अनुम्मा ने कहा:
‘तुम जो भी खाओगे, तुम्हें भूख नहीं लगेगी। मेरी बकरी घास खा जाएगी!’
क्या पथुम्माया इसे सहन कर पाएगी?
पथुम्मा ने कहा:
बस करो, बस करो। अपनी बकरी के लिए घास का एक टुकड़ा छोड़ दो। मैंने कहा था:
"कोई बात नहीं, आपको सभी बच्चों को भेड़ का दूध देना चाहिए।" 'आप कितना भुगतान करेंगे?'
"चाहे कुछ भी हो जाए, हमें अपने घर का दरवाजा ठीक कराने के लिए दूध बेचना ही पड़ेगा!"
क्या करें?
पथुम्मा, कोचुन्नी और खदीजा जिस घर में रहती हैं, उसका दरवाजा रस्सी से बंधा हुआ है और उसे मरम्मत की जरूरत है। तो क्या हुआ? मुझे घर छोड़ने से पहले घर की सभी महिलाओं को कम से कम एक बार भरपेट भोजन जरूर कराना होगा!
इसके लिए पैसा कहां से आएगा?
मेरे पास एक पैसा भी नहीं बचा। मैंने अपना सब कुछ सबको दे दिया। सबको देने की बात कहना शिष्टाचार है। सच कहूँ तो, सबने ले लिया। और फिर मैं ऐसे ही बैठा रह गया। जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ तो मुझे गुस्सा आता है। मैंने दिया क्या?
मैंने उन्हें पैसे दिए। मैंने उनके लिए बर्तन खरीदे। मैंने उनके लिए गिलास खरीदे। मैंने लड़कियों के सिर पर पहनाने के लिए टोपियाँ खरीदीं। इन सबके बावजूद, सब ऐसे बर्ताव करते हैं जैसे मैंने उन्हें कुछ दिया ही न हो। शोर इतना ज़्यादा है कि अगर कोई

हिलेगा भी तो मैं उसे पीट दूँगा। वे अबू को गालियाँ देंगे, हनीफ़ा को गालियाँ देंगे, अब्दुलक़दर को गालियाँ देंगे, हनीफ़ा, अब्दुलक़दर और सुलेमान के बच्चों को पीटेंगे। मैं अपनी चाची की बेटी खदीजा को नहीं पीटता। क्योंकि मैं उसे उजाले में नहीं देखता। मैं उन सभी लड़कियों को पीटूँगा जो अपनी मनमानी करती हैं। खासकर मेरे भाइयों की पत्नियों को। जब मैं इतनी ऊँची आवाज़ में बोलता हूँ, तो घर में सन्नाटा छा जाता है!
मैं ऐसे बैठा हूँ। पथुमा की बकरी आँगन में खड़ी है। वह सूखी घास चर रही है। उसे खाने दो और उसका पेट भरने दो। जब वह बच्चा देगी, तो खूब दूध होगा। अच्छा है कि सुबैदा, रशीद, खदीजा, अबी, सैदु मुहम्मद और पथुकुट्टी थोड़ा दूध पीते हैं। लेकिन, मेरे घर में कोई दूध या घी का इस्तेमाल नहीं करता। मैं घी खाता हूँ। मैं दूध पीता हूँ, मैं एक अपवाद हूँ। घी और दूध की बात करते-करते एक घटना याद आ गई। यह लगभग दस, पच्चीस, तीस साल पहले की बात है। उस समय, केवल अब्दुलकादर, हनीफा, पथुमा और मैं ही बच्चे थे! मुझे शक है कि अनुम्मा ने अनुम्मा को जन्म दिया था या नहीं। अबू तो थे ही नहीं। घर में गोबर है। दूध और दही आसानी से मिल जाते हैं। पिताजी का लकड़ी के व्यापार में ठगी का धंधा था। उस समय पहाड़ों से पेड़ काटकर नावों में रखे जाते थे, फिर उन्हें नदियों के रास्ते गठ्ठों में लादकर स्थानीय लोगों से कटवाकर कोच्चि ले जाया जाता था, जहाँ उन्हें बड़ी मात्रा में बेचा जाता था। उन दिनों घर में हमेशा घी रहता था। वह घी पीले रंग का होता था, जैसे रेत के बड़े-बड़े दाने हों। एक बड़ा सा कांच का घड़ा घी से भरा रहता था। वह घी उस गाय का था जो कुदयथुर पहाड़ियों में घास चरकर पली-बढ़ी थी!

□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□!

□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□-□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □ □□□□ □□;

□□□-□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□...

मेरी माँ ने भी मुझे पीटा है। उन्होंने मुझे चाकू से मारा और रसोई से बाहर निकाल दिया। मुझे कुछ खाना है। मैं रसोई में जाकर कुछ उठाऊंगा और खा लूंगा। अब्दुल कादिर ने भी खाया है। लेकिन कोई मेरी बात पर यकीन नहीं करेगा। अगर वो भी खाए, तो भी सब मुझे ही मारते हैं। मार तो मुझे ही पड़ती है। एक दिन, दोपहर के खाने और शाम के बीच का शुभ समय था। मुझे हल्की भूख लगने लगी। कुछ हल्का खाने का यही सही समय था। मैं रसोई में गया। वहाँ मेरी माँ थीं। वहाँ एक नौकरानी भी थी। नौकरानी का नाम नंगेली है। ये नंगेली भी मुझे पीटती हैं। उन्होंने मुझे पीटा है। मैं एक जवान लड़का हूँ। एक नौकरानी को जवान लड़के को नहीं पीटना चाहिए। वहाँ ये नियम लागू नहीं होता। अगर मैं अपनी माँ को बताऊँ:
बहुत अच्छा!
आप अच्छे इंसान नहीं हैं, है ना?
मैं बस इतना ही कह सकता हूँ। अगर इतना काफी नहीं था, तो मैंने इस चूहे का स्तन भी चूस लिया है!
(मैंने कई खूबसूरत महिलाओं के स्तन चूसे हैं। यह बात मेरी माँ और अन्य लोगों ने कही है। क्या मैं हर उस महिला के स्तन चूसता हूँ जिसे मैं देखता हूँ? क्या यह मेरी गलती है? हे भगवान!) तो मैंने इसके बारे में सोचा। मैं एक कच्चा आम तोड़कर खा सकता था। लेकिन उसे पाने का भी कोई तरीका नहीं था। चूहा कहता;
मुझे काफी देर से भूख लग रही है। चलो अब खाना खाते हैं। या फिर तुम्हें कुछ हल्का-फुल्का चाहिए?
हम्म!
जैसे ही मैं चुपचाप घर में दाखिल हुआ, मुझे एक नई बात पता चली। घी और चीनी एक-दूसरे के बहुत करीब रखे थे;
इन दोनों को मिला दें तो कुछ संभावनाएं बनती हैं। हम्म!

□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□;

□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□, □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□-□□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□, □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□, □□ □□ □□□□ □□□□□, □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□-□□□□, □□□□ □□□□-□□□□, □□ □□□□ □□□ □□□□!

□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□, □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□?

□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□:

□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□?

□□□□□ □□□□ □□ □□□□

'□□□□'

‘□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□, □□□ □□□□ □□□!’

□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□, □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□

‘□□, □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□?’

"□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□?"

□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□

"मैं इसे ले जाऊँगा।"
मैंने कहा था:
"ये आप ले लो।"
इस बात पर सहमत होकर हम बाहर चले गए। हमने कटोरा वापस वहीं रख दिया जहाँ वह था और ऐसे चलने लगे जैसे कुछ हुआ ही न हो। घटना भुला दी गई और उसके बाद मैंने कभी घी या चीनी नहीं खाई, जो बिल्कुल सच है। मुझे घी के फायदों के बारे में पता नहीं था। लेकिन जब मेरे पास घी नहीं था, तो मैंने घी और चीनी ही खा ली। घर में खाने-पीने की बहुत सी चीजें हैं। पके हुए कटहल और आम हैं। अलमारी में तले हुए मांस का एक जार रखा है। मैं इधर-उधर घूमते हुए इन सब चीजों पर ध्यान दे रही हूँ। दिन ऐसे ही बीतते चले गए। मैं खुद को कोसने लगी हूँ। अब्दुल कादर ज़रूर बीमार होगा! पिटाई का कारण यह है कि कोई घी नापकर खा रहा है!
जार के बाहर और बिस्तर पर निशान हैं। मैंने उसे पीटा है। अब्दुलकादर की हालत बहुत खराब है। उसका शरीर बाज की तरह फूल रहा है। वह हर समय पानी पीता रहता है। वह कुछ खा नहीं सकता।
"पुल्ला के साथ कुछ गड़बड़ है।"
मेरी माँ और मेरी बहन ने बताया। मेरे पिता कनियान को बुलाने गए। कनियान उस समय के महान चिकित्सक थे। यह घटना आयुर्वेद से संबंधित थी। चलिए देखते हैं, क्या कहते हैं?
फिर, उम्म अब्दुलकादर को उठाया गया और उनकी गोद में बिठा दिया गया, जो उन्हें उदास भाव से गले लगा रही थीं।
‘रब्बी!
मेरे सोने का क्या हुआ?
नांगेली ने कहा:
‘ऊप्स’

मेरे सोने के महल को कुछ नहीं होगा।
अब्दुल कादिर वहाँ बैठा है, बीमार, मोटा और घमंडी, बिना किसी क्रोध के। मैंने उसके चेहरे की ओर देखा। अरे झूठे, इतना घी खाकर भी मोटे होकर बैठे हो?
उसने मुंह भी बनाया। उसमें हास्यबोध नाम की कोई चीज नहीं थी। वह उसे फंसाने आया था। उसके बाद एक और डॉक्टर, वेलन, आया। उसके बाद मुसलियारू आया। दिन ऐसे ही बीतते गए। घी कम होता जा रहा था। हमेशा की तरह, मेरी पिटाई हुई। अब्दुलकादर बेहोशी की हालत में आया। वह कोई दवा नहीं लेगा। वह बिना किसी की नजरों में आए मर जाएगा!
कभी-कभी वो थोड़े से चावल खा लेता है। सब लोग उसे लाड़-प्यार करते हैं क्योंकि वो बीमार है। उसे बिल्कुल भी थकान नहीं होती। बस यही हाल है। है ना कमाल की बात!
मुझे पता है कि वह हर रोज घी और चीनी खाता है। लेकिन वह किसे बताएगा?
अगर मैं तुम्हें बताऊँ तो कोई मेरी बात पर विश्वास नहीं करेगा। एक दिन मैंने उसे तला हुआ मांस दिया। मैंने चुपके से अलमारी से निकाला। उसने मांस लिया और खा लिया। मैंने कहा।
‘ओह, तुम मेरे ही अंश हो!’
मुझे सच बताओ। तुम इस बदमाश और धूर्त बनकर यहाँ क्यों आए? तुमने तो सब कुछ खा लिया है।
"चलो, चले जाओ। तुमने नहीं कहा था कि तुम बीमार हो?"
हम उसकी चोरी को जनता के ध्यान में कैसे ला सकते हैं?
अगर मैं आपको बताऊं तो कौन मेरी बात पर विश्वास करेगा?
लेकिन मैंने अपनी माँ को बताया। मैंने अपने चूहे को भी बताया। ठीक वैसे ही जैसे घी और चीनी खाने वाले बड़े चोर अब्दुल कादिर

'तुम बेवकूफ!
मैंने तुम्हारे लिए कितने प्रहार सहे!
पिताजी, क्या आपको याद है कि मैं यहाँ हूँ? मूर्ख!
मैं ये सब सोचकर मन ही मन हंस रही थी। तभी बुढ़िया आई। बड़ी बहन ने पूछा:
तुम वहां बैठकर क्यों हंस रहे हो?
मैंने कहा था।
"मुझे एक पुरानी कहानी याद करके हंसी आ गई। अब्दुल कादिर एक अच्छा रसोइया हुआ करता था जो घी और चीनी खाता था।"
अरे—क्या तुम यह बात भूल गए हो?
'नहीं।'
‘मुझे अपने पाँच रुपये दे दो। पथुम्मा की बकरी ने दलिया का बर्तन तोड़ दिया है!’
"बहुत बढ़िया, मैं इसे बड़ा बनाऊंगा।"
अनुम्मा आकर बोली:
"यह मेरी बकरी नहीं है। यह वही बकरी है।"
पथुम्मा ने कहा:
"बस करो, बस करो। क्या तुम्हें नहीं दिख रहा कि तुम्हें बैठना होगा, वाल्या?"
"तुम शांत हो जाओ और जियो। तुम्हें कैसे पता चला कि वो मेरी बकरी थी, बताओ!"
अनुम्मा ने कहा:
"मैं तुमसे कह रहा हूँ, पता लगाओ, बड़े बाज़। अगर यह बकरी आई, तो मैं तुरंत अपनी बकरी को अंदर ले जाकर बाँध दूँगा। यह बकरी मेरी बकरी का चारा खा जाएगी। यह हमारा कप्पापुट्टू खा जाएगी। यह

हमारा कटुंचा खा जाएगी। बच्चों को कुछ खाने को नहीं मिलेगा। यह बकरी सब कुछ खा जाएगी।"
पथुम्मा ने अपमानित भाव से कहा।
बस करो, बस करो, निकम्मे बकरे!
आपको बकरी कहाँ से मिली?
अनुम्मा ने कहा:
"अतिथि ने मुझे यह दिया।"
'अरे,'
पथुम्मा ने कहा:
"इस दुनिया में कितने लोगों को गरीबों को सौंप देना चाहिए?"
आप यह कहते हैं!
अनुम्मा ने कहा:
अरे, कितनी ही बहनों को उनकी बड़ी बहनें हाथी उपहार में देती हैं!
क्या वह बकरी कीड़े जैसी नहीं दिखती?
पथुम्मा हैरान थी. पथुम्मा ने कहा.
'बहुत बढ़िया, आपका समय अच्छा बीते!'
क्या मुझे आपको अकेला छोड़ देना चाहिए?
"अरे, पैडाचोन, कुछ भी झूठ मत बोलो। मैं तुम्हें अपनी दो भेड़ों में से एक, अपना सुनहरा बछड़ा दे दूंगा। तुम अकेले हो!" पथुम्मा मेरे पास आई और धीरे से पूछा।
क्या आप खदीजा की बालियों के बारे में भूल गए?
मैंने भी धीरे-धीरे कहा।
'नहीं!'
पथुम्मा ने धीरे-धीरे सलाह दी।
किसी को पता नहीं चलना चाहिए।

तभी अनुम्मा मेरे पास आई और मुझसे पूछा:
"वाल्या इक्काका, तुमने मुझे यह रहस्य क्यों बताया?"
पथुमा दौड़ता हुआ आया और बोला।
"तुमने कुछ नहीं कहा।"
'नहीं'
अनुम्मा ने कहा:
"मैं समझ गया। हममें से किसी को पता चले बिना, हमने इथाता को कुछ देने के लिए कहा है। वाल्या इक्काका ने क्या देने पर सहमति जताई?"
फिर दूसरी तरफ से दो शरीर आकर मिले। अब्दुल कादिर का हार अनुम्मा का था और हनीफा का हार ऐशोमा का था।
"चाहे सोना हो या चांदी, हमें खुश होना चाहिए।"
मुझे नहीं पता कि उनमें ये शैतानी भावना कैसे पैदा हो गई। महिलाओं में भी इस तरह की भावनाएं हो सकती हैं!
लेकिन जैसे ही उसने यह सुना, पथुम्मा को फिर से चक्कर आने लगे। पथुम्मा ने कहा।
अरे खदीजा, हमारी बकरी को बुलाओ, हम जा रहे हैं। यहाँ तो बहुत सारे बेवकूफ हैं!
"मेरी सास, तुम इस घर को छीनकर इसमें छुरा घोंप रही हो।" अनुम्मा समझ गई। वह खुश थी। उसने कहा:
‘रब्बी!
इतना ही!
सोना हे!
वाल्या ने इयाकाका को क्या देने की बात कही?
मैंने कहा था। मैंने कहा था, मैंने घोषणा की थी। क्या सबको पता है!

खदीजा के पास दो बालियां हैं। मैंने उससे कहा है कि मैं उसके लिए बना दूंगी। मैं सोच रही हूं कि उसे दे दूं। क्या किसी को कोई आपत्ति है?
अनुम्मा ने कहा:
"बड़े भाई, मुझे भी दो बालियां चाहिए।"
"बस करो तुम्हारी बकवास। बस करो। क्या तुमने नहीं कहा था कि जब तुम अपने नए घर में जाओगे, तो वालिया तुम्हें सारे बर्तन खरीदकर देगी?"
क्या वाल्या ने मेरे लिए ये सब खरीदने पर सहमति नहीं दी थी? मुझे ये सब पहले से ही पता था!
सुनो, अंशाथी।
पथुम्मा को यह रहस्य कैसे पता चला?
क्या यह सब महिलाओं के बारे में नहीं है? मूर्ख, अज्ञानी पुरुषों को महिलाओं की आंतरिक भावनाओं के बारे में क्या पता? डंकू!
डंकू!

चार
जब मैंने शोर सुना और रसोई में गई, तो मेरी माँ के नेतृत्व में सभी महिलाएँ वहाँ आश्चर्य से खड़ी थीं। बीच में पथुम्मा की बकरी थी, और उसका सिर नहीं था!
कहने का तात्पर्य यह है कि किसी तरह लालच के कारण उसका सिर एक बर्तन में फंस गया। फिर, उसे उठा न पाने के कारण वह बर्तन के साथ खड़ा हो गया। जब वह कहता है कि वह खड़ा है, तो सभी महिलाएं उसे पकड़े हुए होती हैं। वह बर्तन को कैसे उठाएगा?
यही मुख्य विचार है। मैंने पथुमा की बकरी द्वारा दिखाई गई क्रूरता देखी!
पथुम्मा को लगा जैसे उसने अपना सारा हास्यबोध खो दिया हो। "इक्का, ऐसा नहीं करना चाहिए था।"
"ऐसा कहा जाता है। यह रिश्ते में बुरी बात हो सकती है!"
मैंने एक छोटे पत्थर से बर्तन तोड़ दिया और बकरी को मुक्त कर दिया।
हमें यह पहले ही पता होना चाहिए था। एरो!
उम्मा ने कहा।
'एक किताब!
आपने एक अच्छी कला को नष्ट कर दिया है।
मैं अपमानित होकर बरामदे में आ गया था। तभी अब्दुलखादर की सबसे बड़ी बेटी गोद में एक बच्चा लिए दौड़ती हुई आई।
‘वूतप्पा’
उसने मुझे फोन किया। उसने कहा, "उसके मुंह के ऊपरी हिस्से में कुछ दांत गायब हैं।"
‘अबी ने मुझे मारा!’
एबी दौड़ता हुआ आया। उसने कहा।

"थाथा, मुझे माफ़ करना।" उसने यह चेतावनी देते हुए संदेश भेजा कि अब और लड़ाई न करें। तभी सैदु मुहम्मद एक मामला लेकर आता है। ‘माँ…’
उसने फोन।
‘घर की नौकरानी लैला को बुलाओ!’
भयानक!
एक आदमी ऊपर चढ़ता है और एक महिला उसे फिर से उल्लादथिप्परु कहकर पुकारती है!
‘लैला’
मैंने फोन किया। लैला आई। उसकी आँखों में आँसू भरे हुए थे। आते ही उसने कहा:
उस बूढ़े आदमी के साथ मत जाओ।
'नहीं!
"छड़ी मत लाना।"
सैदु मुहम्मद लोहे की बाघ की पूंछ लेकर आए। उन्होंने उसे लैला को दिखाया, जिससे वह डर गई और उसे चेतावनी दी कि वह अब किसी को भी "उल्लादथिप्परु" कहकर न पुकारे। कई मुर्गियां जोर-जोर से रोती हुई भाग गईं और मेरे ऊपर गिर पड़ीं, जब मैं कुर्सी पर लेटा हुआ था। और पथुम्मा की बकरी मेरे पीछे दौड़ रही थी!
और कुछ खास नहीं। पथुम्मा की बकरी ने एक और छोटा सा बर्तन तोड़ दिया!
दो अनुम्मा और एक ऐशोम्मा की चीखें। माँ की डांट। बच्चों की हँसी। पथुम्मा के दुख भरे शब्द। पथुम्मा की बकरी पेड़ के नीचे ऐसे खड़ी थी मानो उसे कुछ पता ही न हो। चार बजे मैं टहलने निकला। मैं बाजार गया। तभी मैंने एक अजीब चीज़ देखी। अबी और पथुम्मा का

बच्चा भीड़ के बीच में चंपांगा से भरी एक छोटी टोकरी लेकर बैठे थे;
जैसे हजारों हाथियों के बीच दो नन्हे चूहे। दोनों ही बिक रहे हैं। और बेचने वाला खुद अबी है।
‘एक लंबी छड़ी एक हाथ जितनी लंबी होती है। एक लंबी छड़ी दो हाथों जितनी लंबी होती है, और एक लंबी छड़ी दो हाथों जितनी लंबी होती है।’
यानी, पाँच एक कलाना है। आर्याना ग्यारह है। अबी के हाथ में पाँच उंगलियाँ हैं। मैंने यह लेन-देन देखा। उन्होंने इसे छह में बेचा। मैंने अपने हाथ में मौजूद छह खरीद लिए। उस रात, मैंने उम्मा को आठ दिए। उम्मा खुश थीं, और रात के खाने के बाद सोने से पहले, मैंने वहाँ मौजूद पिताओं से बच्चों के पालन-पोषण के तरीके के बारे में बात की। हमने माताओं को उचित पोषण देने की आवश्यकता के बारे में बात की। हमने बच्चों को स्वच्छता के साथ पालने के तरीके के बारे में बात की। हमने घर और आसपास को साफ रखने की आवश्यकता के बारे में बात की। हनीफा ने हर बात का जवाब दिया। मैं सेना में भर्ती होऊंगा।
अबू ने कहा:
"'वल्ल्या इक्काका, ज़रा एक नज़र डालिए, हमें कुछ पैसे खर्च करने होंगे। अब हमें घर की छत बदलवानी है और उसे ठीक करवाना है। आंगन तो ठीक है क्योंकि वल्ल्या इक्काका आए थे।"
मैंने मरम्मत का खर्च उठाया और पत्थर का निर्माण करवाया।
'सब कुछ फेंक दो।'
अब्दुलकादर ने कहा:
"यहां सब ठीक रहेगा। चलो, पथुम्मा की बकरी को चारा खिलाते हैं।" कुछ दिन बीत गए। धत्!

पथुम्मा की बकरी का बच्चा पैदा हो गया!
ऐसा लग रहा है जैसे दोपहर हो गई हो, शुभ समय। हल्की बूंदा-बांदी हो रही है। खबर सुनते ही मैं डर गई। कई दुर्घटनाएं हो सकती थीं। प्रसव के दौरान हुई मौतों की कई घटनाएं याद आ गईं। मुझे बहुत दुख हुआ। मैंने अपनी माँ को सौ बार फोन किया।
"माँ, बिल्कुल इसके बगल में रहो!"
मैंने गिड़गिड़ाया। माँ ने कुछ नहीं कहा। मैं दिन-रात घबराती जा रही थी। आखिर क्या होने वाला था?
आप वहां जाकर एक बार देख क्यों नहीं लेते?
लेकिन मुझमें ऐसा करने की हिम्मत नहीं थी। फिर भी मैंने झाँक कर देखा। मुझे सिर्फ़ बकरी ही नहीं दिखी। मुझे भीड़ दिखी। उम्मा, दो बहनें, ऐशोम्मा, पथुकुट्टी, अबी, आरिफा, सैदु मुहम्मद, रशीद और सुबैदा। इनके अलावा, मोहल्ले की लड़कियाँ भी थीं। ऐसा लग रहा था जैसे कोई बड़ा उत्सव हो। सब लोग खुश थे। किसी को ज़रा भी चिंता क्यों नहीं हुई?
मैंने अपनी मां को फोन किया और उनसे पूछा।
क्या आपने किसी को पथुमा भेजा था?
पथुम्मा ही वह महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं जिन्हें वहां होना चाहिए। लेकिन किसी ने भी पथुम्मा के पास किसी को नहीं भेजा! मेरी माँ और अन्य महिलाओं के लिए एक उपहार
‘शू’
ठीक ऐसे ही। तभी उन्हें एहसास हुआ कि यह कोई बड़ी बात नहीं थी। वे सभी अलग-अलग पैदा हुए थे। अगर यह उम्म थी, तो कई थीं। वे उम्म के बच्चों, पथुम और अनुम के साथ पैदा हुए थे;
उम्मा के पुत्रों, अनुम और ऐशोम की पत्नियों ने ही जन्म दिया था। इस जन्म के बारे में सुनकर उन्हें कोई हैरानी नहीं हुई!

□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□,
'□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□?'
□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□!
□□□□□, □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□?
□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□-□□□ □□□□□ □□□□-□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□
□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□
□□□□□□□□□□ □□ □□□□
‘□□□ □□□□!’
□□□□□ □□□ □□□□□
□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□
□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□
□□□□ □□ □□□:
□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□!
□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□
□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□?
□□□□□ □□□ □□ □□□□□
'□□□□!
□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□?
□□□ □□ □□□□ □□ □□□□
'□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□'
’
□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□?

मैंने पूछा। पथुकुट्टी ने कहा।
"मैंने तुम्हें तुम्हारे देखने से पहले ही देख लिया था।"
वाह, ये तो हो ही गया!
कोई समस्या नहीं थी। मुझे राहत मिली। मैं जाकर देखने लगा। माँ और बच्चा नरम कंबल में लिपटे हुए थे। बच्चा एक सफेद स्कंक था। वह वहाँ लेटा हुआ था, निश्चिंत होकर विशाल ब्रह्मांड को निहार रहा था। मेरा मन किया कि माँ को गर्म पानी से नहला दूँ या उसे दूध पिला दूँ। लेकिन दूध पिलाने का क्या?
गर्म पानी तो है। अगर मैं कुछ कहती तो लड़कियाँ इसे मज़ाक समझतीं। लेकिन मैंने अपनी माँ से पूछ लिया।
‘क्या आपने इसके बदले कुछ दिया?’
कुछ भी नहीं दिया गया!
कुछ देर बाद वे मुझे थेराका का एक विशेष पत्ता या कुछ और देते हैं। यही रिवाज है। मैंने कहा:
"उस बच्चे को चटाई पर लिटा दो। क्या वह ठंडी, नंगी जमीन पर नहीं लेटा है?"
उन्होंने उसे चटाई या किसी और चीज़ पर लिटा दिया। मैं दौड़कर एक बड़ा केला लाया और उसे बकरी माँ को दे दिया। उसने उसे कृतज्ञतापूर्वक खा लिया।
'यह क्या है?'
सभी महिलाएं मेरी ओर ऐसे देख रही थीं मानो कह रही हों, "ओह, मेरी माँ!" केवल मेरी माँ बैठी रहीं और धीरे से मुस्कुराईं। शाम को पथुम, खदीजा और कोचुन्नी आईं। बकरी के जन्म की खबर सुनकर वे चुप रहीं। मैंने पूछा कि सोने का समय कब हुआ?
‘तुमने मेमने को कहाँ रखा है?’
"रसोई में।" किसी ने कहा। मैंने पूछा:

‘एक टोकरी और एक छड़ी के साथ।’
यह तो लकड़ियों से भरी टोकरी की तरह है!
'अनुम्मा, क्या इससे तुम्हारा दम नहीं घुटेगा?'
क्या आप किसी के बच्चे को इस तरह की टोकरी में ढक देंगे?
मैंने पूछ लिया।
तो फिर आपको इसकी जरूरत किसलिए है?
मुझे पता नहीं था कि कौन जवाब दे रहा है। मैं चुप रही। इन लड़कियों के बीच कुछ भी बोलना मेरे लिए शर्म की बात है। जब मैं आसपास नहीं होती, तो वे मुझ पर हंसती हैं। सबसे पहले तो, मैं शादीशुदा नहीं हूँ। इसलिए बेहतर यही है कि मैं उन चीजों के बारे में बात न करूँ जिनके बारे में मुझे जानकारी नहीं है। मैंने कंबल ओढ़कर आँखें बंद कर लीं। अगले दिन सुबह जल्दी उठकर, नहाने- धोने और चाय पीने के बाद, मैंने अपनी माँ से पूछा।
"क्या आपने इसके बदले कुछ दिया?"
यदि आप ऐसा कहते हैं, तो अनुम्मा जानती है। यहां तक कि पथुम्मा की बकरी भी.
मुझे घास दो
अनुम्मा ने कहा। यह अनुम्मा की बकरी के लिए घास थी। पथुम्मा की बकरी और उसका बच्चा हल के नीचे आँगन में खड़े थे। माँ बच्चे को इसलिए लाई होगी ताकि उसे दिखा सके कि उनका खाना कहाँ से आता है। बच्चा बार-बार गिर रहा था। उसके लिए चलना मुश्किल हो रहा था। मैंने सोचा कि मुझे उसे उठाकर नीचे रख देना चाहिए। तभी हनीफ़ा मेरे सामने आ गया। वह एक बदमाश जैसा लग रहा था। उसने सिर्फ़ एक पगड़ी पहन रखी थी। उसने कहा:
"मुझे दस रुपये चाहिए, बड़े भाई। अगर आपने कोच्चि के जंगल के बारे में पूछा तो मेरी पिटाई हो जाएगी!"

अबू भी इसमें शामिल हो जाएगा और मेरा मजाक उड़ाएगा। देखो, अगर मेरे पास पैसे होते, तो क्या तुम कमीज नहीं पहनते?
"मुझे याद है कि तुमने कुछ दिन पहले मेरी एक जैकेट और एक कमीज ले ली थी, है ना?"
‘मैं? कोई बात नहीं, मैं सेना में भर्ती हो जाऊंगा। अगर यहाँ किसी को मेरी ज़रूरत नहीं है, तो सरकार को मेरी ज़रूरत है। बस इतना ही काफी है। वो बड़ा आदमी, वो जैकेट और वो कमीज़—’
मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा:
“एक मिनट रुको। मैंने तुम्हें ये नहीं दिए। जब तुम कपड़े धोने के लिए लाए थे, तब तुमने मुझसे बिना पूछे ये ले लिए। मेरे पास कुछ कमीज़ें और ब्लाउज़ थे। जब मेरे पास और कपड़े आए, तो मेरी माँ ने चुरा लिए। अब्दुल कादिर ने चुरा लिए। उसने तो जैसे हाथ-पैर से चुरा लिए। तुम्हारे कपड़े ऐशोम के कपड़ों जितने अच्छे नहीं हैं और अब्दुल कादिर के कपड़े अनम के कपड़ों जितने अच्छे नहीं हैं।”
हनीफा ने कहा:
"अबू ने मेरे हाथ से मेरा जैकेट और कमीज छीनकर फेंक दी। क्या तुमने मेरा रूप देखा, वाल्या?"
"क्या धागे के समान पतले अबू ने इसे तुम्हारे मोटे हाथ से छीन लिया?"
'अगर आपको कोई संदेह है, तो एबी से पूछिए, बड़े भाई, आइए, एबी!' अबी आ गया। हनीफा के पास जो कुछ भी है, उसका वही एकमात्र गवाह है। आते ही उसने कहा।
बाबा ने कहा, "मेरी बात मानो।"
यह सब खत्म होने के बाद, ऐशोम्मा अंदर आईं और रशीद को थोड़े खुले दरवाजे के बीच में अकेला छोड़ दिया। ऐशोम्मा ने कहा:

"यह कहना मजाक है कि बाप-बेटा एक ही हैं। मैंने सुना है कि आप अपने बेटे को सिखाना चाहते हैं। बड़ा, मोटा, जैकेट और कमीज डिब्बे में है, अबिदा वपाद!"
'झूठे कहीं के!
तुम बड़े चोर हो!
क्या आपको वह कहानी याद है जो आपने मुझे और अब्दुल कादिर को सुनाई थी?
हनीफा ने कहा:
मुझे इसके बारे में पता नहीं है। मेरे पास नौकरी है। मैं एक मेहनती कर्मचारी हूँ।
तो क्या आपके पास केले का बागान है?
उसने कहा:
मैं इसे वाल्या इक्काका को दे दूंगा। पंद्रह हजार रुपये ही काफी हैं। कीमत बहुत ज्यादा है!
अनुमान है कि उसने इसे इसकी दसवें हिस्से में खरीदा था। बड़ा चोर!
मैंने अपनी मां को फोन किया। जब मेरी मां आईं, तो मैंने उनसे पूछा।
"क्या उसने हनीफा के बचपन में पांच रुपये नहीं चुराए थे?"
फिर वो बॉस बन गया और उसने अपने बड़े भाइयों, मुझे और अब्दुल कादिर को धान सुखाने के लिए एक टीला खोदने को कहा। उसने खुद नहीं खोदा। वो हमें दिन में चार पहिए देता था। पाँच-आठ दिन बाद मेरे पिताजी को पता चला। उन्हें लगा कि मैंने धोखा दिया है, इसलिए मेरे पिताजी ने मेरी पिटाई की। क्या तुम्हारी माँ को ये सब याद है?
उम्मा ने कहा।

"हनीफा ने मेरे पिता से ऐसा नहीं कहा था। उस समय मेरे बटुए में दो चांदी के सिक्के पड़े थे। वह चोरी कैसे कर सकता था?"
नहीं। मुझे परवाह नहीं है। उसकी पत्नी और बच्चे ठीक रहेंगे! मुझे बताओ, मुझे सुनने दो।
मेरा मतलब यह है कि मां के पर्स से चांदी के सिक्के चुराना मेरा एक घरेलू धंधा था। मैं मां के घर जाकर सो जाता था। जब मैं देखता कि मां सो रही हैं, तो मैं उनकी गोद से पर्स उठा लेता, उसमें से चार सिक्के निकालता, उन्हें बिना उनकी जानकारी के उनकी गोद में रख देता और फिर उठ जाता। तिजोरी से चोरी!
माँ ने कहा
"हानिफा बड़ा हो गया है, फिर भी उसे शराब पीना पसंद नहीं है। जब वह शराब पीता है, तो यह लड़का मुझसे पैसे चुरा लेता है। मैंने उसे एक बार रंगे हाथों पकड़ लिया था। मैंने उसकी पिटाई की और उसने शराब पीना छोड़ दिया।"
‘बड़ा चोर!’
क्या अब्दुलखादर ने चोरी नहीं की थी?'
"उसने भी काट लिया है। तुम ही एकमात्र ऐसे हो जिसने नहीं काटा है।"
मैं अच्छा हूँ!
ओह, मेरा खूबसूरत जीवन!
‘देखो, हनीफा, देखो, अबी, देखो, लैला, देखो, राशिद!’
हनीफा ने कहा:
‘मम्मा, मेरी प्यारी माँ, मैं माँ नहीं हूँ। वरना, मैं ऐशोम और अनुम की बातें सुनकर और कोच्चिक्कड़ा बनाकर आपसे झूठ बोल रही होती। मैं बड़ी माँ हूँ और अपनी माँ के बाल काटकर पैसे कमा रही हूँ!’

मुझे अच्छी तरह याद है, महोदया। वाल्या इक्काका मुझे और मेरी माँ को कोच्चि ले जाया करते थे और हमारे लिए चाय खरीदते थे। कई बार। हम उन्हें हमेशा पैसे देते थे। वाल्या इक्काका को उस समय पैसे कहाँ से मिलते थे?
"उम्मा, मुझे बताओ!"
मैंने तुरंत विषय बदलने का फैसला किया।
"तुम मुझसे अक्सर दो, तीन, पाँच और दस चीजें खरीदते रहे हो, और तुम पर मेरा लगभग सौ रुपये बकाया है। मैं तुम्हारे सभी मित्रों, ईसाइयों, नायरों और एझवाओं को गवाह के रूप में पेश करूँगा। आठ सौ रुपये।"
‘मेरी प्यारी माँ, यह बड़ा डरपोक क्या कह रहा है?’
क्या मुझे पैसे देने होंगे?
मैंने बड़े इक्काका के लिए केले खरीदे हैं। मैंने अनानास खरीदे हैं। मैंने बिना किसी सीमा या हिसाब-किताब के बीड़ी खरीदी हैं। ओड़का, पपीता, बकरी का जिगर, बत्तख के अंडे, मछली, कटहल - इन सबका हिसाब लगाकर, अब मुझे बड़े इक्काका से चालीस रुपये मिलेंगे। उसमें से मैंने अब दस रुपये मांगे हैं।
‘तुमने ये मुझे दिए हैं। तुम अपने खेत से गिरे कच्चे केले मेरे लिए लाए हो, जिन्हें तुमने सुखाकर रंग दिया है। बाकी सब कुछ अब्दुलकादर, कोचुन्नी और सुलेमान ने पैसे देकर खरीदा और तुम्हें दिया। जब तुम यहाँ गए, तो तुम ये सब वहाँ ले गए। अब तुम इसे यहाँ ऐसे दे रहे हो जैसे तुमने इसे खरीदा हो। तुम झूठे हो।’ यह सुनकर उन्होंने तुरंत फोन किया।
‘चलो, ऐशोम्मा, थोड़ी देर सो जाओ। हम यहाँ और नहीं रुकना चाहते। हम अपने घर में बाँस पर बैठ सकते हैं। चलो!’
मैंने कहा था।

‘इंतजार मत करो। सौ रुपये का नोट बनवाकर तुम जा सकती हो। सुनो, माँ। ये तब की बात है जब उसके पास चार साइकिलें थीं। ज्यादा समय नहीं बीता है। जब मैं वापस आती थी, तो कभी-कभी उसकी साइकिल लेकर चलाती थी। अगर मैं उसे दस मिनट बाद भी वापस रख देती थी, तो वो कहता था, ‘दो घंटे हो गए!’’
संक्षेप में कहें तो, उसे वेतन मिलना चाहिए। आखिर वह हर समय करता क्या है?
उसके दोस्त, नयन, ईसाई, एझवा, एर्नाकुलम में मेरे पास आते थे। उसने उन्हें झूठी गवाही देना सिखाया था, ठीक वैसे ही जैसे उसने अबी को सिखाया था। आते ही वे हनीफा की दुर्दशा के बारे में बात करते। बेचारा, हनीफा बहुत कष्ट झेल रहा है। और इसी तरह की बातें। तब वह अपना कर्ज़ माँगता। आखिर में वह पाँच रुपये माँगता। वह बच्चों के लिए मेरी तरफ से कुछ खरीदता। मैं उसे तीन रुपये देता। वह उसमें से एक नींबू की कैंडी खरीदकर बच्चों को दे देता। उस समय मैंने तीन सौ पच्चीस रुपये में एक साइकिल खरीदी थी। किसी तरह उसे इसके बारे में पता चल गया। एक दिन वह अपने दोस्तों के साथ आया। उसके साथ चार लोग थे। वे तीन साइकिलों पर आए थे। उसके आते ही वहाँ धरना-प्रदर्शन चल रहा था। हनीफा को मेरी साइकिल चाहिए थी। अगर ऐसा है, तो उसकी सारी साइकिलें किराए पर दे देनी चाहिए। मैंने कहा;
मुझे एक साइकिल चाहिए। तभी उसके एक दोस्त ने कहा, "हनीफा कीमत चुकाएगी।" हनीफा यह नहीं कह सकी, इसलिए उसने नोटों का एक बंडल उठाया और मेरी गोद में रख दिया। जब मैंने उन्हें गिना तो पाया कि केवल चालीस रुपये बचे थे। अब क्या बचा?
ओह। घर पहुंचते ही भेज दूंगी। मेरे दोस्तों ने कहा है। वे भेज देंगे। क्या वे मेरी मदद नहीं कर सकते?

फिर हनीफा ने मुझसे तुरंत दस रुपये उधार लिए। तीन रुपये बच्चों के लिए कुछ खरीदने के लिए। कुछ महीने बीत जाने के बाद भी उसने बाकी के रुपये नहीं भेजे। अगर उसके दोस्त मुझे यहाँ आते हुए देख लेते हैं, तो वे मुझे छुपा देंगे। वो एक रुपया कहाँ है!
मैं सेना में भर्ती हो जाऊंगा।

अबी ने कहा:
"म्बीम सेना में है।"
लैला ने कहा।
मैं भी सेना में हूँ।
ऐशोम्मा ने कहा:
"तब रशीद और मैं सेना में भर्ती हो सकते हैं। हम सरकार को भोजन भी मुहैया करा सकते हैं।"
बस, क्या तुम चर्च में जाकर यह खबर सुनाओगे?
आप यहीं बैठे हैं, बड़े भाई, है ना?
परे जाओ।
इतना कहकर वह बाज़ार में अपनी मिशनरी दुकान पर चला गया। थोड़ी देर बाद मेरी माँ रशीद और ज़ुबैदा के साथ मेरे पास आई।
"हम नहा रहे हैं। इन नन्हे-मुन्नों को देखो।"
वे सब नहाने चले गए। मैंने उन छोटे बच्चों को देखना शुरू किया। दोनों रोने लगे। उनका रोना बंद कराने के लिए, मैं उनके बीच एक मेमना ले आया। दोनों छोटे बच्चे आपस में भिड़ गए। मेमने ने भी दोनों को काट लिया। तभी महान व्यापारी अबू वहाँ आ गए। फिर उन्होंने पूछा:
'यह क्या है?'
अबू ने बच्चों के रोने की आवाज़ अनसुनी कर दी। उसने कुछ खास नहीं किया। उसने आँखें घुमाईं। उसने अपने होंठ काटे। वह चिल्लाया। उसने पथुम्मा की बकरी को पीटा और भगा दिया। उसने बिल्लियों को पीटा। उसने मुर्गियों को फेंक दिया। इसके लिए मैंने बकरी का मल-मूत्र उठाया। मैंने उसे उठाकर आँगन में फेंक दिया।

‘देखो, बकरी, मुर्गी, बिल्ली और बच्चे—इन सबने आंगन और बरामदे को बर्बाद कर दिया है। वाल्या इक्काका इन सब की इजाज़त देता है, है ना?’
'मुझे क्या करना चाहिए?'
‘तुम्हें तो पीटा जाना चाहिए!’
अबू, जो एकदम दुबला-पतला बैठा रहता है, एक दबंग और बदतमीज़ लड़का है। हर कोई उससे डरता है। माताएँ और दादी-नानी अपने छोटे बच्चों को उसके पास लाने में सहज महसूस नहीं करतीं।
"वाल्या इक्काका, क्या कोची थाथा ने आपको बताया कि मैंने वाल्या इक्काका की एक कमीज और एक पैंट चुराई थी?"
मैंने यह नहीं बताया कि अनुम्मा ने ऐसा कहा था या नहीं। वह बहुत क्रोधित हुआ। उसने कहा:
‘सबने धोखा दिया है। सिर्फ मैंने ही नहीं। मेरी मां और मेरी दादी दोनों ने धोखा दिया है। क्या तुमने ऐसा कहा?’
"अनुम्मा ने मुझे यह नहीं बताया कि तुम झूठ बोल रहे थे।"
‘मैंने एक कमीज और एक ब्लाउज चुराया है। मैं यह बात सबको बता दूंगी। वाल्या इक्का ने मुझे क्या दिया?’
‘जिस बिस्तर पर तुम सोते हो, उसकी कीमत चालीस रुपये है। चादर, बिस्तर, तकिए, चादर। जो कश्मीरी शॉल तुम ओढ़ते हो, उसकी कीमत ही पचास रुपये है। जो पार्कर फाउंटेन पेन तुम शान से साथ रखते हो, उसकी कीमत बयालीस रुपये है। और हर बार जब तुम आते हो, तो एक रुपया लगता है। यह सब गिनती में नहीं आता।’
क्या ये सब पुरानी चीजें नहीं हैं?
क्या पुथन ने आपको कुछ दिया है?
"जब मैंने इसे आपको दिया था तब यह बिल्कुल नया था।"
"बड़े भाई, मुझे पच्चीस रुपये दे दो।"

'आपको किस चीज़ की जरूरत है?'
‘वेनामाथ।’
हनीफा ने पूछा। अबू ने पूछा। आज क्या चल रहा है?
अबू को ज़्यादा पैसों की ज़रूरत नहीं है। उसके पास लगभग बीस कमीज़ें, एक पगड़ी और एक बनियान है। और चप्पलों का एक डिब्बा भी। उसकी माँ ने बताया कि उनमें साठ चप्पलें थीं। जब नहाने गई सभी औरतें लौट आईं, तो मर्द खाने के लिए आए। अब्दलकदेर के आते ही उसने पूछा:
'इयाक्का, मुझे नौ रुपये चाहिए;
यह आवश्यक है।
"आपका गाना अच्छा नहीं है।"
हनीफा ने मुझे फिर से याद दिलाया।
मैंने दस रुपये मांगे थे!
मैंने कुछ नहीं कहा। एक घंटे बाद, राज़ खुल गया। डाकिया कुट्टन पिल्लई दरवाजे से अंदर आया और बोला:
"सर, मेरे पास एक मनी ऑर्डर है। सौ रुपये का।"
मैंने उसकी ओर देखते हुए पूछा, "कुट्टनपिल्लई के एक गाल के अंदर एक गांठ सी है, जैसे उसमें कोई आम फंसा हो।"
"क्या तुमने इस मनी ऑर्डर के बारे में किसी को बताया था, कुट्टनपिल्लई?"
"महोदय, हम सब इसी देश में रहते हैं। अब्दुलकादर और हनीफा की वजह से मेरी कई ज़रूरतें हैं। उन्होंने मुझे बताया है, महोदय, कि जब आपको मनी ऑर्डर मिले, तो उन्हें पहले से सूचित कर दें।"
लेकिन मुझे यह मनी ऑर्डर नहीं चाहिए। कुट्टन पिल्लई, इसे ले लो। 'ओह!
यह क्या है, महोदय?

‘पचास, पच्चीस, दस और पैंतीस क्या हैं?’
कुछ।
"यही गणना है।"
मैंने कुट्टन पिल्लई को साफ़-साफ़ बता दिया। कुट्टन पिल्लई ने कहा:
"बस इतना ही, महोदय।"
हम्म!
बस इतना ही। कितनी भयानक साजिश है!
वाह! क्या शानदार सौदा है!
जब कुट्टन पिल्लई मुझे अपनी बेटी सरस्वती के कॉलेज भेजे जाने की कहानी सुना रहे थे, तो मैंने उस पर हस्ताक्षर कर दिए। उन्होंने मेरे हाथ में सौ रुपये का नोट थमा दिया। तभी अचानक मेरी माँ और अनुम्मा बरामदे में आ गईं। मैंने पथुम्मा की बकरी को दस रुपये का नोट दे दिया। कुट्टन पिल्लई ने पूछा।
'यह क्या सर?'
मैंने कहा था।
"उसे वह भी खाने दो। वह पथुम्मा की बकरी है। उसने एक-दो दिन पहले ही बच्चे को जन्म दिया है।"
कुट्टनपिल्लई के हंसते हुए जाते ही उसकी मां ने पूछा।
क्या तुम नहीं आना चाहते?
'नहीं बूझते हो?'
आप क्या चाहते हैं?
समय बीतने के साथ यह बात स्पष्ट हो गई। इसका मतलब है कि इसे सौ- सौ रुपये की छोटी-छोटी किस्तों में बाँटा गया था। यह व्यर्थ नहीं गया। क्या जीवन में खर्चे नहीं होते?
1 चक्र:

पुराने त्रावणकोर साम्राज्य का सिक्का। साढ़े अट्ठाईस चकम एक रुपये के बराबर थे। चकम को सोलह भागों में बांटा गया था। एक कशा। एक कशा से मिर्च खरीदी जा सकती थी;
नमक। अभी?
2 चांदी के सिक्के:
एक पैसे में चार पहिए।

पाँच
उस शाम मैंने हनीफा की चाय पी। आमतौर पर बिल अब्दुल कादिर चुकाता है। हमने हनीफा की दुकान पर चाय पी। उस दिन बिल हनीफा ने चुकाया!
क्या हनीफा ही महान अरुकिस हैं?
उनकी दुकान में एक भी लैंप नहीं है। सिर्फ एक ही लैंप क्यों? अब्दुल खादर की टिन की दुकान पास ही है। वहाँ दस-बारह पेट्रोमैक्स लैंप हैं। एक ग्रामोफोन भी है। (इस आदमी ने इसे अपनी माँ के आँसुओं से खरीदा था और संभाल कर रखा था!) लैंप और ग्रामोफोन किराए पर मिलते हैं। अगर शाम को काम मिलता है, तो हनीफा अबू को फोन करेगी;
"उस लैंप को थोड़ा और आगे खिसकाओ।"
हनीफा उसे मिलने वाली रोशनी में सिलाई कर रही है। क्या यह काफी नहीं है?
रोशनी है!
वहाँ बैठे-बैठे मुझे अब्दुल खादर की पुरानी कहानी याद आ गई। वह हमेशा आग के पास रहता था। उस दुकान में एक लोहार की भट्टी थी। वहाँ हमेशा कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। मैंने पहले भी कहा है कि उसके बाल सफ़ेद हो गए थे। कई लोग उसे मेरा बड़ा भाई समझ लेते थे। वह सबसे मेहनती था। हमने चौथी कक्षा तक साथ-साथ मलयालम पढ़ी। फिर मैं चार-पाँच मील दूर एक अंग्रेज़ी हाई स्कूल में दाखिला लेने चला गया। जब अब्दुल खादर ने मलयालम की सातवीं कक्षा पास की, तब मुझे लगता है कि मैं कन्नूर जेल में कठोर कारावास की सज़ा काट रहा था। वह कहानी
‘संस्मरण’

यह किताब में लिखा है। जब मैं सब कुछ खत्म होने के बाद घर लौटा, तो मेरी पूरी पारिवारिक संपत्ति कर्ज में डूबी हुई थी। घर में खाने को कुछ नहीं था। अब्दुल खादर, पुथुस्सेरी नारायण पिल्लई सर, ने हमें सहारा दिया।
आह। आह।
वह उसी स्कूल में शिक्षक हैं जहाँ मैं पढ़ाता था। मैं अखबार शुरू करने के लिए कोच्चि गया था। कुछ समय बाद जब मैं घर लौटा, तो अब्दुल खादर ने अपनी शिक्षण नौकरी छोड़ दी थी और एक दुकान में बीड़ी बनाने का काम कर रहे थे। वह पत्तों, हुक्का और कैंची की मदद से बीड़ी बनाते थे। वह लगभग दो हज़ार बीड़ी बनाते थे और डेढ़ रुपये कमाते थे। बाद में, जब मैं वापस आया, तो उन्होंने बीड़ी बनाना छोड़ दिया था। वह बाज़ार में एक छोटे से कमरे में, लोहार की भट्टी के साथ, टिन का काम करते थे। वह टिन से कुछ भी बना देते थे। उन्हें यह काम किसी ने नहीं सिखाया था!
अपनी बुद्धि, अपना प्रयास। स्वतंत्र कार्य जो सोच-समझकर और बुद्धिमत्ता से किया गया हो। यदि कोई स्वयं सोचता है, तो वह कभी- कभी दूसरों पर निर्भर हुए बिना, कुछ खोजकर और कड़ी मेहनत करके आराम से जीवन व्यतीत कर सकता है। मैं उस समय - 1936-37 में - एर्नाकुलम में एक लेखक के रूप में रह रहा था। मैं बहुत लिखता था। मुझे कोई पारिश्रमिक नहीं मिलता था। मुझे पारिश्रमिक मांगने या प्राप्त करने की अनुमति नहीं थी। साहित्यिक सेवा! साहित्य मंदिर में शाश्वत उपासना!
लेकिन खाने को कुछ नहीं था। फिर भी मैं लिखता रहता था। अखबारों में लिखता था। फिर अखबारों में से सब कुछ फाड़कर, छांटकर, सुरक्षित रख लेता था। और इस तरह, जब मैं एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भूखा-प्यासा और दर्द में जी रहा था, तब अब्दुल खादर एक

लोहे की छड़ और एक मोटा फाउंटेन पेन लेकर मेरे पास आया। वह सिर्फ आया ही नहीं, बल्कि सच में आया था!
‘इन सभी अखबारों में आखिर क्या छपता है?’
"इसे ले लो। मुझे इसे पूरा पढ़ने दो।"
मैंने गर्व से अपनी सारी साहित्यिक रचनाएँ उसे सौंप दीं। फिर मैंने उससे दो रुपये उधार लिए और चाय पीने चला गया। मैं थोड़ी देर इधर-उधर घूमता रहा। उसे पढ़ने का आनंद लेने दो। मैं उससे चार रुपये और उधार ले लूँगा। क्या यह उसका बड़ा भाई नहीं है, जो इन सांसारिक रचनाओं का स्वामी है, जो माँग रहा है और वह उसे दे देगा? यह सब सोचते हुए मैं कमरे में लौट आया। जब मैंने देखा, तो उसने जितने भी कागज़ पढ़े थे, उन सब पर उसकी मोटी कलम से निशान लगे हुए थे!
तुम यहां क्यों हो?
जैसे ही मैंने बीड़ी जलाई और कुर्सी पर बैठी, उसने मुझे बुलाया। ‘इधर आओ, इधर आओ’
ज़रूर कोई ज़रूरी बात होगी। मैं उठा और चटाई पर उसके बगल में बैठ गया। उसने मुझे घोर तिरस्कार भरी नज़रों से देखा। फिर उसने एक श्लोक पढ़ा। वह सेलेन का श्लोक था। लेकिन उसने पूछा।
इसमें कथा कहां है?
मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। इसका मतलब क्या है?
उन्होंने मुझसे कुछ देर तक ऐसे बात की जैसे कोई युवा छात्र हो। व्याकरण के बारे में बहुत सारी बातचीत हुई, जैसे कि अख़ा, अख़ादम, अन्वयम, लोट्ट, लोट्टुक्कू, आदि। उन्होंने लोट्ट, लोट्टुक्कू नहीं कहा। उन्होंने पिछले आधे घंटे में मुझे अज्ञानी बना दिया था। फिर उन्होंने कहा:
मुझे व्याकरण का अध्ययन करना है!

इतना ही नहीं, उन्होंने कुछ व्याकरण की किताबों के नाम भी सुझाए। मुझे बहुत गुस्सा आया। मैंने गुस्से से कांपते हुए कहा। "चलो उठो। वह एक लोडुकस है!"
अरे, क्या तुम वही बड़े चोर नहीं हो जो कहा करते थे कि वे चोर होने के कारण बीमार हैं!
मैंने यह सब ऐसे लिखा है जैसे मैं कहानी सुना रहा हूँ। क्या होगा अगर इसमें चतुराई भरी कहानी कहने का कोई तत्व ही न हो? उनकी व्याकरण की समझ तो बिल्कुल सरल है!
चट्टान!!
उसने कहा:
"इक्काका, मेरे बारे में जो बुरा कहना चाहो कह लो। मुझे कोई आपत्ति नहीं है। बस एक बात है। इक्काका, एक साल उन सभी किताबों को पढ़ने में बिताओ जिनका मैंने ज़िक्र किया है, ठीक से पढ़ना- लिखना सीखो, और फिर लिखना सीखो। इक्काका, क्या तुम्हें पता है कि मलयालम में कितने अक्षर होते हैं?"
यह कहना!'
चलिए, आपके गाने पर चलते हैं।
मैंने सोचा था कि मैं तुम्हें अपने पैर से मारूँगी। मैंने तुम्हें विनम्रता से नहीं मारा। मैंने कहा:
"मुझे आपको बताना होगा कि मैंने घर में सभी से पूछा है - खासकर अपने पिता और माता से। उन्होंने भी मुझे बताया कि मुझे कोई पैसा नहीं मिला है। इसीलिए मैंने कुछ भी नहीं भेजा है।"
मैंने उससे लंबे समय तक कर्ज नहीं मांगा। पूछने की हिम्मत ही नहीं हुई। उसकी व्याकरण इतनी खराब है!
मलयालम अक्षर!!

वो दिन बीत गए। अब वो मेरी किताबें बड़े चाव से पढ़ता है। यहाँ तक कि मुझसे हमारे रिश्तेदारों के बारे में कहानियाँ लिखने को भी कहता है। वो कहानियाँ सुनाता है और सबको बताता है।
"बस इसे यहाँ लिख दीजिए। मैं इसे प्रिंट करवाकर बेच दूंगा।"
वो पैसे ले लेगा। बड़े ही घटिया लोग हैं!
अगले दिन, जब छोटी बच्ची मेरे चंपा के पेड़ को देखकर लार टपका रही थी, पथुम्मा आई और बकरी और उसके बच्चे को अपने घर ले जाने की तैयारी करने लगी। क्यों?
"यहाँ किसी को भी इसे बड़ा मुद्दा नहीं बनाना चाहिए। अबू इसे चलाएगा। फिर कल से आपको इसे दूध की तरह दुहना होगा। मैंने एक चायवाले को आपके लिए दूध लाने को कहा है।"
यही कारण है!
पथुम्मा बकरी और उसके बच्चे को ले गई। पथुम्मा ने बच्चे को बड़े प्यार से अपने साथ लिया। बाद में, बकरी और बच्चा दस बजे खुशी- खुशी वापस आ गए। बच्चा इधर-उधर दौड़ने-भागने लगा। वह मेरे पलंग पर चढ़ गया। वह बच्चों के साथ खाना खाने लगा। बकरी माँ बहुत उत्साहित हो गई। वह बच्चों के साथ चावल खाने लगी। चारों ओर शोर-शराबा और भागदौड़ मच गई। कुछ दिनों बाद, घर में हंसी-खुशी और शोरगुल का माहौल छा गया। खूब चहल-पहल थी। अबी, पथुकुट्टी, सैदु मुहम्मद, लैला, आरिफा और बाकी सब लोग दूध वाली चाय पी रहे थे! तुम शोर क्यों मचा रहे हो और हंस क्यों रहे हो?
मैं बाहर गया। मेरी दोनों बहनें, उम्मा और ऐशोम्मा, कप्पापुट्टू के साथ दूध वाली चाय पी रही थीं!
सब लोग हंस रहे हैं।
“माँ, ये सब हंसी और शोर किस बात का है?”
"कुछ नहीं।"

उम्मा ने हंसते हुए कहा।
"ऐसा मत कहो, वाल्या। हमने बच्चे को बांध दिया था।"
'और तब?'
‘क्या तुम मुझे बताओगी, वाल्या?’
'क्या बात क्या बात?'
अब्दुल कादिर की चाची ने बीच में आकर कहा:
हम भेड़ों के चरागाहों में गए। हम भेड़ों के लिए दूध लाए। ‘माँ, तुम क्या सुन रही हो?’
तुमने अपनी मां की बकरी का दूध क्यों दुहा?
उम्मा ने कहा।
"या शायद उसे याद ही न हो?"
अनुम्मा ने कहा:
‘मुझे मत बताओ, वाल्या!’
हम सब बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ जाएंगे!
मैं अपनी आंखों के सामने इस जघन्य अपराध को होते हुए कैसे देख सकता था?
मैंने तुम्हें तब बताया था जब पथुम्मा आई थी।

"□□□□ □□□□□ □□□□, □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□, □□□
□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□"
□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□
□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□!

क्या वे अपने बच्चों को बांधकर रखते हैं?
क्या मैं तुमसे कुछ पूछ सकता हूं।
पथुम्मा दूसरी ओर भागी। तभी, वहां उम्मा, दो अनुम्मा, ऐशोम्मा, पाथुकुट्टी, अबी, लैला, आरिफा और अन्य लोग तैयार खड़े थे। सबने एक साथ कहा.
'बहुत अच्छा!
बहुत अच्छा!
हमने यह किया!
मैं यह करूंगा!
बकरियों और उनके बच्चों को यहीं पलना-बढ़ना चाहिए!
हम अपना कप्पापुट्टू, अपना पेलावेलम, अपना कंजोलोम, अपना स्प्रिंग राइस खाते हैं, और इससे हमारा वजन बढ़ता है और हमें दूध मिलता है!
क्या गलत?
पथुम्मा ने उन्हें बांटने की कोशिश की:
"ओह, माँ, क्या तुम मेरी छोटी बहन नहीं हो? क्या मैंने तुम्हें बकरी नहीं दी थी? माँ, माँ, क्या तुम मेरी माँ नहीं हो? तुमने इन आँसूहीन छोटे कुत्तों के साथ क्या किया है?"
उम्मा ने कहा।
"बस करो, बस करो! तुम्हारी दादी, तुम्हारी माँ और तुम्हारे सभी रिश्तेदार कोडा चाय पी रहे हैं। फिर हम सबने भी कोडा चाय पी।
इसका स्वाद अच्छा है।"
पथुम्मा ने कहा।
मैं तुम्हारी पीठ में छुरा घोंप दूंगा।
मां पथुम्मा ने मेमने को उठाया और उसे चूमा।

"प्रिय, उन्होंने तुम्हारा दूध चुरा लिया और सारा पी गए। मैं तुम्हें थोड़ा ताज़ा पानी देती हूँ। आओ!" पथुम्मा मेमने को लेकर मेरे पास आई।
"मैं नहीं जा रहा, बड़े भाई। आप उन्हें मेरी बकरी का दूध पीते हुए क्यों नहीं देखते?"
मेरी माँ मेमने को ले गई। मैं खुश था। अब, मेमने के बिना, मैं उन्हें बकरी का दूध दुहते हुए देख सकता हूँ।
हुम्बा!
लेकिन क्या भेड़ों को चराने के लिए बच्चे की जरूरत होती है? क्या महिलाओं को रत्नों के बारे में जानकारी नहीं होती?
आपको ध्यान देना चाहिए!

छह
दस बजे पथुम्मा की बकरी आएगी। थोड़ी देर बाद पथुम्मा और खदीजा आएंगी। क्या पथुम्मा का किसी से झगड़ा हो रहा है?
मैं अपने माता-पिता, बहन और माँ को यह खबर बता रही हूँ। मैं घर के काम कर रही हूँ। मैं कप्पपुट्टू खा रही हूँ। मैं कटुंचया पी रही हूँ। मैं बकरी को दलिया खिला रही हूँ। जब कोचुन्नी आई, तो मैंने उसे दूध की चोरी के बारे में बताया। कोचुन्नी ने कहा।
मैंने तुमसे दूध लाने को कहा था। पथुम्मा, जब तुम चली गई थी तो तुमने क्या किया था?
मुझे चार घरों में दूध परोसने के लिए कहा गया है। मुझे एक चाय की दुकान पर भी दूध परोसने के लिए कहा गया है। वे मुझे और खदीजा को चाय के लिए दूध तक नहीं देते।
यह सही है!
फिर कोचुन्नी और खदीजा चाहें तो इसका फायदा उठाने में जरा भी संकोच नहीं करेंगी!
मैंने अपनी मां से पूछा।
‘तुम उस छोटी बच्ची और खदीजा को एक-एक गिलास दूध क्यों नहीं दे देते?’
पथुम्मा ने कहा:
"क्या खदीजा के पिता को दूध बेचकर मिलने वाले पैसे से खरीदारी नहीं करनी चाहिए?"
और क्या इतने समय से सभी लोग बिना दूध वाली चाय नहीं पी रहे हैं? अब तुम इतने उत्सुक क्यों हो?
क्या तुम चाहते हो कि मैं काटूं?
आप तो बड़े ज्योतिषी बन गए हैं, है ना?

‘खदीजादा बापा को जल्दी है। क्या इसे बाहर ले जाने के लिए आपको पैसे की जरूरत नहीं है?’
हाँ, बिल्कुल सही, जब मैं इन सब बातों के बारे में सोच रहा था, तभी सुलेमान तीन अनानास लेकर आया, मुझे दिए और बोला:
"अगर आप एक छोटा सा केक बना दें तो अच्छा होगा।"
मैंने उनमें से एक को काटकर प्रत्येक बच्चे को एक टुकड़ा दिया और वे उसे खा ही रहे थे कि अबू अपनी पूरी शान के साथ प्रकट हुए। ‘ओह। अमीर होते तो ऐसे ही रहते।’
उसने कहा।
"मेरे पास किसी से हाथ मिलाने के लिए कोई नहीं है। आज मैं अपने बड़े भाई को भोजन कराने की तैयारी कर रहा हूँ।"
‘रात का खाना क्या?’
‘ओरोटेम का जिगर और चाय!’
"तुम भी मेरे साथ लड़ो।"
"मुझे किसी ने फोन नहीं किया। क्या तुम्हें कुछ पता है, वाल्या?"
हनीफा ने कल कोचीका के धनी और समृद्ध लोगों को दूध वाली चाय भी भेजी।
‘दूध वाली चाय?’
'हाँ!'
‘क्या तुमने इसे नहीं दिया?’
क्या मैं उनकी कुर्सी के बगल में नहीं बैठा हूँ?
"इसीलिए मुझे भी एक गाना मिला।" कमाल है! पथुम्मा ने अब्दुलकादर, हनीफा और अबू समेत सभी को दूध वाली चाय भेजी है! इसमें आपको कोई रहस्य जरूर मिलेगा!
‘पाथुम्मा, तुमने मुझे ये दूध वाली चाय क्यों भेजी है?’

‘हनीफा इक्काका हड़ताल पर चली गईं’
‘कौन सी हड़ताल?’
‘हनीफा इक्काका ही वाल्या इटाटा की कमीज़, खदीजा का ब्लाउज़ और सारे फटे हुए कपड़े सिलती है। जब खदीजा मिनयान वगैरह के लिए कुछ सिलवाने आई, तो उसने संदेश भेजा कि वह नहीं सिलना चाहती। वह एक दूध वाली चाय उसे रिश्वत के तौर पर दी गई ताकि वह दोबारा ऐसा न कहे!’
‘क्या तुमने इसे अब्दुलकादर को दिया?’
"मुझे उस बड़ी रकम के लिए कोचिक्कई को कुछ पैसे देने थे। जब कोचिक्कई ने पैसे देखे, तो उसने कहा, 'अगर तुमने मुझे तुरंत पैसे वापस नहीं किए, तो मैं मुकदमा कर दूंगा!'"
पहला आरोपी वल्यमाचन है, दूसरा आरोपी वल्यिताथा है और तीसरा आरोपी खदीजा है। अगर इतना काफी नहीं है, तो बकरी को जब्त कर लिया जाएगा!
ऐसा कुछ भी करने से बचने के लिए सिर्फ एक बार चाय पी लें!
क्या पथुम्मा की बकरी के दूध का इस्तेमाल भी रिश्वत देने के लिए किया जा रहा है?
अबू ने कहा।
परिवार आ रहा है।
हाँ, बिल्कुल सही। डाकिया कुट्टन पिल्लई दरवाजे से अंदर आया और मुझे एक पार्सल दिया। मैंने उस पर हस्ताक्षर करके उसे दे दिया।
कुट्टन पिल्लई के जाने के बाद भी मैंने पार्सल नहीं खोला।
उम्मा ने पूछा।
उस इमारत में क्या खराबी है?
मैंने कहा था।

"ये मेरी नई किताब की दस प्रतियां हैं। प्रकाशकों ने इन्हें मुझे बोनस के तौर पर भेजा है। क्या यह काफी है?"
तो फिर माँ को पता होना चाहिए:
"क्या आपको बिक्री की रकम मिल गई?"
"क्या आप एक गाने के बदले वहां जा सकते हैं?"
पैसा पैसा पैसा!'
अगर मेरे बस में होता, तो दो-तीन लोग भी नहीं होते। अचानक मेरे मन में एक ख्याल आया। जब मेरी माँ चली गई, तो मैंने चुपके से अबू को फोन किया।
‘क्या आप इन किताबों को बाजार ले जाकर बेच सकते हैं?’
क्या आप पूछ रहे हैं कि उसने क्या लिया?
आप कितना कमीशन देंगे?
मैं आपको वह सब कुछ नहीं दे सकता।
इतना कहकर मैंने नौ किताबों को कागज में लपेटकर अबू को भेज दिया और इंतजार करने लगा। मेरा अपना देश। मेरी लिखी किताब। क्या कोई इसे खरीदने के लिए मुझे पैसे देगा?
एक-दो घंटे बीत गए। अबू आया। शुभकामनाएँ। सारी किताबें बिक गईं! उसने अबू को किताब की पूरी कीमत दे दी। जब वह बचे हुए पैसे गिन रहा था,
‘तुम्हें क्या मिला?’
मेरी माँ आई और पूछने लगी। जब उन्होंने पैसे देखे तो मुझे बहुत गुस्सा आया। मैंने अपने पास रखा एक गिलास उठाया और पूरी ताकत से दीवार पर फेंक दिया, जिससे गिलास के दस हजार टुकड़े हो गए। ‘कनीम’
"बस इतना ही।" घर में सन्नाटा छा गया। मुझे बहुत राहत मिली। बिना कुछ कहे, मेरी माँ ने सब कुछ समेटा, कागज़ में लपेटा और ले

गईं। फिर वह आकर मेरे सामने पश्चिम की ओर मुँह करके बैठ गईं, बिना कुछ कहे। तुम चुप क्यों थीं?
मैं ही बचा था।
"उसने अपनी विश्वप्रसिद्ध नाक निकाली और उसे पथुम्मा की बकरी की ओर बढ़ाया। बकरी उत्सुकता से पास आती गई।"
इसमें इतनी बड़ी बात क्या है?
अबू ने पूछा। मैंने कहा:
मैंने पथुम्मा की बकरी, बचपन के दोस्त और उसकी आवाज़ों को बड़े चाव से खाया। फिर और भी किताबें हैं। मैंने कहा है कि मैं उन्हें आपको दे दूंगा। दुनिया भर में मशहूर मेरी नाक उन्हें चख ले।
"उस बात को मत उठाओ।"
अबू ने कहा। मैंने किताब ली और उसे डिब्बे में रख दिया। अबू के जाने के बाद, मैंने मिले पैसों का आधा हिस्सा अपनी माँ की गोद में रख दिया। मेरी माँ ने पूछा।
उस किताब का क्या मतलब है?
मैंने सच कहा। कुछ देर बाद जब अब्दुल कादिर खाना खाने आया, तो उसने मुझसे बची हुई किताब खरीद ली।
"यह एक बड़ा बंडल था, है ना?"
"इसकी दस प्रतियां थीं। नौ प्रतियां अबू ने बेचीं।"
'धन कहां है?'
मैंने एक की कीमत अबू को दे दी। शेष धन का आधा हिस्सा मैंने उम्मा को दे दिया।
क्या मेरे पास कोई नहीं है?
"क्या आपने वह किताब बेचकर पैसे कमाए?"
‘उम्मा’

उसने आवाज लगाई और अंदर चला गया। उसने वहां कुछ शोर सुना। "यहां लागत का हिसाब मैं लगा रहा हूं, आप नहीं।"
मैंने अब्दुलखादर को कहते सुना। थोड़ी देर बाद वह खुशी-खुशी चला गया। जब मैंने उम्म के चेहरे का भाव देखा, तो मुझे लगा कि अब्दुलखादर ने उम्म के पास जो पैसे थे, वो ले लिए हैं। चार बजे कोचुन्नी और खदीजा आईं और मुझे भी बुलाया। मैं अबू के साथ चला गया। कोचुन्नी के पिता, माता और बहन कोचुन्नी के घर पर हैं। अबू ने कहा कि पथुम्मा, कोचुन्नी, खदीजा और पथुम्मा की बकरी, बकरी का बच्चा और मुर्गियाँ एक छोटी सी झोपड़ी में शांति से रह सकते हैं।
"बड़े भाई ने मुझे इसके बारे में आपको न बताने के लिए कहा है। बड़े भाई, आपको इसे देखना चाहिए।"
अबू ने मुझे चुपके से बताया। हमने भुने हुए केले और कलेजी से पेट भर लिया। हमने दूध वाली चाय भी पी। हमने पथुम्मा का घर देखा।
"वाल्या, तुम यहाँ क्यों आई हो?"
पथुम्मा ने उदास स्वर में पूछा। पथुम्मा का घर बहुत दयनीय था। वह मिट्टी का बना एक छोटा सा कमरा था, जिसकी छत ताड़ के पत्तों से ढकी थी। उसका दरवाजा किसी पुराने घर का था। वह रस्सी से बंधा हुआ था और उसमें ताला नहीं था।
‘यह बहुत बड़ी बात है।’
पथुम्मा ने कहा।
मेरे जीवित रहने का क्या मतलब है?
मैंने कहा था:
"चिंता मत करो। मैं तुम्हें दरवाजा ठीक करवाने के लिए पैसे दे दूंगा।"

"□□□□, □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□"
'□□□□;
□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□
□□ □□□, □□□□ □□□□ □□ □□□, □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□ □□, □□□□□□□ □□□□ □□, □□□□□□□ □□□□ □□, □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□:
"□□□ □□, □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□, □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□"
□□□□□ □□□ □□□□:
‘□□□ □□ □□□□□?’
"□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□, □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□"
‘□□□□ □□□□□□□□ □□□?’
"□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□, □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□, □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□, □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□-□□ □□□□ □□!"
□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□
□□□□□□□ □□ □□□:
"□□□□ □□□, □□□ □□ □□□□ □□□□-□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□!"
□□□□□□□ □□ □□□:
‘□□□□□□, □□□□ □□ □□□ □□□?’

अब्दुलक़दर ने कहा:
"सुलेमान, तुम पहले गवाह हो।"
पथुम्मा ने कहा:
मुझे किससे डरना चाहिए?
"उम्मना को डरना चाहिए, नथुन और मेरे अनुसातीन को डरना चाहिए। कोचिकाना को डरना चाहिए। हनीफाना को डरना चाहिए। अबुना को डरना चाहिए। मेरे केट्टियोना को डरना चाहिए। सुलेमान को भी डरना चाहिए।"
किसी को डरने की जरूरत नहीं है!
अबू ने अपना मुंह खोला। मैंने कहा:
"पर्याप्त नहीं।"
पथुम्मा ने कहा:
"कोचिकाक्का, मैं सबको जिगर का एक टुकड़ा और ओरोटाइम चाय दूँगा। बस कुछ दिनों तक धैर्य रखें।"
'कितने दिन?'
उसने पूछा।
‘मैं तुम्हें बता दूँगी, कोचिका। ओह हनीफा, तुमने भी उस दिन यही किया था। क्या तुमने बिना इंतज़ार किए इसे खदीजा को नहीं भेजा था?’
हनीफा ने कहा:
"मेरे लिए यहाँ बैठकर ज़कात के लिए कपड़े सिलना ही काफी है। मुझे रोज़ अबू के लिए कमीज़ें सिलनी पड़ती हैं। मुझे इस घर में सबके लिए कमीज़ें सिलनी पड़ती हैं।"
क्या कोई भुगतान कर रहा है?
अब्दुलकादर ने कहा:

मैं तुम्हारी भाभी की कमीज़ सिलवा दूँगा। मैं लैला की स्कर्ट और ब्लाउज़ सिलवा दूँगा। मैं अबी का कोट और ट्राउज़र सिलवा दूँगा। है ना बढ़िया?
हनीफा को गुस्सा आ गया:
मुझे कोई कुछ न दे। मैं सेना में जा रहा हूँ। मैं आज रात ही जा रहा हूँ!
फिर मुझे एक घटना याद आ गई। मैंने कहा:
"अरे, चलो आधे घंटे में सेना में चलते हैं!"
क्या आप सेना से छुट्टी लेकर वापस आने पर अक्सर एर्नाकुलम में मुझसे मिलने नहीं आते थे?
तुम मुझसे पाँच-दस रुपये उधार लेते थे और ले जाते थे। तुम कहते थे कि तुम्हारे पास जो कुछ भी है, वह उम्मा और अब्दुल कादिर ने खरीदा है। तुमने मुझे उस पैसे में से एक भी पैसा नहीं भेजा, सब यहीं ले जाओ।'
हनीफा ने तुरंत ऐशोमा को फोन किया:
"नीचे आओ, बच्चों को ले आओ। अब इस घर में मत रहो। लोग तुम्हारा मज़ाक उड़ा रहे हैं। चलो कहीं चलते हैं और लकड़ियों पर बैठते हैं। चलो। उठो, एबी।"
मैंने पूछ लिया:
‘हे, क्या तुम्हारे पास मेरे लिए कुछ पैसे हैं?’
उसने कहा:
‘उस समय की बात सिर्फ इतनी ही नहीं थी, वाल्या इक्काका। अब किसे ये सब याद है!’
"यह स्पष्ट है कि देने के लिए कुछ न कुछ तो है ही। खुश हूं।"

मैं सोने चला गया। सुबह चार बजे, पथुम, कोचुन्नी और खदीजा के सोने की आवाज़ से मेरी नींद खुली। मैं वहीं लेटा हुआ था। उम्मा ने पूछा:
"क्या तुम जाग रहे हो?"
मैंने कहा था:
मैं लेटा हुआ हूँ। क्या?
उम्म ने कहा:
"मुझे अपने पैसों में से एक रुपया दे दो। किसी को पता नहीं चलना चाहिए।"
‘क्या मैं कल नहीं आया था?’
"अब्दुलकादर ने ये सब खरीदा है। क्या उसे घर की देखभाल नहीं करनी चाहिए?"
मुझे इसके लिए कितना भुगतान करना चाहिए?
"क्या आपने इस बारे में सोचा है कि आपको आज के लिए कितने पैसे चाहिए?"
"अपना गाना जारी रखो। अगर तुमने बोलना बंद कर दिया, तो मैं अभी चला जाऊंगा!"
माँ ने कुछ नहीं कहा। मैं वहाँ बेसुध पड़ा रहा। मुझे कुछ दिन पहले घर आने पर घटी एक घटना याद आ गई:
मैं उस समय उसी छोटे से घर में रह रहा था जिसमें मैं आमतौर पर रहता हूँ। मैं एक विशेष कार से आया था!
जब गाड़ी इमारत के सामने आकर रुकी, तो कुछ लोग इकट्ठा हो गए। सबने मुझे टैक्सी ड्राइवर को नोट गिनते हुए देखा। उस रात, खाने के बाद, जब मैं सोने जा रहा था, अब्दुलकादर, उम्म और हनीफा आ गए। उनके आते ही अब्दुलकादर ने कहा:

"अगर तुम्हारे पास पैसे हैं, तो उन्हें यहाँ मत छोड़ो। उन्हें यहीं ले जाओ। कुछ चोर आएंगे। वे आएंगे और तुम्हें पीट-पीटकर मार डालेंगे!"
मैंने अपनी मां के सामने पांच सौ रुपये गिने और उसे दे दिए!
चोर आकर मुझे पीट-पीटकर मार डालें, पैसा कहीं नहीं जाएगा!
सब लोग संतुष्ट होकर चले गए। मैं वहीं शांति से लेटा रहा और बीड़ी जलाई। तभी मुझे घर के अंदर अंधेरे में किसी के बैठने का आभास हुआ। क्या यह वही चोर था जो मुझे चाकू से मारने और मेरा पैसा चुराने आया था?
मैंने थोड़ी झिझक के साथ पूछा:
'कौन?'
मैं एक भेड़ हूँ।
उमा ने धीरे से कहा:
मैं यहां बिना किसी को देखे आया था!
'क्या चल रहा है?'
"अरे, किसी को नहीं पता।"
उम्म ने कहा:
"तुम्हें मुझे पच्चीस रुपये देने होंगे। किसी को पता नहीं चलना चाहिए!"
क्या ऐसा नहीं है माँ, वही माँ जिसने मुझे दूध पिलाकर पाला- पोसा? मैंने पच्चीस रुपये लिए और तुम्हें वहीं दे दिए। इसलिए मैं चैन से सो गया। अगले दिन से उधार लेने वालों की भीड़ उमड़ पड़ी। उनमें से अधिकतर महिलाएं थीं। सभी मुस्लिम समुदाय से नहीं थीं। लेकिन क्या मैंने सबका दूध पिया है?
‘क्या तुम यह भूल गए, पुल्ला?’
मुझे एक या दो रुपये दे दो।

मैंने इस तरह दो, चार और पांच देना शुरू किया। जब मैं सौ रुपये के करीब पहुँच गया,
नहीं, मैंने किसी का स्तन नहीं चूसा है!
"उशीरन जोर से बोलते हुए बैठ गया। इसी बीच एक मजाक चल रहा था। उम्मा अबी और पथुकुट्टी को लाएगी।"
‘इस छोटे से जीव को कुछ मत दो। इसे तांबा बिल्कुल मत दो!’ बिल्कुल नहीं।
"अरे, अब तुम यहाँ रहने आ रहे हो। तुम्हारे दोस्त तुमसे मिलने आ रहे हैं, है ना?"
"हम उन्हें चावल के बदले क्या देंगे?"
‘पत्ती पर!’
"ऐसा नहीं होने वाला है। हमें और अधिक सैन, वसीम और केलास की जरूरत है।"
मेरे पास पैसे नहीं हैं।
मैं अनापरम्बा में पेडी जाकर इसे खरीद लूंगा, बिल्कुल वैसे ही जैसे आपने कहा था!
बड़ी बहन यह काम करेगी!
वरकीकुंजू की अनापरम में एक बड़ी स्टेशनरी की दुकान है। वो मेरा दोस्त भी है। अगर मेरी माँ वहाँ जाती है, तो वो उस दुकान से सब कुछ खरीदने में ज़रा भी संकोच नहीं करती!
मैंने कहा था:
"माँ, आप मत जाइए। मैं जाकर आपके लिए ले आता हूँ।"
मैं गया और किसी से ढेर सारे बर्तन मंगवाए। जब हम शांतिपूर्वक पहुँच रहे थे, मेरी माँ ने कहा:
"खैर, तुम तो वैसे भी यहाँ रहने आ रहे हो। तुम्हारे दोस्त कहाँ ठहरेंगे?"

आप गद्दे और तकिए पर सोएंगे।
तुम बस चले जाओ!
क्यों!
मैंने भी परेशानी से बचने के लिए इसे खरीद लिया। फिर मेरी माँ को तांबे का बर्तन चाहिए था!
अगर आपको चावल मिल जाएं तो आप उन्हें उबाल सकते हैं। आप नहाने के लिए पानी भर सकते हैं। क्या यह उचित नहीं है?
मैंने सोचा:
तांबे के बर्तन के बाद, फिर बैलगाड़ी!
उसके बाद, मोटरगाड़ी!
हम्म!
मैंने बक्सा और पलंग लिया और एक ही झटके में निकल पड़ा। मैंने वर्काला पार किया और मद्रास का पूरा चक्कर लगाया। फिर मैं दोबारा निकला और फिर वापस आ गया। यह यात्रा ऐसी ही है। यह हनीफा की तरह नहीं है, जैसा उसने कहा था कि वह सेना में जा रहा है;
अगर मैंने कहा कि मैं जा रहा हूँ, तो मैं जा रहा हूँ!
तो, मेरी माँ वहाँ बेसुध और चुपचाप पड़ी रही। मैं उठा, डिब्बा खोला और उसमें से बचे हुए सारे पैसे निकाल लिए। मैंने कहा:
"अब डरने की कोई बात नहीं है। अगर मैं कहूँगी कि मैं जा रही हूँ, तो मैं जा नहीं पाऊँगी। मेरे पास यात्रा के लिए पैसे नहीं हैं, इसलिए अब तुम्हें ही मुझे खाना खिलाना होगा।"
यादें इसी तरह धुंधली होती चली गईं। दिन बीतते गए। फिर एक चमत्कार हुआ। महिलाओं के गहनों का अद्भुत चमत्कार। दोनों बहनें, ऐशोम और उम्मा, ने पथुम्मा की बकरी का दूध फिर से दुहा, दूध लिया और चाय पी!
बिना बच्चे के। एक बार भी नहीं। हर रोज दूध चुराती थी!

पथुम्मा इस पवित्र मान्यता के साथ सुख और शांति से जीवन व्यतीत करती है कि बिना बच्चे के बकरी चरती नहीं है!
मैंने मजे के लिए अबी और नन्हे बत्तख के बच्चे को मेमने बनाने की कोशिश की, लेकिन वे सफल नहीं हुए। आखिरकार, सुबैदा और रशीद मेमने बन गए और उन्होंने बकरी का दूध पिया। वे सचमुच मेमने थे! यह वही चमत्कार है जिसके बारे में पथुम्मा ने सुना था!
पथुम्मा ने अपनी छाती पीटते हुए रोना शुरू कर दिया।
'आप इंसान हैं?
तुमने ये किया। नहीं, मैं तुम्हें दूध दूंगी!

अगले दिन से पथुम्मा की तरफ से आधा बोतल दूध घर पर तैयार आने लगा। आप सभी को बहुत-बहुत बधाई, सुबैदा, रशीद, अबी, आरिफा, लैला और पथुकुट्टी!
दूध वाली चाय अनुम्मा, ऐशोम्मा और उम्मा के लिए है!!
अब बकरी के साथ एक बच्चा भी है। खदीजा भी उनके बीच है, जो बिना पानी मिलाए शुद्ध दूध की आधी बोतल लिए हुए है!
इस तरह आपको घर पर दो तरह का दूध मिलेगा। एक तो बिल्कुल सही तरह से फटा हुआ!
एक व्यक्ति ईमानदारी और परोपकार की भावना से पथुम्मा को दान दे रहा है। बेचारी पथुम्मा!
क्या करेंगे आप?
एक ही रहस्य था जिसे मैं अब तक सुलझा नहीं पाया था। इन लड़कियों में से सबसे पहले किसमें यह बुद्धिमत्ता थी?
आपको कामयाबी मिले!

[redacted]

> “मेरी बकरी को बच्चा पैदा करने दो...मैं तुम्हारे साथ रहूँगा...” पथुम्मा

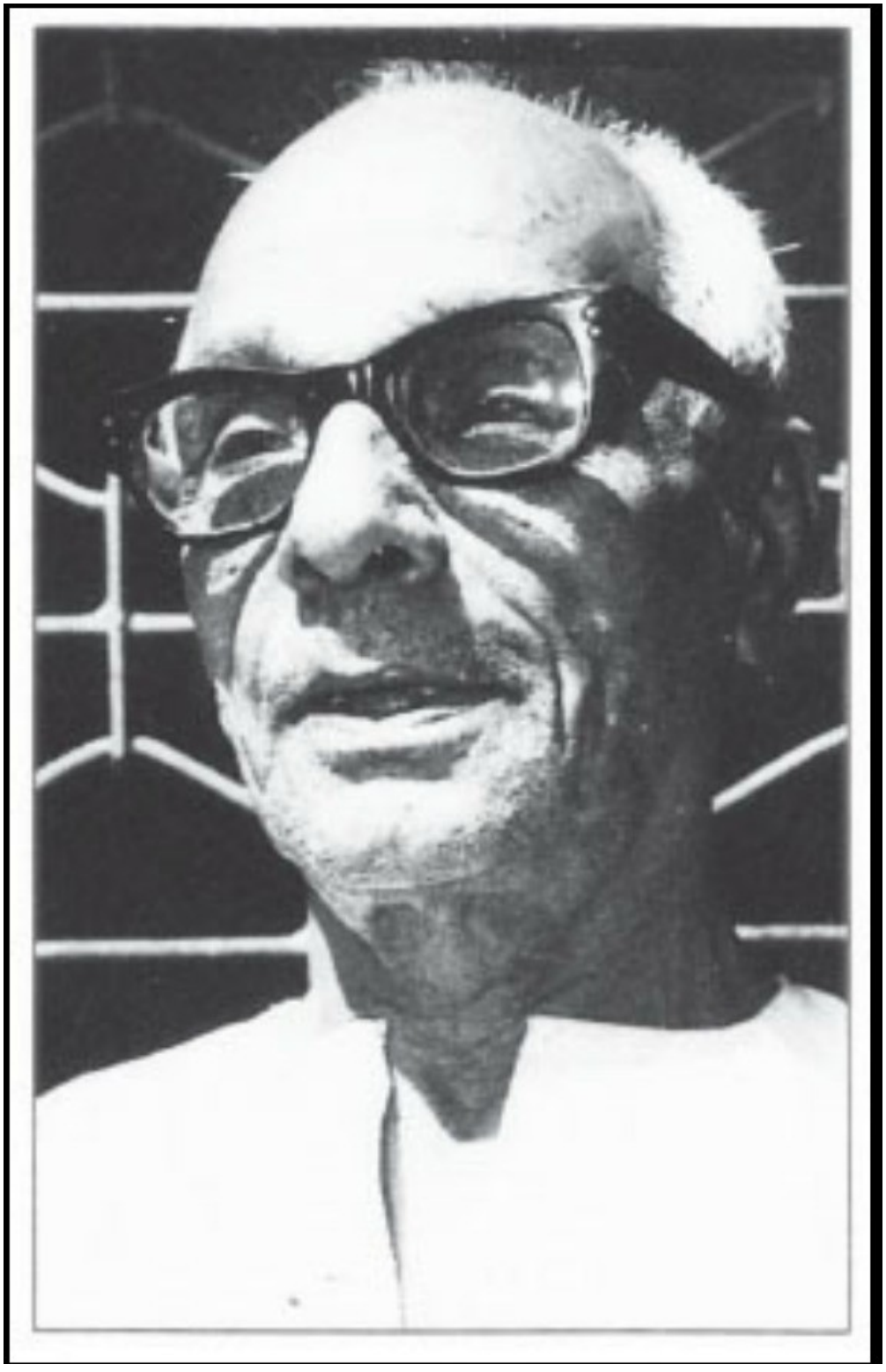

> "मैं भी सेना में भर्ती हो जाऊंगी..." हनीफा, जो इस धमकी से सबको डरा रही थी।

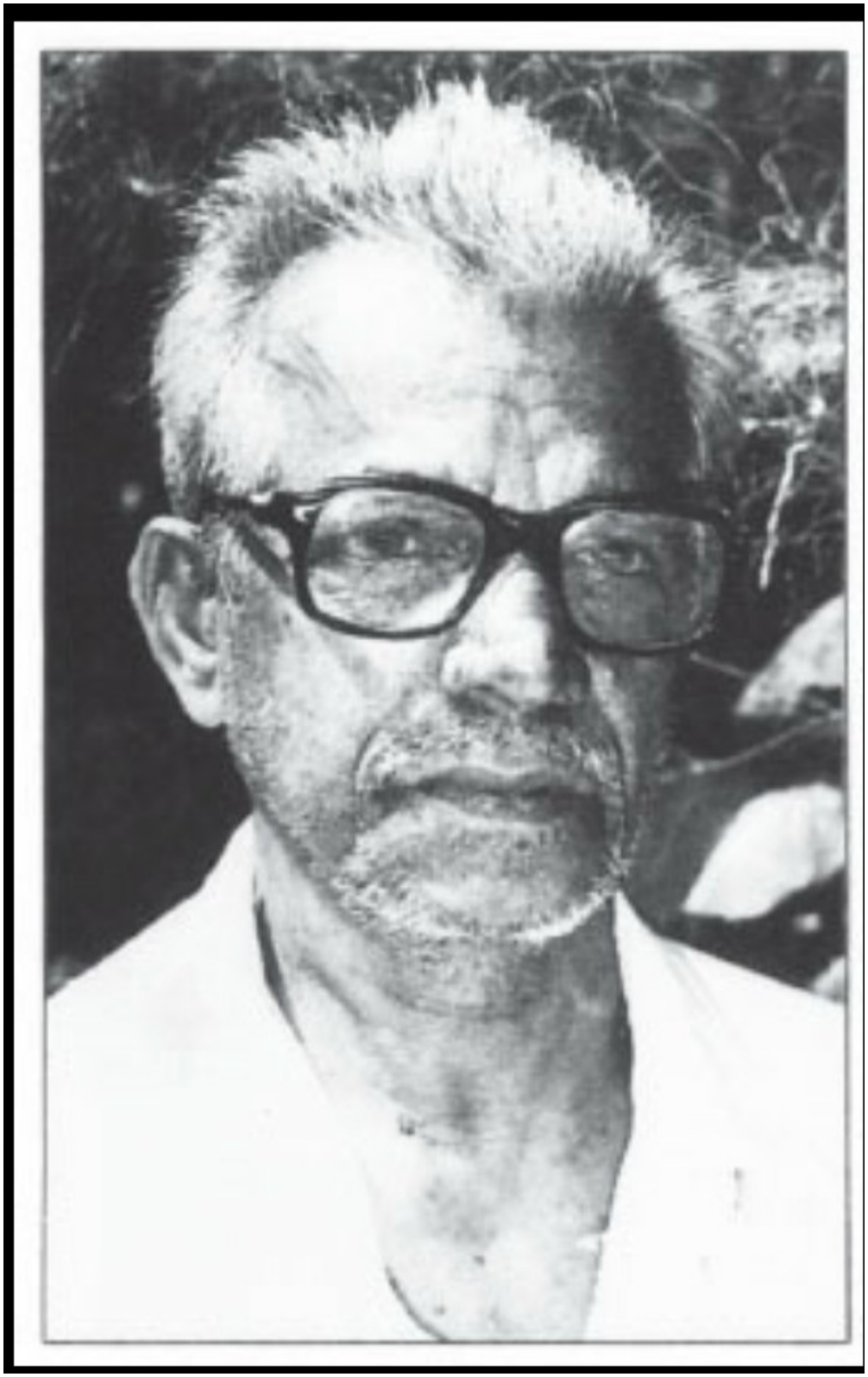

> "□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□... □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□?" □□□, □□□□ □□□□□□□□

> “चाचा जी, इस वाक्य में क्रियाविशेषण कहाँ है?” अब्दुल खादर ने सबसे पहले यह पता लगाया कि बशीर को व्याकरण की कोई समझ नहीं थी।